वाणी

सरोवर

अक्टूबर १९७०

भुवन वाणी ट्रस्ट
रानी कटरा - लखनऊ ३.

[भुवन वाणी ट्रस्ट (पंजीकृत) लखनऊ का मुखपत्र (त्रैमासिक)]

वाणी सरोवर

प्रत्येक क्षेत्र प्रत्येक संत की बानी।
संपूर्ण राष्ट्र में घर-घर है पहुँचानी ।।

संपादक—नन्दकुमार अवस्थी   प्रब०सं०—विनयकुमार अवस्थी

प्रथम वर्ष   अक्तूबर, १९७०   अंक—४

विद्वत्-परिषद्

असमिया—बसन्तकुमार सैकिया
सुश्री दीप्ति बरगुहाईं

अरबी—क़ाज़ी मुहम्मद सिद्दीक़, मुफ़्ती दारुलमुबल्लग़ीन, लखनऊ

ओड़िया—सुरेशचन्द्र नन्द एम. ए. हिन्दी-ओड़िया, रा० भा० रत्न, कटक

अंग्रेज़ी—प्रेमनाथ बाजपेयी एम. ए.

उर्दू—डॉ. स० असदअली एम.ए., पीएच. डी.
सुश्री माजदा असद एम.ए. पीएच.डी.

कन्नड़—कु० उदया लेले, एम.ए., डिप. कन्नड़

कश्मीरी—माखनलाल रैना

गुजराती—हसमुख राय सचदेव, एम. ए. एल. एल. बी.

गुरुमुखी—डॉ० अमरसिंह खालसा, डा० आफ़ डिविनिटी (यू. एस. ए.)
प्र० संपादक 'सरदार' लखनऊ

तमिळ—वी. नटराजन एम. काम.

तॆलुगु—पी० रंगाचार्युलु वि० शि० 'भारती'

पाली—डॉ० हर्षनारायण एम.ए., पीएच.डी.

पारसी—मेजर ई० एच० कैनटीनवाला ए.आई.आर.ओ. (रिटा.) एम.एन.ए.जी. (लण्डन) एफ़.आर.जी.एस.
सुश्री नाज़ू दारा देबू, 'दिलनवाज़'

फ़ारसी—स० मस्ऊदहसन रिज़्वी, भारत-सरकार-सम्मानित, भू.पू. (फ़ारसी) विभागाध्यक्ष लखनऊ वि० वि०

बंगला—प्रबोध मजुमदार

मराठी—डॉ. शिवराम चिंतामणि लेले एम.ए.
सुश्री कुसुम ताम्बे, एम. ए.

मलयाळम—के. ए. एस. अय्यर, भू. पू. उपकुलपति लख० वि० वि०

संस्कृत—बिहारीलाल शास्त्री, का.ती. बरेली
रामेश्वर प्रसाद पाण्डेय 'रमेश' शास्त्री, साहित्यरत्न

सिन्धी—एन.के. केवलरामानी, सा.मं.सि.स.

हिन्दी—डॉ० टी. एन. दीक्षित, एम. ए. पीएच.डी., डी. लिट. रीडर, ल.वि.वि.

वार्षिक मूल्य १०·००   एक प्रति २·५०

विषय-सूची

क्रम	विषय	लेखक	पृष्ठ
१	विद्वत्परिषद्	... ...	१
२	विषय-सूची	... ...	२
३	आप्त वचन	... ...	३-४
४	सम्पादकीय	... ...	५-८
५	वार्धा का योगी (पद्य)	नन्दकुमार अवस्थी—(क्रमशः)	१७-२४
६	(फ़ारसी)	सिर्रे अक्बर—शाहज़ादः दाराशिकोह कृत ५१ उपनिषदों की फ़ारसी व्याख्या। (क्रमशः) अनुवादक—डॉ. हर्षनारायण एम.ए.,पीएच.डी.	६५-८०
७	(मलयाळम)	कवि तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत महाभारत (क्रमशः) लिप्यन्तरणकार एवं अनु०—श्री के. ए. एस. अय्यर, भू. पू. संस्कृत विभागाध्यक्ष एवं उपकुलपति लखनऊ विश्वविद्यालय	७३-८८
८	(बंगला)	कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड—(क्रमशः) लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी, अनुवादक—श्री प्रबोध मजुमदार—	७३-८८
९	(तमिळ)	तिरुक्कुऱळ्—तिरुवल्लर कृत (क्रमशः) सानु०लिप्य०—सुश्री गोमती अय्यर, बी. ए. पद्य-भावानुवाद—नन्दकुमार अवस्थी	४९-६४
१०	(उर्दू)	शरीफ़ज़ादः(मिर्ज़ा रुसवा कृत उपन्यास—क्रमशः) लिप्यन्तरणकार—श्री विनयकुमार अवस्थी, सम्पादक—डॉ० सय्यद असद अली एम. ए. पीएच. डी.	५७-७२
११	(गुरमुखी)	श्री सुखमनी साहब (गुरु अर्जुनदेव की बानी—क्रमशः) अनुवादक—ख़्वाजः दिलमुहम्मद, लाहौर लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी	७३-८८
१२	(अरबी)	रियाज़ुस्सालिहीन (ज़ादें सफ़र)—(क्रमशः) लिप्यन्तरणकार—नन्दकुमार अवस्थी	४१-५६
१३	(ओड़िया)	वैदेहीश-विळास—उपेन्द्र भञ्ज कृत—(क्रमशः) सानु० लिप्य०—श्री सुरेशचन्द्रनन्द, एम.ए., कटक	४९-६[illegible]
१४	(मराठी)	श्रीराम-विजय—श्रीधर स्वामी कृत—(क्रमशः) अनुवादक—डॉ० गजानन साठे, पूना एम.ए., अंग्रेज़ी-मराठी-हिन्दी	९-२४

आप्त वचन

[मनुष्य, संकट से उबरने के लिए, क्लेशकारी तत्त्वों पर विजय पाने के लिए, प्रायः बाहरी साधनों और भौतिक शक्तियों पर भरोसा करता है, उनका सहारा लेता है। उसे यह ज्ञान नहीं रहता कि जिन बाहरी साधनों का वह मुँह जोह रहा है, वे स्वयं नाशवान् और दुर्बल हैं। अनन्त शक्ति का स्रोत तो अपने अभ्यन्तर में ही विराजमान है। आत्मानुभूति—अपने ही में निहित अनन्तशक्ति का ज्ञान, उसी के फलस्वरूप दृढ़ता, पवित्रता और सफलता ही विजय का आधार है। इस्लाम धर्म में 'तक़्वा' शब्द भी इन्हीं लक्षणों का पर्याय है। नाना प्रकार के अस्त्र-शस्त्र, मित्र, सहायक—ये सब तो स्वयं प्रकृति की कठपुतली-मात्र हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में निम्न पंक्तियों द्वारा इसी ज्ञान को साकार किया है। नाना आयुध-युक्त विशाल रथ पर आसीन महापराक्रमी रावण के मुक़ाबिले में रघुनाथ रामचन्द्र को पैदल ही युद्ध-तत्पर देख कर शंकालु विभीषण ने सहम कर निवेदन किया—]

चौ०—रावनु रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयउ अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥ १॥

रावण को रथ पर और श्रीरघुवीर को बिना रथ के देखकर विभीषण अधीर हो गये। प्रेम अधिक होने से उनके मन में सन्देह हो गया [कि वे बिना रथ के रावण को कैसे जीत सकेंगे]। श्रीरामजी के चरणों की वन्दना करके वे स्नेहपूर्वक कहने लगे॥ १॥

नाथ न रथ नहिं तन पद त्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होइ सो स्यंदन आना॥ २॥

हे नाथ! आपके न रथ है, न तन की रक्षा करने वाला कवच है और न जूते ही हैं। वह बलवान् वीर रावण किस प्रकार जीता जायगा? कृपानिधान श्रीरामजी ने कहा—हे सखे! सुनो, जिससे जय होती है, वह रथ दूसरा ही है॥ २॥

सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥ ३॥

शौर्य और धैर्य उस रथ के पहिये हैं। सत्य और शील (सदाचार) उसकी मज़बूत ध्वजा और पताका हैं। बल, विवेक, दम (इन्द्रियों का वश में होना) और परोपकार—ये चार उसके घोड़े हैं, जो क्षमा, दया और समता रूपी डोरी से रथ में जोड़े हुए हैं॥ ३॥

ईस भजनु सारथी सुजाना । बिरति चर्म संतोष कृपाना ॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा । बर बिग्यान कठिन कोदंडा ॥ ४ ॥

ईश्वर का भजन ही [उस रथ को चलाने वाला] चतुर सारथि है। वैराग्य ढाल है और सन्तोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है ॥ ४ ॥

अमल अचल मन त्रोन समाना । सम यम नियम सिलीमुख नाना ॥
कवच अभेद बिप्र गुरपूजा । एहि सम बिजय उपाय न दूजा ॥ ५ ॥

निर्मल (पापरहित) और अचल (स्थिर) मन तरकस के समान है। शम (मन का वश में होना), [अहिंसादि] यम और [शौचादि] नियम—ये बहुत-से बाण हैं। ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं है ॥ ५ ॥

सखा धर्ममय अस रथ जाकें । जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें ॥ ६ ॥

हे सखे ! ऐसा धर्ममय रथ जिसके हो उसको जीतने के लिए कहीं शत्रु ही नहीं ॥ ६ ॥

दो०—महा अजय संसार-रिपु, जीति सकइ सो बीर ।
जाकें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर ॥ ८० (क) ॥

हे धीरबुद्धि वाले सखा! सुनो, जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह वीर, संसार (जन्म-मृत्यु) रूपी महान् दुर्जय शत्रु को भी जीत सकता है। [रावण की तो बात ही क्या है ?] ॥ ८० (क) ॥

सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पद कंज ।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज ॥ ८० (ख) ॥

प्रभु के वचन सुनकर विभीषणजी ने हर्षित होकर उनके चरणकमल पकड़ लिये [और कहा—] हे कृपा और सुख के समूह श्रीरामजी ! आपने इसी बहाने मुझे [महान्] उपदेश दिया ॥ ८० (ख) ॥

सम्पादकीय

हे वर्ष-विगत ! सादर प्रणाम !

जनवरी १९७० से 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक का प्रकाशन आरंभ हुआ था। अप्रैल और जुलाई के पश्चात् अक्तूबर का यह अंक चतुर्थ है, और इस क्रम से 'वाणी सरोवर' का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ।

केवल एक वर्ष के शिशु-जीवन में ही, देश के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश और स्वागत—इस सौभाग्य का सारा श्रेय पत्र के अद्वितीय कार्यक्रम को ही है। विविध भाषाओं के अति लोकप्रिय ग्रंथों के हिन्दी अनुवाद सहित देवनागरी लिप्यन्तरण का धारावाहिक प्रकाशन—यह 'वाणी सरोवर' का अनूठा, सफल और देश में आदिम प्रयास है। भाषाई सेतुकरण और उसके द्वारा साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समन्वय की उपलब्धि के प्रशस्त मार्ग का प्रदर्शक यह पत्र, सभी भाषाई क्षेत्रों के विद्वानों, साहित्यानुरागियों और राष्ट्रीय एकीकरण के भावुकों द्वारा आदृत और प्रशंसित हुआ है।

भगवान् की कृपा और विद्वानों के अनुग्रह से अपने को कृतकृत्य मानते हुए, विदा हो रहे 'वर्ष' को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने के साथ-साथ, गत पूरे वर्ष में 'वाणी सरोवर' द्वारा अर्पित सेवाओं का सिंहावलोकन अपने उदार और गुणग्राहक पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं :—

धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय

प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना, मानवमात्र में परस्पर एक-पारिवारिकता और ईश्वर से सान्निध्य अथवा एकीकरण, इनकी ओर प्रवृत्त करनेवाले मार्ग को ही धर्म कहा गया है। इसी को विविध भाषाओं में सदाचार, तक़्वा, राइट्यसनेस (*Righteousness*) आदि शब्दों से इंगित करते हैं। आजकल के बहुचर्चित विषय 'धर्म-निरपेक्षता' के अर्थ धर्म-विमुखता नहीं वरन् अपने मान्य धर्म के प्रति अनन्य आस्था और अन्य धर्मों के प्रति सद्भावना है।

अस्तु, भारत जैसे विशाल देश में नाना धर्मों के अनुयायी एक साथ फलते-फूलते, निवास करते हैं। अपने और दूसरों के धर्म को भिन्न न मान कर, एक ही शाश्वत धर्म की देश-काल-पात्र के अनुसार विभिन्न छबि-मात्र समझते हुए, परस्पर प्रेम और सद्भाव से निवास करें—इस पुनीत लक्ष्य की सिद्धि में 'वाणी सरोवर' ने वेद, उपनिषद्, क़ुर्आन, पारसी गाथा, सिक्ख गुरुओं की वाणी, बाइबिल आदि से उद्धरणों अथवा ग्रन्थों के मूल-पाठ को देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद सहित देने की नीति अपना कर, सभी धर्मावलम्बियों को सुअसवर प्रदान किया है कि वे न केवल अपने, वरन् प्रत्येक धर्म के वाक्यों में अपने धर्म का प्रतिबिम्ब देख सकें ; विभिन्न भाषाओं में आप्तवचनों के मूल-पाठ

ईस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥ ४॥

ईश्वर का भजन ही [उस रथ को चलाने वाला] चतुर सारथि है। वैराग्य ढाल है और सन्तोष तलवार है। दान फरसा है, बुद्धि प्रचण्ड शक्ति है, श्रेष्ठ विज्ञान कठिन धनुष है॥ ४॥

अमल अचल मन त्रोन समाना। सम यम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुरपूजा। एहि सम बिजय उपाय न दूजा॥ ५॥

निर्मल (पापरहित) और अचल (स्थिर) मन तरकस के समान है। शम (मन का वश में होना), [अहिंसादि] यम और [शौचादि] नियम—ये बहुत-से बाण हैं। ब्राह्मणों और गुरु का पूजन अभेद्य कवच है। इसके समान विजय का दूसरा उपाय नहीं है॥ ५॥

सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥ ६॥

हे सखे! ऐसा धर्ममय रथ जिसके हो उसको जीतने के लिए कहीं शत्रु ही नहीं॥ ६॥

दो०—महा अजय संसार-रिपु, जीति सकइ सो बीर।
जाकें अस रथ होइ दृढ़, सुनहु सखा मतिधीर॥ ८० (क)॥

हे धीरबुद्धि वाले सखा! सुनो, जिसके पास ऐसा दृढ़ रथ हो, वह वीर, संसार (जन्म-मृत्यु) रूपी महान् दुर्जय शत्रु को भी जीत सकता है। [रावण की तो बात ही क्या है?]॥ ८० (क)॥

सुनि प्रभु बचन बिभीषन, हरषि गहे पद कंज।
एहि मिस मोहि उपदेसेहु राम कृपा सुख पुंज॥ ८० (ख)॥

प्रभु के वचन सुनकर विभीषणजी ने हर्षित होकर उनके चरणकमल पकड़ लिये [और कहा—] हे कृपा और सुख के समूह श्रीरामजी! आपने इसी बहाने मुझे [महान्] उपदेश दिया॥ ८० (ख)॥

सम्पादकीय

हे वर्ष-विगत ! सादर प्रणाम !

जनवरी १९७० से 'वाणी सरोवर' त्रैमासिक का प्रकाशन आरंभ हुआ था। अप्रैल और जुलाई के पश्चात् अक्तूबर का यह अंक चतुर्थ है, और इस क्रम से 'वाणी सरोवर' का प्रथम वर्ष समाप्त हुआ।

केवल एक वर्ष के शिशु-जीवन में ही, देश के प्रत्येक क्षेत्र में प्रवेश और स्वागत—इस सौभाग्य का सारा श्रेय पत्र के अद्वितीय कार्यक्रम को ही है। विविध भाषाओं के अति लोकप्रिय ग्रंथों के हिन्दी अनुवाद सहित देवनागरी लिप्यन्तरण का धारावाहिक प्रकाशन—यह 'वाणी सरोवर' का अनूठा, सफल और देश में आदिम प्रयास है। भाषाई सेतुकरण और उसके द्वारा साहित्यिक, सामाजिक और सांस्कृतिक समन्वय की उपलब्धि के प्रशस्त मार्ग का प्रदर्शक यह पत्र, सभी भाषाई क्षेत्रों के विद्वानों, साहित्यानुरागियों और राष्ट्रीय एकीकरण के भावुकों द्वारा आदृत और प्रशंसित हुआ है।

भगवान् की कृपा और विद्वानों के अनुग्रह से अपने को कृतकृत्य मानते हुए, विदा हो रहे 'वर्ष' को श्रद्धाञ्जलि समर्पित करने के साथ-साथ, गत पूरे वर्ष में 'वाणी सरोवर' द्वारा अर्पित सेवाओं का सिंहावलोकन अपने उदार और गुणग्राहक पाठकों की जानकारी के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं :—

धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय

प्राणिमात्र के प्रति सद्भावना, मानवमात्र में परस्पर एक-पारिवारिकता और ईश्वर से सान्निध्य अथवा एकीकरण, इनकी ओर प्रवृत्त करनेवाले मार्ग को ही धर्म कहा गया है। इसी को विविध भाषाओं में सदाचार, तक़्वा, राइट्यसनेस (*Righteousness*) आदि शब्दों से इंगित करते हैं। आजकल के बहुचर्चित विषय 'धर्म-निरपेक्षता' के अर्थ धर्म-विमुखता नहीं वरन् अपने मान्य धर्म के प्रति अनन्य आस्था और अन्य धर्मों के प्रति सद्भावना है।

अस्तु, भारत जैसे विशाल देश में नाना धर्मों के अनुयायी एक साथ फलते-फूलते, निवास करते हैं। अपने और दूसरों के धर्म को भिन्न न मान कर, एक ही शाश्वत धर्म की देश-काल-पात्र के अनुसार विभिन्न छबि-मात्र समझते हुए, परस्पर प्रेम और सद्भाव से निवास करें—इस पुनीत लक्ष्य की सिद्धि में 'वाणी सरोवर' ने वेद, उपनिषद्, क़ुर्आन, पारसी गाथा, सिक्ख गुरुओं की वाणी, बाइबिल आदि से उद्धरणों अथवा ग्रन्थों के मूल-पाठ को देवनागरी लिपि में, हिन्दी अनुवाद सहित देने की नीति अपना कर, सभी धर्मावलम्बियों को सुअसवर प्रदान किया है कि वे न केवल अपने, वरन् प्रत्येक धर्म के वाक्यों में अपने धर्म का प्रतिबिम्ब देख सकें ; विभिन्न भाषाओं में आप्तवचनों के मूल-पाठ

का आनन्द, और अनुवाद द्वारा उनके भावों को हृदयंगम करते हुए ईमानदारी से विचार कर सकें कि क्या वे सारी शिक्षाएँ उनके अपने धर्म के ही अनुरूप नहीं हैं ? धार्मिक समन्वय के साथ-साथ अनेक जन-समूहों के आचार-विचार, वेशभूषा, तथा नाना प्रकार की मान्यताओं से परिचित होकर अपने राष्ट्र के, अर्थात् अपने ही शरीर के अंग-प्रत्यंगों को पहचानें—यह है 'वाणी सरोवर' द्वारा धार्मिक और सांस्कृतिक समन्वय का योगदान।

भाषाई सेतुकरण

हमारा राष्ट्र अनेक भाषाओं एवं अनगिनत बोलियों की क्रीडाभूमि है। इन सभी भाषाओं के अपने-अपने वाङ्मय हैं; अनेक सन्तों और विद्वानों के उत्कृष्ट ग्रंथ-रत्नों के द्वारा, प्रत्येक भाषा समलंकृत है। किन्तु विभिन्न लिपियों से अवगत न होने के कारण सारा देश उनसे लाभान्वित नहीं हो पाता—न यह सर्वसाधारण के लिए संभव है कि वह एक साथ इतनी लिपियों और भाषाओं पर अधिकार कर सकें।

अस्तु, इन पंक्तियों के लेखक की गत बाईस वर्ष की भाषाई साधना की पृष्ठभूमि पर 'वाणी सरोवर' ने जन्म लेकर, अखिल देश में सर्वाधिक समझी-बोली जानेवाली राष्ट्रभाषा-हिन्दी और राष्ट्रलिपि-देवनागरी के माध्यम से, भारत में व्यवहृत सभी देशी-विदेशी भाषाओं के उत्कृष्ट साहित्य को सारे देश में प्रसारित करने—हर क्षेत्रीय भाषा को सीमित क्षेत्र से निकाल कर राष्ट्रव्यापी बनाने के कार्यक्रम को सफलतापूर्वक अपनाया।

प्रथम वर्ष की भाषाई उपलब्धियाँ

१. वैदिक मंत्रों के सानुवाद सस्वर मूल पाठ; क़ुर्आन शरीफ़ की अ़रबी आयतों का देवनागरी लिपि में अ़रबी शास्त्रीय पद्धति पर लिप्यन्तरण तथा अनुवाद *; अशो ज़रथ्रूस्त्र गाथा के पारसी मंत्रों को यथावत् देकर उनका वैदिक उच्चारण सहित हिन्दी अनुवाद। आर्य-ग्रंथ वेदों और पारसीक-अवेस्ता एवं गाथा के समानरूपेण विद्वान् श्री अरदेशर फ़ामजी खबरदार के अद्‌भुत शोधग्रंथ 'निउ लाइट ऑन दि गाथाज़् ऑफ़ होली ज़रथूस्त्र' के द्वारा हिन्दी पाठकों के लिए यह अपूर्व जानकारी उपलब्ध हुई है कि गाथा और वेदों के अनेक मंत्र एक मातृभाषा से उत्पन्न, समानरूप और समानार्थक हैं। खबरदार महोदय ने देवासुर संग्राम के समय की कटुता को धो-बहाया है। भारतीय और ईरानी आर्यों के एक ही मूलपुरुष, मूलभाषा और मूलग्रंथ का युग प्रत्यक्ष प्रस्तुत कर दिखाया है।

२. (संस्कृत-अ़रबी फ़ारसी) शाहज़ादः दाराशिकोह कृत ५१ उपनिषदों की 'सिर्रे अक्कर' नाम से प्रख्यात् फ़ारसी व्याख्या इतिहासविद् डा० ताराचंद के पुरुषार्थ से, ईरान में प्रकाशित हुई। तत्त्वज्ञान के जिज्ञासु और संस्कृत के विद्वान् राजकुमार दारा की इस अमर कृति का धारावाहिक प्रकाशन हो रहा है।

*** अ़रबी के विश्वविख्यात धर्मग्रंथ क़ुर्आन का देवनागरी लिपि में समग्र मूल-पाठ, हिन्दी-अनुवाद सहित, २० वर्षों के अथक परिश्रम के पश्चात्, भुवन वाणी, रानीकटरा, लखनऊ-३ द्वारा प्रकाशित होकर हिन्दी जगत् के लिए एक अनुपम भेंट है।**

३. (मलयाळम) 'कवि तुञ्चत् एळुत्तच्छन्' प्रणीत अति लोकप्रिय मलयाळम-महाभारत का देवनागरी लिप्यन्तरण एवं हिन्दी अनुवाद (धारावाहिक) ।

४. (अ़रबी) इस्लाम धर्म की प्रसिद्ध हदीस * 'रियाज़ुस्सालिहीन' के उर्दू अनुवाद, 'ज़ादे सफ़र' का हिन्दी रूपान्तर (धारावाहिक) ।

५. (बंगला) गोस्वामी जी कृत 'रामचरितमानस' से एक शती प्राचीन, बंगला की सुप्रसिद्ध कृत्तिवास रामायण के पाँच काण्डों का देवनागरी लिप्यन्तरण और अवधी में पद्यानुवाद तो पहले ही प्रकाशित हो चुका है। 'वाणी सरोवर' के माध्यम से लंका काण्ड का देवनागरी लिप्यन्तरण एवं हिन्दी गद्यानुवाद (धारावाहिक) ।

६. (गुरमुखी) नित्य पठनीय, श्रीगुरु नानकदेव महाराज की अमरवाणी "श्री जपुजी" तथा श्रीगुरु अर्जुनदेव महाराज की भक्ति और ज्ञानमयी रचना 'सुखमनी साहब' के मूल गुरमुखी पाठ तथा पंजाब में लोकप्रिय, ख़्वाजा दिलमुहम्मद कृत ललित उर्दू पद्यानुवाद—दोनों का देवनागरी लिप्यन्तरण (धारावाहिक) ।

७. (उर्दू) मिर्ज़ा रुस्वा कृत उर्दू के लोकप्रसिद्ध नवयुवकोन्नायक और चारित्रिक उपन्यास 'शरीफ़ज़ादः' का देवनागरी लिप्यन्तरण (धारावाहिक) ।

८. (ओड़िया) उपेन्द्रभञ्ज-रचित ओड़िया भाषा के रीतिकालीन प्रसिद्ध काव्य 'बैदेहीशविलास' का हिन्दी अनुवाद सहित देवनागरी लिप्यन्तरण (धारावाहिक) ।

९. (मराठी) पं० श्रीधर स्वामी कृत प्राचीन ग्रंथ 'श्रीराम-विजय' का मूल पाठ-सहित हिन्दी अनुवाद (धारावाहिक) ।

१०. (तमिळ) दो हज़ार वर्ष प्राचीन, युगपुरुष तिरुवल्लर कृत सर्वधर्म-सर्वसम्प्र-दाय-मान्य नीतिग्रंथ 'तिरुक्कुरळ' का देवनागरी लिप्यन्तरण एवं हिन्दी गद्य-पद्य अनुवाद (धारावाहिक) । इस ग्रंथ को भारत का राष्ट्रीय ग्रंथ घोषित करने की माँग तमिळ-नाडु राज्य ने की है ।

अगले वर्ष का कार्यक्रम

१ असमी में माधवकंदली रामायण, २ तेलुगु में रंगनाथ रामायण, ३ तमिळ में कम्ब रामायण तथा ४ कन्नड़, गुजराती, सिंधी, कश्मीरी, पाली, अंग्रेजी आदि भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रंथों के हिन्दी अनुवाद सहित धारावाहिक देवनागरी लिप्यन्तरण की योजना कार्यान्वित हो चुकी है ।

विद्वान् और उदार पाठक कल्पना करें कि सामान्य शुल्क वाले इस पत्र के द्वारा कुछ ही काल में प्रत्येक भाषा के अनमोल ग्रंथों के सानुवाद लिप्यन्तरणों की पूर्ति हो जाने पर साहित्य और सन्दर्भ की दृष्टि से न केवल हिन्दी में विपुल भण्डार की वृद्धि, वरन् प्रत्येक भाषाई क्षेत्र के लिए अखिल देश के वाङ्मय को पढ़ने का सहज साधन सुलभ हो

* पैग़म्बर हज़्रत मुहम्मद (स़) के कथन ।

जायगा। 'वाणी-सरोवर' के फ़र्मे पृथक कर लेने और उन्हें विभिन्न विषयों में उनकी पृष्ठ-संख्या के अनुसार जोड़ देने पर अनेक स्वतंत्र ग्रंथ तैयार हो जायँगे।

अब, आगामी नवीन वर्ष में प्रवेश करते समय, 'वाणी सरोवर' की विद्वत्-परिषद् एवं संपादक की ओर से अपने से विदा होने वाले 'वर्ष' को पुनः सादर प्रणाम है।

* * *

प्रो० चन्द्रहासन !

प्रख्यात शिक्षाविद्, राष्ट्रभाषा के अनन्य भक्त और केरल की यशस्वी विभूति प्रो० चन्द्रहासन आजीवन समाजसेवी रहे। गत ९ अगस्त को दुखद निधन से पूर्व, वे केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के निदेशक पद पर आसीन थे।

'वाणी सरोवर' और 'भुवनवाणी ट्रस्ट' की उनसे अधिक आत्मीयता का कारण उद्देश्य की समानता है। इन पंक्तियों के लेखक के गत २२ वर्षों के सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण के कार्यक्रम के अनुरूप, चन्द्रहासन महोदय ने केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय के द्वारा 'परिवर्द्धित देवनागरी लिपि' को जन्म देकर अन्य भारतीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में लिखे जाने का मार्ग प्रशस्त किया।

प्रो० चंद्रहासन की दुखद मृत्यु से राष्ट्र को अपार क्षति हुई है। हम उनकी आत्मा को श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय से आशा करते हैं कि प्रोफ़ेसर महोदय द्वारा चलाये गये भाषाई सेतुकरण के पुनीत अभियान में और भी प्रशस्तता लाने का यत्न करेंगे।

—सम्पादक

ग्राहकों से—

'वाणी सरोवर' के उदार ग्राहकों से नम्र निवेदन है कि अगले वर्ष का शुल्क दस रुपया भेजकर अनुग्रहीत करें। इस वर्ष में, पत्र का कलेवर संभवतः दुगना हो जायगा। बृहत् कलेवर और उसके द्वारा उपलब्ध अनेक भाषाओं के सानुवाद लिप्यन्तरित ग्रंथों को देखते हुए यह शुल्क अति सामान्य है। पत्र के महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए उदार ग्राहकों से यह भी प्रार्थना है कि अपने-अपने क्षेत्र में 'वाणी सरोवर' के ग्राहक बनाकर इस पुनीत कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करें।

—सम्पादक

वार्धा का योगी

उसी समय प्रारब्ध कटी भारत-नभ में चमका तारा।
हिन्द न केवल, सकल विश्व में फैला जिसका उजियारा ॥

गाँव अगर मिट गये भला तो, दशा हिन्द की क्या होगी ?
इसी व्यथा में विकल, सोचने लगा 'वार्धा का योगी' ॥

छबि 'दरिद्रनारायण' की बापू की वाणी नमो ! नमो !।
भारत की जनता-जनार्दन के तपसी को नमो ! नमो ! ॥

नर-कंकाल नहीं नारायण ! ग्राम देवता नमो ! नमो !।
'बैक टु विलिजेज़', 'चलो गाँव सब', ग्राम तीर्थ हैं वहीं जमो ॥

बापू का आह्वान ! चौतरफ़ गाँव-गाँव अभियान जगे।
अस्सी प्रतिशत ग्राम्य बन्धुओं के सनेह में लोग पगे ॥

भूले बल का उदय, मानवी कर्तव्यों के भाव उगे।
क्या कसबा ? क्या गाँव ? देशजन करने ग्राम-सुधार लगे ॥

एक सूत में बँधा देश जब जगी गाँव की प्रभुताई।
ग्राम-चेतना के होते ही क्रान्ति बयालिस की छाई ॥

गाँवों की आज़ादी से भारत की आज़ादी आई।
खेती, उद्यम, कला, आचरन, शिक्षा साथ-साथ लाई ॥

रोग-दोष, गंदगी दूर मन-वाणी-काया स्वच्छ करें।
शिक्षा-सद्ग्रंथों से जन-जन के जीवन को धन्य करें ॥

ऋषि-मुनियों के ग्रामों में ऋषियों का ज्ञान प्रसार करें।
भारत के बीते गौरव का फिर से हम संचार करें।

सादा जीवन, स्वच्छ आचरन, धारन उच्च विचार किया।
पर-उपकार पुण्य, पर-पीड़ा पातक, मन में धार लिया ॥

यही हमारी सुमन-अञ्जली, यही हमारा है तर्पण।
बापू के प्रति नेह-बन्दना, तुलसी-पत्र यही अर्पण ॥

अभिनन्दन

क्या कुम्हार, क्या चर्मकार,
क्या धुनिया और जुलाहे।
बढ़ई, माँझी औ' लोहार,
रंगरेज, रजक, चरवाहे ॥

छपरबन्द, मीनागर, जड़िये,
मेहनतकश ये सारे।
देते सुख, हरते दुख सबके,
सच्चे बन्धु हमारे ॥

कला - शिल्प - गुन - खान,
दान-उपकार-अमित श्रम वाले।
अहंकारवश जिन्हें समझते,
अलग सदा मतवाले ॥

दबा भार से, सना इन्हीं में,
ऋनी लोक है जिनका।
करें, प्यार - सम्मान सहित,
सब मिल अभिनन्दन इनका ॥

रामराज्य स्वप्न !

जोती, परती, झाबर, बंजर, ऊसर, बरुवर क्या मटियार ।
जागीरें-तालुके मिटे सब पर समाज का है अधिकार ।।

बल-पौरुष, अपने हल-बैलों के बल पर झूमता किसान ।
आज भूमिधर के अरमानों का घर-घर है गड़ा निशान ।।

छुआ-छूत अलगाव बिरानापन के भाव रहे हम भूल ।
पिण्ड विलायत से छूटा, दुक्खों का हुआ मूल निर्मूल ।।

उद्यम औ' उद्योग बड़े क्या छोटे धंधों का व्यापार ।
खान-पान, तालीम, चिकित्सा की चौतरफ़ मची भरमार ।।

बड़े-बड़े बाँधों का गौरव, अस्त्रों-शस्त्रों का निर्मान ।
सेतु, विमान, एटमी वसुधा, बनने लगे विविध जलयान ।।

विद्यालय—पुस्तकालयों का कोने-कोने में संचार ।
पञ्चायत, परिषद, संसद, सब भाँति जमी भारत सरकार ।।

सर्वोपरि जनतंत्र विश्व का, जनसमूह अत्यन्त विशाल ।
देश-विदेशों में डंका पिट रहा हिन्द की जली मशाल ।।

फिर भी

सब कुछ है फिर भी सपना है 'राम-राज्य' का कहीं प्रकाश ।
मन को शान्ति न तन को रोज़ी, नर-नारी चौतरफ़ उदास ।।

सुधा बरसती है चौतरफ़ा, बूँद न छूता कहीं शरीर ।
हारी हिम्मत क्यों अनाथ सा मानव ठोक रहा तकदीर ? ।।

कारन यह कि 'वारधा के योगी' को हमने दिया बिसार ।
'हाय रुपैया' के पीछे दीवानी जनता क्या सरकार ।।

निज स्वारथ में सने, दम्भ में फँसे हुये, सब जन मतिमन्द ।
'राम राज्य' का द्वार इसी से यारों हुआ सब तरह बन्द ।।

है उपाय बस एक, चले प्रत्येक, उसी 'योगी' की राह ।
'हम सुधरे तो जग सुधरा' बस इसी नीति से है निर्वाह ।।

नुक्ताचीनी भूल जगत की, पहले अपने मन को तौल ।
मन में धरो, करो जैसा कुछ आगे पाठ दिया अनमोल ।।

'रामराज्य' फिर दूर नहीं है, यहीं सुलभ दुनिया औ' दीन ।
बिना 'राम' के सब में दर्शन किये, रहोगे दुर्बल-हीन ।।

ग्राम-स्वावलंबन

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो ? आज पहेली है भारी ।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी ।।

शक्ति, ज्ञान, धन, कला, परिश्रम, प्रेम, संगठन-सहकारी ।
ग्राम आत्म-निर्भर करने के यही जतन हैं सुखकारी ।।

सब मिल सोचें श्रमिक और खेतिहर, रुजगारी, दरबारी ।
कर सकते ग्रामीण स्वयं क्या ? क्या सुविधाएँ सरकारी ? ।।

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो ? आज पहेली है भारी ।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी ।।

खेल कूद व्यायाम-केन्द्र, पैरलल-बार, डम्बुल, मुद्गर ।
खेल कबड्डी, खोखो, मेहनन से रग-पुट्ठे बनें सुघर ।।

'निर्बल' हैं पातकी! 'सबल' बिन उद्यम औ' व्यापार किधर? ।
वेदों में अरमान—सौ बरस स्वस्थ रहें प्राणी घर-घर ।।

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो ? आज पहेली है भारी ।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी ।।

बिना ज्ञान के गुज़र न जीवन, धन्धा या रुज़गार कहाँ ? ।
बिना ज्ञान के प्रेम, संगठन, धन, वैभव-संचार कहाँ ? ।।

पत्र-पत्रिका, ग्रंथ, सूचनाकेन्द्र, तजुर्बे मिलें जहाँ ।
सामूहिक उपयोग किये से सुख की फैले बेल वहाँ ।।

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो ? आज पहेली है भारी ।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी ।।

धन है जीवन प्राण, बिना 'लक्ष्मी' जग में कल्यान नहीं ।
'धर्म' 'काम' या 'मोक्ष' न मिलता, मानव का सम्मान नहीं ।।

खेती, उद्यम, शिल्प, कला, श्रम—कोई धन्धा करो कहीं ।
नहीं अकेले, 'सकल ग्राम' के हित पर रक्खो ध्यान वहीं ।।

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो ? आज पहेली है भारी ।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी ।।

अपनी पंचायत-अधीन-जनपद की आवश्यकताएँ।
बिना ख़रीदे बाहर से, जनपद में पूरी हो जाएँ॥
कसर रहे तो 'माल' बदल कर 'माल' कहीं से ले आएँ।
मुँह न हुकूमत का देखें, उलटे धन उसको पहुँचाएँ॥

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो? आज पहेली है भारी।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी॥

कठिन शुरू में! किन्तु प्रेम, संगठन, भावना-सहकारी।
नित अभ्यास बनाये तुमको सुख-समृद्धि का अधिकारी॥
एक-एक दो नहीं, उपजते उनसे ग्यारह बलधारी।
अखिल गाँव के जीवट पर कंगाली की हिम्मत हारी॥

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो? आज पहेली है भारी।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी॥

ग्राम एक परिवार! सुमति से पंचायत की साख जगै।
धन देवता प्रसन्न! सभी परिवारों पर फिर टैक्स लगै॥
धन का दीपक, नेह तेल, सब के श्रम की फिर जोति जगै।
सुलभ स्वावलंबन करने को गाँव-गाँव अभियान दगै॥

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो? आज पहेली है भारी।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी॥

जनता के कर्त्तव्य हुए यह, सुनो मदद अब सरकारी।
धन-सलाह की मदद, क़र्ज़, औज़ार योजना सहकारी॥
अस्पताल, स्कूल, सुलभ हैं और विविध साधन भारी।
अहलकार, सरकार, सुखी पंचायत क्या? जनता सारी!॥

ग्राम-स्वावलंबन कैसे हो? आज पहेली है भारी।
हल करने में लगे हुये नर-नारी जन औ' अधिकारी।

पंचायत-परमेसुर

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा ।

पुरई-पुरवा सहित समीपी तखत-गाँव पंचायत है ।
रामराज्य के सुख-स्वप्नों की पुन्य-घरी सुभ-सायत है ।।
धरा-धाम के सभी सुखों की गाँव-गाँव बहुतायत है ।
सदा हिन्द की पंचायत पर रीझी सकल विलायत है ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा ।

रबी, ख़रीफ़ और मिलवाँ, बरसैल जिनिस की बक्खारी ।
तरकारी, फल, फूल, कन्द से भरी-पुरी हैं फुलवारी ।।
बिया-बिसार और गुड़भेली, घर-घर बनती खँडसारी ।
पञ्चायती व्यवस्था की इस सुख-समृद्धि पर बलिहारी ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा ।

सहकारी भट्ठा ! न पकी ईंटों की अब है मुहताजी ।
लोहा औ' सीमेंट सुलभ, चौगिर्द हवेली हैं साजी ।।
सब के श्रम में सब का सुख; हरवाह-परोहन सब राजी ।
अस्पताल, नलकूप, इँदारे—चहुँ अनन्द-नौबत बाजी ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा ।

सफल हुआ श्रमदान, न रबदा, पुख़्ता हैं गलियारे सब ।
विद्यालय, व्यायाम-केन्द्र, रेडियो आदि संचारे अब ।।

पत्र-पत्रिका, समाचार, दुनिया वालों के सब करतब।
शक्ति, ज्ञान, धन, कला समुन्नत; सुख का है बस यही सबब ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा।

मेल मुरौवत, शील आँख में; त्याग चले हैं दलबंदी।
ठाँव-कुठाँव न खेत हमारे; अब तो फैली चकबंदी।
बिजली है आ रही गाँव में, रोज़ दिवाली-नौचंदी।
नीच-ऊँच का भेद बराबर 'चन्द मिसिर' 'धानुक चंदी' ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा।

हर वयस्क ने मत के द्वारा पंचायत के पंच चुने।
निर्बल और सबल सब के वे रक्षक-हामीदार बने ।।
वीर नागरिक सब भारत के मातृभूमि के नेह-सने।
कुरीतियाँ मिट चलीं, नारियों ने त्यागे घूँघट-गहने ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा।

नीर-छीर का न्याय—अदालत पञ्चायत के अधिकारी।
नाते-गोते, बन्धु-परोसी, सबल-धनी औ दुखियारी ।।
सत्य-नेकनियती से सुख के सब पहलू पर रखवारी।
पञ्चायत की सफल क्रांति पर दिल्ली की संसद वारी ।।

पंच और सरपंच, अदालत पञ्चायत की पैकरमा—
पचकोसी है गाँव-गाँव परमेसुर-पंचों की महिमा।

सर्वे वेदा यत् पदमामनन्ति,
तपाꣳसि सर्वाणि च यद् वदन्ति,
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति,
तत् ते पदꣳ संग्रहेण ब्रवीमि–'ओम्' इत्येतत् ॥१५॥

अनु०--सारे वेद जिस पद का वर्णन करते हैं, समस्त तप जिस का बखान करते हैं, जिस की इच्छा करने वाले [मुमुक्षु जन] ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, उस पद को मैं तुझ से संक्षेप में कहता हूँ–यह 'ॐ' है। (१५)

सि०अ०—यमराज बोले—हे नचिकेतः ! सारे वेदों का सार जिस आत्मा के ज्ञान के लिए है और सारी तपस्याएँ और भोगों से वैराग्य जिस की प्राप्ति के लिए हैं, उसे मैं तुझे संक्षेप में बताता हूँ। वह क्या है ? ॐ है। [१५]

एतद्ध्येवाक्षरं ब्रह्म, एतद्ध्येवाक्षरं परम् ।
एतद्ध्येवाक्षरं ज्ञात्वा यो यदिच्छति तस्य तत् ॥१६॥

अनु०--यह अक्षर ही ब्रह्म है, यह अक्षर ही पर है। इसी अक्षर को जान कर जो जिस की इच्छा करता है वह उस का हो जाता है।(१६)

सि०अ०—यही अक्षर प्रणव ब्रह्म है, सब से महान् है। इसी शब्द को समझ कर यदि ब्रह्मपद की अभिलाषा होगी तो तू ब्रह्मपद प्राप्त करेगा। और यदि तू ससीम की अभिलाषा करेगा तो ससीम को प्राप्त करेगा, क्योंकि यह महान् शब्द असीम भी है और ससीम भी। [१६]

एतदालम्बनꣳ श्रेष्ठमेतदालम्बनं परम् ।
एतदालम्बनं ज्ञात्वा ब्रह्मलोके महीयते ॥१७॥

अनु०--यही श्रेष्ठ आलम्बन है, यही परम आलम्बन है। इस आलम्बन को जान कर पुरुष ब्रह्मलोक में महिमान्वित होता है। (१७)

सि०अ०—वही तत्त्व परम आलम्बन है, जिस के समान दूसरा आलम्बन नहीं। जो कोई इस आलम्बन को जानता है वह साक्षात् ब्रह्मलोक को प्राप्त कर परमानन्द हो जाता है। [१७]

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्,
नायं कुतश्चिन्, न बभूव कश्चित् ।
अजो, नित्यः, शाश्वतोऽयं, पुराणो;
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥१८॥[1]

अनु०--यह विपश्चित् (ज्ञानवान् आत्मा) न उत्पन्न होता है, न मरता है; यह न तो किसी कारण से उत्पन्न हुआ है और न [स्वतः ही] कुछ बना है। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत, और पुरातन है; तथा शरीर के नष्ट हो जाने पर भी नष्ट नहीं होता। (१८)

सि०अ०—वह आत्मा न जन्म लेता है और न मरता है। वह सर्वज्ञ है। वह न किसी वस्तु से उत्पन्न हुआ है और न उस से कोई वस्तु उत्पन्न हुई है। उस की उत्पत्ति का कोई कारण नहीं। वह स्वतः सिद्ध, शाश्वत, अविनश्वर, और स्थायी है। वह शरीर के नष्ट हो जाने पर भी नष्ट नहीं होता। [१८]

हन्ता चेन् मन्यते हन्तुꣳ, हतश् चेन् मन्यते हतम्;
उभौ तौ न विजानीतो, नायꣳ हन्ति न हन्यते ॥१९॥[2]

अनु०--यदि मारने वाला आत्मा को मारने का विचार करता है और मारा जानेवाला उसे मारा हुआ समझता है, तो वे दोनों ही उसे नहीं जानते; क्योंकि यह न तो मारता है और न मारा जाता है। (१९)

सि०अ०—जो समझता है कि मैं हन्ता हूँ और जो समझता है कि मैं हत हूँ, उन दोनों ने ग़लत समझा है। आत्मा को न कोई मार सकता है और न आत्मा मारा जाता है। हनन और नाश शरीर का होता है न कि जीव का जो आत्मा है। [१९]

---

१ यह मंत्र किंचित् पाठभेद के साथ गीता (२.२०) में भी आता है।

२ यह मंत्र किंचित् पाठभेद के साथ गीता (२.१९) में भी आता है।

अणोरणीयान् महतो महीया-
नात्माऽस्य जन्तोर् निहितो गुहायाम् ।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको
धातुः प्रसादान् महिमानमात्मनः ॥२०॥[1]

अनु०–जीव की [हृदयरूपी] गुहा में निहित आत्मा अणु से भी अणुतर और महान् से भी महत्तर है। निष्काम पुरुष विधाता के प्रसाद से, शोकरहित हो कर, आत्मा की उस महिमा को देखता है। (२०)

सि०अ०—आत्मा सूक्ष्मों में सूक्ष्मतम है और महानों में महत्तम। वह आत्मा सभी प्राणियों के हृदय में है। यद्यपि वह सब में है तथापि जो निष्काम है, जो कर्म का फल दृष्टि में नहीं रखता, जो शोकरहित हो चुका है, और जिस ने चित्त को शुद्ध कर लिया है उस के अतिरिक्त दूसरे को उस का साक्षात्कार नहीं होता। जो ऐसा है वही अपने आत्मा की महिमा को देखता है। [२०]

आसीनो दूरं व्रजति, शयानो याति सर्वतः।
कस् तं मदामदं देवं मदन्यो ज्ञातुमर्हति ? ॥२१॥

अनु०–वह स्थित हुआ [भी] दूर तक जाता है, शयन करता हुआ [भी] सब ओर पहुँचता है। मद (हर्ष) से युक्त और मद से रहित उस देव को [भला] मेरे सिवा और कौन जान सकता है ? (२१)

सि०अ०—वह आत्मा यद्यपि गति-रहित है, तथापि सारी गतिआँ उस की गतिआँ हैं। वह शयन में भी सर्वत्र पहुँचता है। यद्यपि वह साक्षात् आनन्द है तथापि

---

१ भारतीय जीवन-दृष्टि में कर्म का प्राधान्य है। यहाँ तक कहा गया है कि 'ईश्वरैरपि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्' अर्थात् शुभाशुभ कर्मों का फल ईश्वरों को भी भोगना पड़ता है। इस के विपरीत सामी (यहूदी, ईसाई, और इस्लाम) धर्मों में ईश्वरानुग्रह का आग्रह देखने को मिलता है। अर्थात् कर्म के बिना भी ईश्वर का अनुग्रह अथवा प्रसाद जीव को कुछ से कुछ बना देता है। वैष्णवों में भी इस ईश्वरानुग्रहवाद का पर्याप्त महत्त्व है। इस का मूल प्रस्तुत मंत्र तथा आगामी मंत्र २३ में विद्यमान है। श्वेताश्वतरोपनिषद् ३.२०; मुण्डकोपनिषद् ३.२.३; तैत्तिरीयारण्यक १०.१०.१ (अथवा महानारायणीयोपनिषद् ८.३); और ऋग्वेद १०.१२५.५ में भी इस के बीज मिल जाते हैं।

वह आनन्द से भी परे है। आत्मा चूँकि साक्षात् अहम् है, उसे मेरे सिवा कौन जान सकता है ? अर्थात् आत्मा अपने को स्वयं समझता है। [२१]

अशरीरꣳ शरीरेष्वनवस्थेष्ववस्थितम्,
महान्तं, विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥२२॥

अधु०—शरीरों में शरीररहित, अस्थायियों में स्थायी, महान्, और सर्वव्यापक आत्मा को जान कर धीर [पुरुष] शोक नहीं करता। (२२)

सि०अ०—आत्मा प्रकाशस्वरूप, अशरीर, भाँति-भाँति के शरीरों में विद्यमान, महान्, और विभु है। जो कोई आत्मा को ऐसा जानता है वह शोक-रहित हो जाता है। [२२]

नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो,
न मेधया, न बहुना श्रुतेन।
यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्,
तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूꣳ स्वाम् ॥२३॥[1]

अनु०--यह आत्मा न [शास्त्र के] प्रवचन, न मेधा, न अधिक पाण्डित्य से प्राप्त हो सकता है। यह जिस का वरण करता है उसी द्वारा यह प्राप्त किया जा सकता है। उस के प्रति यह आत्मा अपने स्वरूप को अभिव्यक्त कर देता है। (२३)

सि०अ०—उसे सब लोग नहीं प्राप्त कर पाते, क्योंकि वह अभिधान (निरूपण) और उपलक्षण (इंगित) में नहीं आता। वेद-वाक्यों के पाठ, मेधा, और बहुत सारे कर्मों के अनुष्ठान मात्र से उसे प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो आत्मा की अभिलाषा करता है वह आत्मा को प्राप्त करता है। आत्मा स्वयं अपना स्वरूप उस पर प्रकट कर देता है। [२३]

नाविरतो दुश्चरितान्, नाशान्तो, नासमाहितः,
नाशान्तमानसो वाऽपि प्रज्ञानेनैनमाप्नुयात् ॥२४॥

अनु०--जो पापकर्मों से निवृत्त नहीं, जो अशान्त है, जो असमाहित

१. मंत्र २० की टिप्पणी द्रष्टव्य है।

है, और जिस का चित अशान्त है वह इसे ज्ञान द्वारा प्राप्त नहीं कर सकता। (२४)

सि०अ०—जो कोई दुष्कर्मों से निवृत्त नहीं होता, जिस का हृदय शान्त नहीं है, और जिस की इन्द्रियाँ वश में नहीं हैं वह आत्मा को प्राप्त नहीं करता। जो कोई इन्द्रियों को वश में कर लेता है और जिस का मन शान्ति प्राप्त कर लेता है वह ज्ञान और प्रज्ञा के कारण आत्मा को प्राप्त कर लेता है। [२४]

यस्य ब्रह्म च क्षत्रं च उभे भवत ओदनः,
मृत्युर् यस्योपसेचनं, क इत्था वेद यत्र सः ? ॥२५॥

अनु०--जिस के ब्राह्मण और क्षत्रिय दोनों ओदन (भात) हैं तथा मृत्यु जिस का उपसेचन (शाकादि, मिर्च-मसाला) है, उसे वस्तुतः कौन जान सकता है कि कहाँ है ? (२५)

सि०अ०—समस्त संसार उस आत्मा के भोजन के लिए भात के सदृश है और मृत्यु उस मिर्च-मसाले के सदृश जिसे भात के साथ खाते हैं। ऐसे आत्मा को, जिस के लिए मृत्यु, सम्पूर्ण संसार के साथ, भोजन है, कौन जान सकता है कि कहाँ है ? [२५]

॥ इति प्रथमेऽध्याये द्वितीया वल्ली ॥

तृतीया वल्ली

ऋतं[1] पिबन्तौ सुकृतस्य लोके
गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति
पञ्चाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः ॥१॥

---

१ 'ऋत' शब्द एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण, व्यापक, और सारगर्भ वैदिक शब्द है। यह प्रायः 'सत्य' के साथ प्रयुक्त पाया जाता है। 'धर्म' शब्द संस्कृत वाङ्मय में जिन व्यापक अर्थों में प्रयुक्त हुआ है उन अर्थों में वह संभवतः ऋत का ही उपबृंहण है। इस का अनुवाद तो कठिन ही नहीं असंभव है, किन्तु सामान्यतः इसे उन नियमों की समष्टि समझना चाहिए जिन से विश्व संचालित है। इन नियमों में अन्तर्दृष्टि का नाम, लाक्षणिक अर्थ में, 'सत्य' है। परमेश्वर का नाम कहीं-कहीं 'ऋतम्भर' आता है (जैसे श्रीमद्भागवत ६.१३.१७ में), जिस का

अनु०—ब्रह्मवेत्ता लोग कहते हैं कि बुद्धिरूप गुहा के भीतर परम परार्ध में प्रविष्ट कर्मफल को भोगने वाले छाया और धूप के समान दो [तत्त्व] हैं। जिन्हों ने तीन बार नाचिकेताग्नि का चयन किया है वे पञ्चाग्नि की उपासना करने वाले भी यही बात कहते हैं। (१)

सि० अ०—शरीर में हृदयरन्ध्र में, जहाँ बुद्धि का निवास है, दो आत्मा हैं—एक जीवात्मा और दूसरा परमात्मा। कर्मों के फल के भोक्ता दोनों हैं और परमात्मा कौतुक-द्रष्टा मात्र। किन्तु दोनों ही परस्पर एक हैं। अतएव कहा गया कि दोनों भोक्ता हैं। ब्रह्मज्ञों, ज्ञानियों, साधकों, कर्मयोगियों ने इन दो आत्माओं में प्रकाश और छाया का सम्बन्ध माना है। परमात्मा प्रकाश-स्थानी है और जीवात्मा छाया-स्थानी। [1]

अर्थ हुआ सृष्टि का नियामक। योगसूत्र में जिस प्रज्ञा को 'ऋतम्भरा' (ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा च–१.४८) संज्ञा दी गयी है वह इसी ऋत में अन्तर्दृष्टि को धारण करने वाली होती है। ऋग्वेद में यह भी कहा गया है कि 'ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत' (१०.१९०.१), अर्थात् ऋत और सत्य प्रज्वलित तप से उत्पन्न हुए। इस में संभवतः सृष्टि की आद्य परिकल्पना की ओर इङ्गित है।

'ऋत' शब्द का निकटतम संस्कृतेतर पर्याय छठी शताब्दी ईसा-पूर्व के यूनानी दार्शनिक हेराक्लिटस का लाक्षणिक शब्द 'लोगस' है, जिसे ही बाइबिल में भी, अर्थान्तर से, ले लिया गया है।

प्रस्तुत उपनिषद् के विचाराधीन मंत्र में प्रयुक्त 'ऋत' शब्द का अर्थ कर्म अथवा कर्मफल प्रतीत होता है।

इस मंत्र में बुद्धि में दो तत्त्व बताये गये हैं। शंकराचार्य के अनुसार ये दोनों तत्त्व जीवात्मा और परमात्मा हैं। उन का संकेत ऋग्वेद के प्रसिद्ध मंत्र (१.१६४.२०)—

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परि षस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्यो अभि चाकशीति॥

की ओर है, जिस में प्रायः दो आत्माओं–भोक्ता और साक्षी—का वर्णन समझा जाता है। परन्तु उपनिषद् के आलोच्य मंत्र में तो दोनों को भोक्ता कहा गया है, जिस का यथावत् समाधान शंकर की व्याख्या से नहीं हो पाता। अनुवादक का सुचिंतित मत है कि यहाँ उन दो आत्माओं की ओर संकेत है जिन्हें महाभाष्यकार पतञ्जलि ने शरीरात्मा और अन्तरात्मा की संज्ञा दी है। अन्तरात्मा के कर्म का फल शरीरात्मा और शरीरात्मा के कर्म का फल अन्तरात्मा भोगता है। (द्वावात्मानौ–शरीरात्मा अन्तरात्मा च। अन्तरात्मा तत् कर्म करोति येन शरीरात्मा सुखदुःखे अनुभवति। शरीरात्मा तत्कर्म करोति येनान्तरात्मा सुखदुःखे अनुभवति। महाभाष्य ३.१.८७.१०; १.३.६७.६)

यः सेतुरीजानानामक्षरं ब्रह्म यत् परम्
अभयं तितीर्षतां पारं नाचिकेतꣳ शकेमहि ॥२॥

अनु०—जो यजन करने वालों के लिए सेतु है उस नाचिकेत अग्नि को तथा जो भयशून्य है और संसार को पार करने की इच्छा वालों का परम आश्रय है उस अक्षर ब्रह्म को जानने में हम समर्थ हों। (२)

सि० अ०—हे नचिकेत: ! नाचिकेत अग्नि वह सेतु है जो यजमान को इस लोक के पार पहुँचा देती है और परब्रह्म जो महास्रष्टा है और भयशून्य और अव्यय है उस पुरुष को संसार से पार कर देता है जो इस लोक से मुक्ति की कामना करता है। इस महान् स्रष्टा और इस महान् कर्म को मैं जानता हूँ। [२]

आत्मानꣳ रथिनं विद्धि, शरीरꣳ रथमेव तु,
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि, मनः प्रग्रहमेव च ॥३॥

अनु०—तू आत्मा को रथी जान [और] शरीर को रथ, बुद्धि को सारथि जान और मन को लगाम। [३]

सि० अ०—परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त शरीर रथ है, इन्द्रियाँ रथ के वाहक घोड़े, मन घोड़ों के खींचने के लिए लगाम, बुद्धि सारथि, और जीवात्मा रथ का स्वामी है जो उस पर आरूढ़ है। [३]

इन्द्रियाणि हयानाहुर्, विषयाꣳस् तेषु गोचरान्;
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर् मनीषिणः ॥४॥

अनु०—मनीषी इन्द्रियों को घोड़े बतलाते हैं, उन की ऐसी स्थिति में विषयों को मार्ग, और इन्द्रिय एवं मन से युक्त आत्मा को भोक्ता कहते हैं। (४)

सि० अ०—इन्द्रियों के विषय रथ हाँकने के मार्ग हैं। यही कारण है कि जीवात्मा को जो इस रथ का स्वामी और सवार है कर्मों के फल का भोक्ता कहा जाता है। [४]

यस् त्वविज्ञानवान् भवत्ययुक्तेन मनसा सदा
तस्येन्द्रियाण्यवश्यानि दुष्टाश्वा इव सारथेः ॥५॥

अनु०—जो सदा अविवेकी एवं असंयत चित्त से युक्त होता है उस की इन्द्रियाँ उसी प्रकार उस के वंश के बाहर होती है जैसे दुष्ट घोड़े सारथि के [वश के बाहर होते हैं]। (५)

सि० अ०—जिस की बुद्धि, जो रथ के सारथि के समान है, रथ हाँकने में निपुण है और [जिस का] घोड़ों को वश में रखने वाले लगाम के सदृश मन [उस रथ को] सम्यक् रूप से ले चलता है, अश्व उसी के वश में होंगे। [५]

यस् तु विज्ञानवान् भवति युक्तेन मनसा सदा
तस्येन्द्रियाणि वश्यानि सदश्वा इव सारथेः ॥६॥

अनु०—परन्तु जो विवेकवान् और सदा समाहित चित्त से युक्त होता है उस की इन्द्रियाँ उसी प्रकार वश में होती हैं जैसे सारथि के अधीन अच्छे घोड़े। (६)

सि० अ०—[वह] रथ के स्वामी और सवार अर्थात् जीवात्मा को ऐसे उच्च पद पर प्रतिष्ठित करेगा जहाँ से लौटना नहीं होता। यह साक्षात् ब्रह्मपद और परमपद है। [६][१]

यस् त्वविज्ञानवान् भवत्यमनस्कः सदाऽशुचिः
न स तत् पदमाप्नोति सꣳसारं चाधिगच्छति ॥७॥

अनु०—जो अविवेकी, असंयतचित्त, और सदा अपवित्र होता है वह उस पद को नहीं प्राप्त कर सकता, और संसार को प्राप्त होता है। (७)

यस् तु विज्ञानवान् भवति, समनस्कः, सदा शुचिः
स तु तत् पदमाप्नोति यस्माद् भूयो न जायते ॥८॥

अनु०—किन्तु जो विवेकवान्, संयतचित्त, और सदा पवित्र होता है वह तो उस पद को प्राप्त कर लेता है जहाँ से वह फिर जन्म नहीं लेता। (८)

१ सिर्रे अक्बर में मंत्र ७ और ८ पर स्वतंत्र टीका नहीं प्राप्त होती। उन का सारांश मंत्र ६ और ६ की टीका में आ गया है।

विज्ञानसारथिर् यस् तु मनः प्रग्रहवान् नरः
सोऽध्वनः पारमाप्नोति तद्विष्णोः परमं पदम् ॥९॥

अनु०--जिस पुरुष का विवेक सारथि है और मन लगाम, वह (संसृति) मार्ग के पार उस विष्णु के परम पद को प्राप्त कर लेता है।(९)

सि० अ०—यदि बुद्धि जो रथ के सारथि के समान है, अज्ञानी है, तो अश्व उस के वश में नहीं होंगे और उस परमपद को प्राप्त नहीं करायेंगे। वे अधम भूमि पर डाल देंगे जो नरक का द्वार है। [९]

इन्द्रियेभ्यः परा ह्यर्था, अर्थेभ्यश् च परं मनः,
मनसस् तु परा बुद्धिर्, बुद्धेरात्मा महान् परः[1] ॥१०॥

अनु०--इन्द्रियों से विषय उत्कृष्ट हैं और विषयों से मन; मन से बुद्धि उत्कृष्ट है और बुद्धि से महान् आत्मा (महत्तत्त्व)। (१०)

सि० अ०—परब्रह्म-पद की प्राप्ति अति कठिन और सूक्ष्म है, जिस का प्रथम आवरण इन्द्रियाँ हैं और द्वितीय आवरण महाभूत हैं, जिन से इन्द्रियों की उत्पत्ति

---

१ इस मंत्र में बुद्धि से श्रेष्ठ महानात्मा कथित है। महानात्मा का अर्थ शंकराचार्य ने महत्तत्त्व अथवा हिरण्यगर्भ किया है। इस अर्थ की पुष्टि किसी न किसी रूप में महाभारत से भी होती है। महाभारत में यह शब्द कई स्थानों पर आया है (अनुशासन पर्व १४.४१६-४१७; आश्वमेधिक पर्व ३५.४७; ४०.१-६; ४२.६१-६२; ५०.३३-३६, ५४-५५)। कहीं-कहीं तो प्रस्तुत तथा अगला मंत्र भी बहुत थोड़े पाठ-भेद के साथ आया है। यह मंत्र किंचित् पाठ-भेद के साथ गीता (३.४२) में भी आता है, जिस के अन्तिम शब्द 'सः' ('यो बुद्धेः परतस् तु सः') का अर्थ भी वस्तुतः उपनिषन्मंत्र को ध्यान में रखे बिना नहीं खुल सकता। अस्तु, गीतार्थ के विवेचन का यह स्थल नहीं है।

एक दूसरी दृष्टि से, उपनिषद् में प्रयुक्त महानात्मा शब्द का अर्थ 'अहंकार', 'काम', अथवा 'मूल वासना' भी हो सकता है। वस्तुतः महाभारत (शान्तिपर्व १७७.५२) के एक श्लोक--

'आत्मना सप्तमं कामं हत्वा शत्रुमिवोत्तमम्
प्राप्यावध्यं ब्रह्मपुरं राजेव स्यामहं सुखी॥'

के अनुसार ७ वें नम्बर पर काम का ही स्थान है। गीता के श्लोक में प्रयुक्त 'सः' शब्द से भी काम का ही अध्याहार होता है, ब्रह्म अथवा आत्मा का नहीं; क्योंकि उस के पूर्वगामी श्लोक ४१ में काम का ही वर्णन हुआ है।

हुई है। इन से उच्चतर आवरण मन है, उस से उच्चतर आवरण बुद्धि, और उस से उच्चतर आवरण हिरण्यगर्भ है जो महाभूतों का अधिष्ठान है। [१०]

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात् पुरुषः परः।
पुरुषान् न परं किंचित्,सा काष्ठा सा परा गतिः ॥११॥

अनु०--महत्तत्त्व से अव्यक्त (मूलप्रकृति) उत्कृष्ट है और अव्यक्त से पुरुष उत्कृष्ट है। पुरुष से उत्कृष्ट कुछ नहीं है। वही पराकाष्ठा है, वही परागति है। (११)

सि० अ०—उस से भी उच्चतर आवरण प्रकृति है जो गुणत्रय की साम्यावस्था है। उस से भी ऊँचा आत्मा है जो सर्वत्र व्यापक है। यही परागति और पराकाष्ठा है। उस से उच्चतर और कोई पद नहीं है।[११]

एष सर्वेषु भूतेषु गूढोऽऽत्मा न प्रकाशते।
दृश्यते त्वग्र्यया बुद्ध्या सूक्ष्मया सूक्ष्मदर्शिभिः ॥१२॥

अनु०—सम्पूर्ण भूतों में छिपा हुआ यह आत्मा प्रकाशित (व्यक्त) नहीं होता। यह तो सूक्ष्मदर्शी पुरुषों द्वारा अपनी तीव्र और सूक्ष्म बुद्धि से ही देखा जाता है। (१२)

सि० अ०—यही आत्मा हिरण्यगर्भ से ले कर तृण तक सभी महाभूतों और प्राणियों में निगूढ़ है। इसी कारण उस का स्वरूप प्रकट नहीं है। जो पुरुष सूक्ष्मदर्शी और कुशाग्रबुद्धि हैं वे उस अद्वैत तत्त्व को देखते हैं। [१२]

यच्छेद् वाङ्मनसी प्राज्ञस्, तद् यच्छेज् ज्ञान आत्मनि,
ज्ञानमात्मनि महति नियच्छेत्,तद् यच्छेच्छान्त आत्मनि ॥१३॥

अनु०--विवेकी पुरुष वाणी और मन का नियमन करे, उस (मन) को ज्ञानस्वरूप आत्मा में नियुक्त करे, ज्ञान को महत्तत्त्व में नियुक्त करे, और महत्तत्त्व को शान्त आत्मा में नियुक्त करे। (१३)

सि० अ०—पहले अपनी इन्द्रियों को एकाग्र कर के मन में लीन कर देते हैं, उस के पश्चात् मन को बुद्धि में लीन कर देते हैं, बुद्धि को जीवात्मा में लीन कर देते हैं, जीवात्मा को महान् आत्मा में लीन कर देते हैं, और महान् आत्मा को आत्मा [आत्मतत्त्व अथवा परमात्मा] में लीन कर देते हैं। [१३]

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्य वरान् निबोधत ।
क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया
दुर्गं पथस् तत् कवयो वदन्ति ॥१४॥

अनु०--उठो, जागो, सत्पुरुषों के समीप जा कर ज्ञान प्राप्त करो। तत्त्वज्ञानी लोग उस दुर्गम पथ को तीक्ष्ण और दुस्तर छुरे की धार बतलाते हैं। (१४)

सि० अ०—इस के पश्चात् यमराज बोले—प्रमाद-निद्रा, अज्ञान, और मूर्खता में फँसे हुए और सोए हुए लोगो ! जाग जाओ और प्रयत्न कर के आत्मज्ञानी सिद्ध-गुरुओं के पास जा कर आत्मज्ञान प्राप्त करो, क्योंकि उस आत्मा तक पहुँचना कठिन है और छुरे की धार से भी तेज़। उस के तेज़ होने के कारण उस पर पाँव नहीं रखा जा सकता। प्राज्ञों और ज्ञानियों ने इस मार्ग को ऐसा ही बतलाया है। [१४]

अशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययं,
तथाऽरसं, नित्यमगन्धवच् च यत्,
अनाद्यनन्तं, महतः परं, ध्रुवं;
निचाय्य तन् मृत्युमुखात् प्रमुच्यते ॥१५॥

अनु०--जो अशब्द, अस्पर्श, अरूप, अव्यय, तथा रसशून्य, नित्य, गन्धरहित, अनादि, अनन्त, महत्तत्त्व से भी महान्, और ध्रुव है उसे जान कर [पुरुष] मृत्यु के मुख से छूट जाता है। (१५)

सि० अ०—यह मार्ग उस सत्ता तक पहुँचने का है जो अशब्द है और वर्ण, ध्वनि, स्पर्श, और रंग से परे। वह अव्यय है, अरस है, नित्य है। उस में गंध नहीं है। उस का आदि और अंत नहीं है। वह बुद्धि से श्रेष्ठतर है और ध्रुव है। जो सन्मार्ग पर चल कर उस की जिज्ञासा करता है वह उसे जान लेता है और मृत्यु के मुख से छूट जाता है। [१५]

नाचिकेतमुपाख्यानं मृत्युप्रोक्तꣳ सनातनम्
उक्त्वा श्रुत्वा च मेधावी ब्रह्मलोके महीयते ॥१६॥

अनु०—मृत्यु की कही हुई नचिकेता की सनातन कथा को कह और सुन कर मेधावी [पुरुष] ब्रह्मलोक में महिमान्वित होता है। (१६)

सि० अ०—यह वार्तालाप जो यमराज और नचिकेता के बीच हुआ है सदा रहने वाला है। जो ज्ञानी पुरुष इस का प्रवचन करता है और सुनता है वह परब्रह्म को प्राप्त करके शाश्वत आनन्द में मग्न रहता है। [१६]

य इमं परमं गुह्यं श्रावयेद् ब्रह्मसंसदि
प्रयतः श्राद्धकाले वा तदानन्त्याय कल्पते,
तदानन्त्याय कल्पत इति ॥१७॥

अनु०—जो पुरुष इस परम रहस्य को संयत हो कर ब्राह्मणों की सभा में अथवा श्राद्धकाल में सुनाता है [उस का] वह [कर्म] अनन्त फल वाला होता है, अनन्त फल वाला होता है। (१७)

सि० अ०—जो अपने गुह्य और अभ्यन्तर को पवित्र कर के ब्रह्म के जिज्ञासुओं को इस गुह्य रहस्य को सुनाता है और श्राद्धकाल में अजिज्ञासुओं को भी सुनाता है वह अनन्त फल को प्राप्त करता है। [१७]

॥ इति प्रथमेऽध्याये तृतीया वल्ली ॥

॥ इति प्रथमोऽध्यायः ॥

द्वितीयोऽध्यायः

प्रथमा वल्ली

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयंभूस्,
तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद् धीरः प्रत्यगात्मानमैक्ष-
दावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन् ॥१॥

अनु०—स्वयम्भू (परमात्मा) ने इन्द्रियों को बेध कर के बहिर्मुख कर दिया है। इसी से जीव बाह्य विषयों को देखता है, अन्तरात्मा को नहीं। अमरत्व की इच्छा करते हुए चक्षु [आदि इन्द्रियों] को रोक लेने वाला कोई धीर पुरुष ही प्रत्यगात्मा को देख पाता है। (१)

सि० अ०—आत्मा को कोई नहीं देखता। इस का कारण यह है कि आत्मा ने उस की इन्द्रियों को अपनी ओर से फेर कर र्बहिमुख कर दिया है। इस कारण

वह बाह्य विषयों को देखता है और आत्मा को नहीं देखता जो कि भीतर है; क्योंकि वह स्वामी है, जो चाहता है करता है, सिवाय उस के जो परमात्मा नहीं चाहता। ज्ञानियों और धीर पुरुषों में कोई ही मोक्ष की इच्छा से अपनी इन्द्रियों को बाहर से भीतर ले जा कर आत्मा को देखता है। [१]

पराचः कामाननुयन्ति बालास्
ते मृत्योर् यन्ति विततस्य पाशम्।
अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा
ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते ॥२॥

अनु०--अल्पज्ञ पुरुष बाह्य भोगों के पीछे लगे रहते हैं। वे सर्वत्र व्याप्त मृत्यु के पाश में पड़ते हैं। किन्तु धीर पुरुष अमरत्व को ध्रुव (निश्चल) जान कर संसार के अनित्य पदार्थों में से किसी की इच्छा नहीं करते। (२)

सि० अ०—बालबुद्धि अज्ञानी बाह्य विषयों में फँस जाते हैं। इस कारण वे महामृत्यु के पाश में फँस जाते हैं जो उन्हें सर्वत्र आबद्ध करता है, और वे उस से बाहर नहीं निकल पाते। यही कारण है कि ज्ञानी पुरुष अमर और ध्रुव तत्त्व को जान कर नश्वर वस्तुओं की आकांक्षा नहीं करते। [२]

येन रूपं, रसं, गन्धं, शब्दान्,स्पर्शांश्च्, च, मैथुनान्
एतेनैव विजानाति, किमत्र परिशिष्यते ? एतद् वै तत् ॥३॥

अनु०--जिस इस [आत्मा] के द्वारा मनुष्य रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श, और मैथुनजन्य सुखों का अनुभव करता है उस [आत्मा] से इस लोक में और क्या बचता है? [तुझ नचिकेता का पूछा हुआ] वह [तत्त्व] निश्चय यही है। (३)

सि० अ०—वह जो इस शरीर में इन्द्रियों का प्रेरक है, रूप, रस, और गंध का अनुग्राहक है, शब्द का श्रोता, स्प्रष्टा, और मैथुन के आनन्द का भोक्ता है जीवात्मा है। प्रत्येक इन्द्रिय अपना नियत कार्य करती है, वह दूसरा कार्य नहीं कर सकती। यह इसी से जाना जाता है कि आत्मा शरीर से पृथक् है और सब का प्रेरक है। यह जीवात्मा आत्मा है। [३]

स्वप्नान्तं जागरितान्तं चोभौ येनानुपश्यति,
महान्तं विभुमात्मानं मत्वा धीरो न शोचति ॥४॥

अनु०--जिस के द्वारा मनुष्य स्वप्न के विषयभूत और जाग्रत् के विषयभूत, दोनों प्रकार के पदार्थों को देखता है उस महान् और विभु आत्मा को जान कर धीर पुरुष शोक नहीं करता। (४)

सि० अ०—वह जो स्वप्न में देखता है, जागरण में देखता है, वह महान् और विभु है। धीर पुरुष उस की खोज कर के दुःख से छूट जाते हैं। [४]

य इमं मध्वदं[1] वेद आत्मानं जीवमन्तिकात्
ईशानं भूतभव्यस्य, न ततो विजुगुप्सते। एतद् वै तत् ॥५॥

अनु०--जो पुरुष इस कर्मफलभोक्ता, भूत-भविष्य के शासक, आत्मा को निकट से जानता है निश्चय यही वह [आत्मतत्त्व] है। (५)

सि० अ०—जो कोई इस जीवात्मा को, जो कि निकटतर है और कर्म के फलों का भोक्ता है, भूत, वर्तमान, और भविष्य के शासक के रूप में जानता है, उस क्षण में मनुष्यों का भय तथा सभी भय छूट जाते हैं। क्या जाना? कि यह जीवात्मा वही आत्मा है। [५]

यः पूर्वं तपसो जातमद्भ्यः पूर्वमजायत
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तं यो भूतेभिर् व्यपश्यत। एतद् वै तत्[2] ॥६॥

अनु०--जो पूर्वकाल में तप से उत्पन्न हुआ वह जल [आदि भूतों] से पूर्व उत्पन्न हुआ था। जो प्राणियों की [बुद्धिरूप] गुहा में स्थित हो कर देखता है, निश्चय यही वह है। (६)

सि० अ०—स्रष्टा, जिस की प्रथम सृष्टि हिरण्यगर्भ है और जो सभी प्राणियों के हृदय की गुहा में विराजमान है, महाभूतों से आच्छन्न होने के कारण दृष्टिगोचर नहीं होता। यह बद्ध पुरुष वही आत्मा है, यह प्रछन्न पुरुष वही आत्मा है। [६]

---

१ 'मध्वदः' शब्द ऋग्वेद (१.१६४.२२) में भी प्रयुक्त हुआ है। यहाँ इस का अर्थ है 'मधु+अदः'=जल का शोषण करने वाला। यह 'सुपर्णाः' (अर्थात् किरणों) के विशेषण के रूप में आया है। उपनिषद् में उस के अर्थ का किंचित् विस्तार हो कर उस का तात्पर्य 'भोक्ता' हो गया है।

२ इस मंत्र का पाठ किंचित् भ्रष्ट प्रतीत होता है।

या प्राणेन संभवत्यदितिर् देवतामयी
गुहां प्रविश्य तिष्ठन्तीं या भूतेभिर् व्यजायत। एतद् वै तत्[1] ॥७॥

अनु०--जो देवतामयी अदिति प्राण से प्रकट होती है तथा जो [बुद्धिरूप] गुहा में प्रविष्ट हो कर रहने वाली और भूतों के साथ ही उत्पन्न हुई है, निश्चय यही वह है। (७)

सि० अ०—ब्रह्म जो साक्षात् हिरण्यगर्भ बन कर सम्पूर्ण सृष्टि के रूप में प्रकट हुआ है, जिस में सभी देवता और इन्द्रियों के देव विद्यमान हैं, जो सभी ऐन्द्रिय विषयों का भोक्ता है, और जो हृदय की गुहा में निवास करता है, वह सभी प्रकार के महाभूत हो कर स्थित है। यह वही आत्मा है। [७]

अरण्योर् निहितो जातवेदा गर्भ इव सुभृतो गर्भिणीभिः,
दिवे दिव ईड्यो जागृवद्भिर् हविष्मद्भिर् मनुष्येभिरग्निः।
एतद् वै तत्[2] ॥८॥

अनु०--गर्भिणी स्त्रियों द्वारा भली प्रकार पोषित गर्भ के समान जातवेदा (अग्नि) दोनों अरणियों के बीच में स्थित है और प्रमाद-शून्य तथा होमसामग्री-युक्त पुरुषों द्वारा नित्यप्रति स्तुति किये जाने योग्य है। यही वह है। (८)

सि० अ०—जो काष्ठ में निहित है और जिस पर देवता सावधान दृष्टि रखते हैं वह गर्भ के समान है जो पेट में छिपा होता है और जिस पर गर्भिणी सावधान दृष्टि रखती है। विद्वान् ब्राह्मण प्रतिदिन हवनकाल में अग्नि की स्तुति करते हैं। यह अग्नि वही आत्मा है। [८]

यतश् चोदेति सूर्योऽस्तं यत्र च गच्छति
तं देवाः सर्वे अर्पितास् तदु नात्येति कश्चन। एतद् वै तत् ॥९॥

अनु०--जहाँ से सूर्य उदित होता है और जहाँ वह अस्त हो जाता है उस में सम्पूर्ण देवता अर्पित हैं। उस का कोई भी उल्लंघन नहीं कर सकता। यही वह है। (९)

---

१ इस मंत्र का पाठ किंचित् भ्रष्ट प्रतीत होता है।

२ यह मंत्र किंचित् पाठ-भेद के साथ ऋग्वेद (३.२९.२) में भी आता है।

सि० अ०—सूर्य, जिस से देवता सम्बद्ध हैं, उन अरों के समान है जो रथ की नाभि में सुदृढ़ हैं। जिस स्थान से वह उदित होता है और जिस स्थान में वह अस्त होता है उस स्थान से आगे कोई नहीं जा सकता। वह स्थान यही आत्मा है। [९]

यदेवेह तदमुत्र यदमुत्र तदन्विह ।
मृत्योः स मृत्युमाप्नोति य इह नानेव पश्यति ॥१०॥

अनु०–जो [तत्त्व] यहाँ है वही वहाँ है और जो वहाँ है वही यहाँ है। जो विश्व को नाना रूप में देखता है वह मृत्यु से मृत्यु को [अर्थात् जन्म-मरण को] प्राप्त होता है। (१०)

सि० अ०—जीवात्मा जो अन्तःकरण में प्रतिष्ठित है, यही आत्मा है जो सत् है, चिद्रूप है, और आनन्दस्वरूप है। और आत्मा जो सत् है, चिद्रूप है, और आनन्द-स्वरूप है, यही जीवात्मा है जो अन्तःकरण में विद्यमान है। जो कोई इस आत्मा को पृथक् देखेगा, वह जिस लोक में भी जायगा वहाँ मृत्यु के हाथ से छुटकारा नहीं प्राप्त करेगा। [१०]

मनसैवेदमाप्तव्यं, नेह नानाऽस्ति किंचन ।
मृत्योः स मृत्युं गच्छति य इह नानेव पश्यति ॥११॥

अनु०–मन से ही यह तत्त्व प्राप्त करने योग्य है, इस में नाना है ही नहीं। जो इसे नाना रूप में देखता है वह मृत्यु से मृत्यु को जाता है। (११)

सि० अ०—होना यह चाहिए कि सदा अपने मन में यह चिन्तन करता रहे कि मैं वह हूँ, कि जीवात्मा आत्मा है, कि भेद कुछ नहीं है, और कि जो कोई मुझे और उसे भिन्न जानेगा वह जिस लोक में भी जाय उसे मृत्यु के हाथ से छुटकारा नहीं। [११]

अंगुष्ठमात्रः पुरुषो मध्य आत्मनि तिष्ठति
ईशानो भूतभव्यस्य न ततो विजुगुप्सते। एतद् वै तत् ॥१२॥

अनु०–अंगुष्ठपरिमाण, भूत और भविष्य का शासक पुरुष शरीर के मध्य में स्थित है। निश्चय यही वह है। (१२)

सि० अ०—जो कोई उस ज्योति को, जो हृदय के मध्य पुरुष के अंगुष्ठ के बराबर निहित है, भूत, वर्तमान, और भविष्य का स्वामी जानता है, वह सभी भयों से मुक्त हो जाता है और उसे प्राण का भी भय नहीं होता। यह वही आत्मा है। [१२]

नीयितु चॅय्यांय्किल् ञ्ञान् शपिप्पान् निरूपिच्चु
पोयालुमिनित्तव नल्लतु वन्नुकूटुम् । ९७
आचार्यपत्नितन्नोटाशियुं परिग्रहि-
च्चाचार्यपादांबुजमादराल् वणङ्ङिनान् । ९८
वृत्तान्तमॅल्लां केट्टु विस्मयं पूण्टु वैदन्-
पॉल्त्तळिरटि कूप्पिच्चोदिच्चानुदङ्कनुम् । ९९
वॅळ्ळक्काळयुमेऱिक्काणायितॉरुत्तनॅ
चॉल्लिनानवनॅन्नोटशिप्पान् वृषमलम् । १००
निन्नुटॅ गुरुवितु भक्षिच्चितॅन्नु चॉन्ना-
नॅन्नतु केट्टु ञ्ञानुं भक्षिच्चेनतिन्मलम् । १०१
ऍन्ततिन्फलमॅन्तुमारवनॅन्तुमॅल्लां
निन्तिरुवटियरुळ्चॅय्यणमॅन्नोटिप्पोळ् । १०२
नागलोकत्तु चॅन्ननेरत्तु कण्टू पिन्नॅ
वेगत्तिलारु कुमारन्माराल् भ्रमिप्पिक्कुं १०३
चक्रवुं तेजोमयमायॉरु कुतिरयुं
तल्कण्ठदेशे पुनरॅत्रयुं तेजस्सोटुं १०४
दिव्यनायिरिप्पोरु पुरुषश्रेष्ठनेयुं ।
सर्व्ववुमिवटिन्टॅ तत्त्वङ्ङळरुळ्चॅय्क । १०५

गये और उन्होंने गुरुपत्नी को दक्षिणा अर्पण की। गुरुपत्नी प्रसन्न होकर शिष्य से बोली—पुरुषों में तुम सचमुच रत्न हो। तुम यह काम न करते तो मैं शाप देनेवाली थी। अब तुम जा सकते हो, अब तुम्हारा भला ही होगा। उदंक ने आचार्यपत्नी से आशीर्वाद पाया और आदर के साथ आचार्य-चरणों की वन्दना की। ९०-९८ सब वृत्तान्त सुनकर गुरु वैद विस्मित हुए और उनके चरणों में प्रणाम कर उदंक ने पूछा—मार्ग में श्वेत वृषभ पर बैठा हुआ एक पुरुष मुझको दिखाई दिया। उसने मुझसे वृषभ का गोबर खाने के लिए कहा। यह भी कहा कि तुम्हारे गुरु ने भी इसे खाया है। यह सुनकर मैंने भी गोबर खा लिया। उसका फल क्या है? और वह पुरुष कौन था? यह सब कृपया गुरुचरण अब मुझे बता दें। जब मैं नागलोक गया तब वहाँ मैंने छः कुमारों द्वारा घुमाया जाने वाला एक चक्र, एक तेजस्वी घोड़ा और उसकी पीठ पर बैठा हुआ एक

वेदवेदाङ्गज्ञनां वैदनुमतुकेट्टु
सादरमुदङ्कनां शिष्यनोटरुळ्चॅय्तान् । १०६
धवळमयमाय वृषभमैरावतं
विबुधेश्वरन् मलमशिप्पान् चॉल्लियतुं १०७
अमृतमतिन्मलमतु सेविप्पोर्क्कॅन्नु-
ममरत्ववुं वरुमिन्द्रनॅन्नुटॅ सखि १०८
पाताळं पुक्कनेरं बाधकळ् वराञ्ञतुं
वासवदेवननुग्रहत्तालरिञ्ञालुम् । १०९
षळ्क्कुमारन्मार् तिरिच्चीराऱस्त्रङ्ङळोटु-
मुग्रमाय्काणायतु वत्सरचक्रमॅटो । ११०
अश्वमायतुमग्नि निन्नॅयिङ्ङाक्कियतुं
निश्चयमरिकॅक्काणायतु पर्ज्जन्यनुम् १११
अद्भुतमॅत्रयुं नी साधिच्चतरिञ्ञालुं ।
सत्पुरुषन्मारिल् नी मुन्पनाय् वरिकॅन्नान् । ११२
अक्कालमुदङ्कनुं तक्षकन्तन्नॅक्कॉल्वान्
उळ्क्कान्पिल् निरूपिच्चु कल्पिच्चानुपायवुम् । ११३

अत्यन्त तेजस्वी दिव्य पुरुषश्रेष्ठ देखा। इन सबके तत्त्व कृपया बतला दीजिए। ९९-१०५ यह सुनकर वेद और वेदांगों के विद्वान् वैद मुनि ने अपने शिष्य उदंक से सादर कहा—जो श्वेत वृषभ (बैल) था वह ऐरावत (इन्द्र का हाथी) था, जिसने गोबर खाने को कहा वह स्वयं विबुधेश्वर (इन्द्र) थे। और वृषभ का गोबर तो अमृत ही था जिसे सेवन करने वालों को सदा के लिए अमरत्व प्राप्त होता है। इन्द्र मेरे सखा हैं। पाताल में जो तुम्हें कोई वाधा नहीं हुई सो जान लो कि वासव (इन्द्र) के अनुग्रह का परिणाम था। जो छः कुमारों द्वारा छः अस्त्रों के साथ घुमाया जाता हुआ दिखाई दिया वह वत्सर-चक्र था। जो घोड़ा तुम्हें यहाँ लाया वह अग्नि था। जो निकट में दिखाई दिया वह निःसन्देह पर्जन्य (इन्द्र) था। तुम जान लो कि तुमने अद्भुत काम किया है और सत्पुरुषों में तुम अग्रणी हो जाओ। १०६-११२ उन दिनों उदंक ने तक्षक को मारने के लिए अपने मन में निश्चय किया और उपाय भी ठान लिया। जब राजा जनमेजय कुरुक्षेत्र में मुनियों के साथ यज्ञ कर रहे थे, तब

जनमेजय नृपन् कुरुक्षेत्रत्तिङ्कन्नु
मुनिमारोटुमॉरु यागं चॅय्युन्न कालं ११४
पुक्कितु कुरुक्षेत्रमुदङ्कन् नृपतियुं
सत्करिच्चर्घ्यादिकळ् नल्कियोरनन्तरं । ११५
उत्तममॅत्रयुं नी चॅय्युन्न यागमिति-
लुत्तममायिट्टुण्टु ञानॉन्नु चॉल्लीटुन्नु । ११६
वल्लातॆ जनकनॅक्कॉन्न तक्षकन्तन्नॆ
कॉल्लुवानुत्साहं चॅय्तीटुकिलितिन्मीतॆ । ११७
नल्लतिल्लेतुमितु चॉल्लुवनरिञ्ञालुम् । ११८
तापसबालकन्टॆ शापं प्रामाण्यमाक्कि
भूपतिप्रवरनॆ कॉल्लुवान् काश्यपनॆ ११९
तट्टुत्तु परीक्षिच्चु पट्टुत्वमोट्टु पेराल्
कटिच्चु दहिप्पिच्चु तळ्प्पिच्चितु मुनि । १२०
कॉटुत्तु रत्नादिकळ् तक्षकन् काश्यपनु
नटिच्चु कटिच्चतिनॅन्तु कारणमोर्त्ताल् । १२१
ऑट्टुक्कीटेणमवन्तन्नॆयॅन्नुदङ्कनु-
मट्टुप्पमोट्टु परञ्ञुरप्पिच्चतुनेरं १२२

उदंक कुरुक्षेत्र गये। नृपति ने उनके सत्कार में अर्घ्यादि भेंट किया। तदनन्तर (उदंक ने कहा—) जो याग कर रहे हो वह उत्तम है। इससे भी बढ़कर एक प्रयोग है जो मैं तुम्हें बताऊँगा। अगर तुम तक्षक का वध करने के लिए, जिसने तुम्हारे पिता को मारा है, उत्साही हो जाओगे तो इससे बढ़कर कोई अच्छी बात नहीं होगी। ११३-११७ इतना मैं कहता हूँ। तुम जान लो। तापस बालक के शाप को प्रामाण्य मानकर भूपति प्रवर (परीक्षित्) को मारने के [उद्देश्य की पूर्त्ति के] लिए तक्षक ने मुनि काश्यप को रोका[1], और अपनी परीक्षा देने के लिए एक बड़े वटवृक्ष को काटकर जला दिया। पर मुनि ने उसको फिर जीवित कर दिया। तब (तक्षक ने) काश्यप को रत्न आदि प्रदान किया। विचार किया जाय तो इस प्रकार बुद्धिपूर्वक उसको (परीक्षित को) का काटने कारण ही क्या है? उसको समाप्त ही करना चाहिए। जब उदंक ने इस प्रकार निकट

१ तक्षक के पिता काश्यप, राजा परीक्षित् की रक्षा के लिए जा रहे थे।

मन्त्रिकळोट्टुकूटॅ मन्त्रिच्चु नृपतियुं
चिन्तिच्चु मुनिमारॅ वरुत्तियुरचॅय्तु । १२३
तक्षकन्तन्नॅक्कॉल्वान्तक्कॉरु यागं चॅय्वान्
तल्क्षणं तुटङ्ङिनार् सर्प्पसत्रवुमवर् । १२४
कारणमितु सर्प्पसत्रत्तिनॅन्नु सूत-
नारणरॉट्टु परञ्ञीटिनोरनन्तरं । १२५
इक्कथाशेषं चॉल्वान् पिन्नॅयामॅन्ने वेण्टु ।
मुख्यमां भृगुवंशं चॉल्लणमितिन्मुन्पे १२६
नम्मुटॅ गुरुभूतन्मारवरवरुटॅ
जन्मादिगुणङ्ङळॅच्चॉल्लणं मटियातॅ । १२७

भृगुकुलविस्तारम्

सूतनुमतुनेरं चॉल्लिनानवरोट्टु
वेधाविन्मकन् भृगु भृगुजन् च्यवननुं । १
च्यवननुटॅ मकन् प्रमति मुनिवरन-
वनुं घृताचियिलुण्टायि रुरुनामा २
मट्टुमुण्टॉरु पुत्रन् शुनकनॅन्नु नामं
कुट्टमिल्लात मुनि शौनकनवन्मकन् । ३

से समझाया तब नृपति (जनमेजय) ने अपने मन्त्रियों से सलाह की और सोंचकर मुनियों को बुलाया, ११८-१२३ और उनसे तक्षक का नाश करने योग्य याग के अनुष्ठान के लिए कहा। तत्काल ही उन्होंने एक सर्पसत्र प्रारम्भ किया। सूतजी (संजय) ने ब्राह्मणों से कहा—"सर्पसत्र कराने का यही कारण है"। इस कथा का शेष बाद में ही कहा जा सकता है। इससे पहले भृगुवंश की उत्पत्ति बतलाना चाहिए। अपने पूर्वज गुरुओं के जन्म आदि धर्मों को बिना संकोच के बतलाना चाहिए। १२४-१२७

भृगुकुल का विस्तार

तब सूतजी ने उनसे कहा—वेधा (ब्रह्मा) का पुत्र है भृगु, भृगु का पुत्र च्यवन, च्यवन का पुत्र है प्रमति जो मुनियों में श्रेष्ठ है। उसके द्वारा घृताची [के गर्भ] में रुरु नामक पुत्र हुआ। एक और पुत्र का नाम है

इत्थं चॉन्नतुनेरं तापसनरुळ्चॅय्तु
विस्तराल् चॉल्लीटणं च्यवनोल्भवमॅल्लाम् । ४

च्यवनोल्भववुं वह्निशापवुम् ।

ऍङ्किलो पुलोमाख्यभृगुपत्नियुं गर्भं
भंगियिल् धरिच्चिरिक्कुन्नॉरु कालत्तिङ्कल् १
चॅन्नितु पुलोमाख्यनाय राक्षसनप्पोळ्
नन्नाकॅन्नतिथिपूजकळुं चॅय्ताळवळ् । २
भृगुपत्नियॅक्कण्टु राक्षसप्रवरनुं
मकरध्वजपरवशनायतुनेरं ३
कुण्डत्तिलॅरियुन्न पावकन्तन्नॅक्कण्टु
वन्दिच्चु चोदिच्चितु राक्षसप्रवरनुम् । ४
अखिलसुरवृन्दमुखमाकिय पोट्टि !
निखिलशुभाशुभकर्म्मसाक्षियुं नीये । ५
तन्वंगियाकुमिवळ् भृगुविन् पत्नियॅङ्कि-
लॅन्नॉट्टु परमार्त्थमरुळिच्चॅय्तीटणम् । ६

शुनक और उसके निर्दोष सुत का नाम है शौनक। जब इस प्रकार कहा गया तब तापस (उदंक) ने कहा—च्यवनोद्भव आदि कथा विस्तार से कह दीजिए। १-४

च्यवन-उत्पत्ति और अग्नि-शाप

अतीत में जब भृगुपत्नी पुलोमा चारु रूप से गर्भ धारण करती थी तब पुलोम नामक राक्षस वहाँ गया और पुलोमा ने अच्छी तरह से [उसकी] अतिथिपूजा की। भृगुपत्नी को देखकर राक्षसप्रवर मकरध्वज (मदन) के वश में आ गया और उस समय कुण्ड में जो अग्नि जल रही थी उसकी वन्दना करके राक्षस ने उससे पूँछा—समस्तदेवगणों का मुखभूत हे नाथ! तुम ही सभी शुभ और अशुभ कर्मों के साक्षी हो। अगर यह तन्वंगी[1] भृगु की पत्नी है, तो तुम मुझसे कृपया परमार्थ बतला दो। १-६ तब शोभावाले भगवान अग्नि ने निवेदन किया कि भृगु की

१ दुबले-पतले शरीर वाली।

तापसि भृगुपत्नियायतुमिवळॅन्नु
शोभतेटीट्टुमग्निभगवानरुळ्चॅय्तु । ७
ञ्ञानिवळ्तन्नॅ वेळ्प्पान् भाविच्चुवाळुंकालं
आयतिन्मुन्पे भृगु वेट्टुकॉण्टतुमूलं । ८
कॉण्टुपोकुन्नेनॅन्नु सूकरवेषं कैक्को-
ण्टन्नवनवळॅयुमॅट्टुत्तु नटकॉण्टु । ९
गर्भपात्रस्थनायोरर्भकनतुनेर-
मुल्भविच्चवन्तन्नॅ नोक्किनान् कोपत्तोटॅ । १०
नेत्राग्नितन्निल् दहिच्चीटिनान् निशाचरन् ।
मार्त्ताण्डसमनाय पुत्रनॅयॅट्टुत्तवळ् ११
त्रस्तयाय् वीर्त्तुवीर्त्तु करञ्ञुकरञ्ञुळ्ळिल्
चीर्त्तवेदनयोटुमाश्रमत्तिङ्कल् चॅन्नाळ् । १२
अश्रुक्कळ् वीणु वसुधरयॅन्नॉरु नदि
विश्रुतमाय तीर्त्थमुण्टायितु कालम् । १३
वन्नॉरु भृगुमुनि वृत्तान्तमॅल्लां केट्टु
तन्नुटॅ पत्नियोटु पिन्नॅयुं चोद्यं चॅय्तान् । १४
निन्नॅयिन्नवळॅन्नु चॉन्नतारवनोटु
निन्नॅ राक्षसनरिवानवकाशमिल्ल । १५

पत्नी यही तापसी है। (राक्षस के कहा)—मैं उससे विवाह करने को सोंच ही रहा था पर उससे पहले ही भृगु ने उससे विवाह कर लिया। इसलिए मैं उसे ले जा रहा हूँ।—यह कहकर सूकर का वेष धारण करके वह उसे लेकर चल पड़ा। उस समय गर्भाशय में जो बालक था वह पैदा हुआ और क्रोध के साथ उसने राक्षस को देखा। वह बालक के नेत्राग्नि से जल कर भस्म हो गया। त्रस्त होकर बार-बार उष्ण निश्वास लेती हुई और रोती हुई माता अपने मार्तण्ड (सूर्य) के समान पुत्र को लेकर बड़े दुःख के साथ आश्रम पहुँची। ७-१२ तब उसकी आँसुओं की एक वसुधरा नामक नदी बन गयी जो कालान्तर में एक विख्यात तीर्थ हो गया। उस समय भृगुमुनि आगये। सब वृत्तान्त सुनकर उन्होंने अपनी पत्नी से पूँछा—उससे किसने कहा कि तुम कौन हो? राक्षस को तुम्हें जानने का कोइ अधिकार ही नहीं है। तुम्हारे तत्त्व को राक्षस से जिसने

निन्नुटँ परमार्त्थँ राक्षसनोटु नेरे
चॉन्नवन्तन्नॅश्शपिच्चीटुवन् नेरे चॉल नी १६
तन्नुटँ भर्त्तावित्थं चॉन्नतु केट्टु चॉन्नाळ्
वह्नि राक्षसनोटु परञ्ञु काॅटुत्ततुम् । १७
क्रुद्धनायग्नितन्नॅश्शपिच्चु भृगुमुनि
शुद्धियुमशुद्धियुं भेदमँन्नियॆ भवान् १८
सर्व्ववुं भक्षिच्चुपोकॅन्नतु केट्टनेरं
हव्यवाहनन् तानुं भृगुविनोटु चॉन्नान् । १९
अन्यायमत्रे भवानिन्नॅन्नॅश्शपिच्चतु
निर्ण्णयं नरकमुण्टसत्यं चॉल्लीटुकिल् । २०
सत्यत्तॅयुपेक्षचॅय्तसत्यं चॉल्लुन्नवन्-
पुत्रसन्ततिकळ्क्कुमिल्लॉरुनाळुं गति । २१
तानरिञ्ञतु परयाय्किलुं दोषमुण्टु
ञानिवयरिञ्ञत्रे परञ्ञु महामुने ! २२
ऍन्निवयरियाते कोपेन शपिच्चतु
नन्नल्ल निन्नॅक्कूटिश्शपिक्कामिनिक्कॅटो ! २३
विप्रन्मारोटु विरोधं तुटङ्ङरुतॅन्नु
कल्पिच्चु शमिक्कुन्नेनॅन्नु नीयरियेणम् । २४

सीधे कह दिया उसको मैं शाप दूंगा। अतः जल्दी बतलाओ।—पति की यह बात सुनकर उसने कहा—अग्नि ने ही राक्षस को बतला दिया। तब क्रुद्ध होकर भृगुमुनि ने अग्नि को शाप दिया कि शुद्ध और अशुद्ध का भेद न करके तुम सभी वस्तुओं को खाते जाओ। यह सुनकर हव्यवाहन (अग्नि) ने भृगु से कहा—यह अन्याय है कि तुमने आज मुझको शाप दिया है। असत्य बोलने का फल अवश्य नरक ही होगा। सत्य की उपेक्षा करके जो असत्य बोले उसके पुत्र-सन्तान आदिकों की कभी अच्छी गति न होगी। अपनी जानी हुई बात को न कहने में भी दोष है। यह सब सोचकर ही मैंने बतला दिया मुनि जी ! । १८-२२
यह सब न जानकर तुमने जो शाप दिया सो ठीक नहीं है। मैं भी तुम्हें शाप दे सकता हूँ। परन्तु जान लो कि यह सोचकर कि ब्राह्मणों से विरोध करना उचित नहीं होगा, मैं शान्त हो रहा हूँ। पितृ और

ञानत्ते पितृदेवादिकळॅ सङ्कल्पिच्चु
मानवन्मार् चॅय्तीटुं कर्म्मङ्ङळ्क्काधारवुं । २५
ञानत्ते देवन्मार्क्कु मुखमायीटुन्नतुं
ञानत्ते वेदोक्तमां कर्म्मङ्ङळ्क्काधारवुं । २६
ञानत्ते सर्व्वलोकव्याप्तनायीटुन्नतुं
ज्ञानिकळुळ्ळिलुळ्ळोरज्ञानं दहिप्पतुं । २७
ञानत्ते सर्वसाक्षिभूतनायीटुन्नतुं
ञानत्ते जन्तुक्कळॅ सृष्टिक्कुन्नतुं नित्यं २८
ञानत्ते जन्तुक्कळॅ वर्द्धिप्पिच्चीटुन्नतुं
ञानत्ते जन्तुक्कळॅ रक्षिक्कुन्नतु नित्यं २९
ञानत्ते जन्तुक्कळॅ भक्षिक्कुन्नतुमॅटो !
ञानत्ते सर्वौषधरसमुण्टाक्कुन्नतु- ३०
मक्षरकर्म्मादिकळ्क्काद्ध्यक्ष्यमिनिक्कत्ते
मुख्यदेवतापूजय्कॉक्क मुन्पॅनिक्कत्ते ३१
अज्ञानमुण्टाकरुतॅनिक्कु निन्नॅप्पोलॅ ।
विज्ञानस्वरूपन् ञानॅन्नतोर्त्तङ्ङटङ्ङुन्नेन् । ३२
नल्लतु शममत्ते नल्लवर्क्कॅल्लावर्क्कुम् ।
कल्याणमितिलपरमिल्लॅन्नु वह्निदेवन् ३३

देवों का संकल्प करके मनुष्यों के किए कर्मों का मैं ही आधार हूँ । देवों का मुख बननेवाला मैं ही हूँ, वेद के प्रतिपादित कर्मों का मैं ही आधार हूँ, सभी लोगों में व्याप्त होनेवाला मैं ही हूँ, ज्ञानियों के अन्दर का अज्ञान जला देनेवाला भी मैं ही हूँ। सभी का साक्षी बननेवाला मैं ही हूँ, नित्य जन्तुओं की सृष्टि करनेवाला मैं ही हूँ, जन्तुओं को बढ़ानेवाला मैं हूँ, जन्तुओं की रक्षा करनेवाला मैं हूँ और जन्तुओं का भक्षण करनेवाला भी मैं ही हूँ। सभी औषधों का रस बनानेवाला मैं ही हूँ, अक्षर कर्मों का आध्यक्ष्य[1] भी मैं ही सँभालता हूँ, मुख्य देवता की पूजा के पहले मेरी ही पूजा होती है। [इसलिए] तुम्हारे जैसा मैं भी अज्ञान प्रकट करूँ यह उचित नहीं। मैं विज्ञानस्वरूप हूँ। क्योंकि सज्जनों के लिए शम ही अच्छा है, इससे बढ़कर कल्याण करनेवाला और कुछ नहीं है ।—इतना कहकर वह्निदेव[2] तिरोहित[3] हो गये । यह देखकर

१ वेद में विहित नाशरहित कर्मों की अध्यक्षता २ अग्निदेव ३ अन्तर्द्धान ।

शान्तनाय् मऽन्ञातु कण्टॉरु मऽयोरुं ।
शान्तचित्तन्माराय मामुनिजनङ्ङळुं ३४
आवर्तॅन्तिनियॅन्तु तन्नुळ्ळिल् निरूपिच्चु
देवकळोटु चॉन्नारुण्टाय विशेषङ्ङळ् । ३५
अग्नितन्नभावत्ताल् मऽन्ञु कर्म्मङ्ङळुं
मग्नमायितु लोकमापदांबुधितन्निल् । ३६
सृष्टिकर्त्तावायीटुं ब्रह्मनोटिवयॅल्ला-
मॉट्टुं वैकातॅ चॅन्नङ्ङुर्णत्तिक्कयुं वेणं । ३७
कष्टमॅन्तितिनॉरु कारणमऽिञ्ञिल्ल
नष्टमायिटुमिप्पोळल्लाय्किल् प्रपञ्चवुं । ३८
पॅट्टॅन्नु देवादिकळतु केट्टनन्तरं
क्लिष्टमानसन्माराय् सत्यलोकवुं पुक्कार् ।
शिष्टन्माराकुं मुनिमारुं निर्ज्जरन्मारुं ३९
स्पष्टवर्णोद्यल्स्तुति नमस्कारादि परि-
तुष्टनायीटुं जगत्स्रष्टाविनोटु चॉन्नार् । ४०
उण्टाय विशेषं केट्टग्नियॅ विधातावुं
कॉण्टाटि विळिच्चरुळिच्चॅय्तानतुनेरं । ४१
ऑन्निलुं भवज्ज्वाल तट्टियालशुद्धियि-
ल्लॉन्तुकॉण्टुमे भवानशुद्धमुण्टाय्वरा । ४२

ब्राह्मण और शान्तात्मा महामुनि सोचने लगे अब क्या होगा ? उसके बाद वे सब देवों के पास गये और उनसे सारा वृत्तान्त बतला दिया । अग्नि के अभाव के कारण सारा कर्मकाण्ड समाप्त हो गया और जगत् विपत्तिसागर में डूब गया । ३०-३६ सृष्टि के कर्त्ता जो ब्रह्मा हैं उनसे जाकर विना विलम्ब के इन सब बातों को कहना चाहिए । नहीं तो यह सारा प्रपञ्च नष्ट हो जायगा । पता ही नहीं चल रहा है कि इसका क्या कारण है । यह बात सुनते ही देव सब दुखी हो गये और तुरन्त सत्यलोक चले गये । तब शिष्ट मुनिजन और देवगण की स्पष्टवर्णबद्ध स्तुतियों और नमस्कारों से परितुष्ट जगत्स्रष्टा (ब्रह्मा) से सभी वृत्तान्त कहे गये । इस वार्ता को सुनकर विधाता ने अग्नि को बुलाकर सत्कार किया और कहा । जिसमें भी आपकी ज्वाला का स्पर्श हो जाय वह

भास्कररश्मिकळ् चॅन्नॅन्तॅल्लां तॉट्टुमॅन्ना-
लोकर्कुन्पोळ् तॉट्ट वस्तु शुद्धमाय् वरुमत्रे । ४३
अज्ञानिकळॅप्पोलॅ खेदिप्पानॅन्तु भवान्
सुज्ञानिजनङ्ङळोटॉन्नुं पट्टुकयिल्ल । ४४
सर्व्ववुं भक्षिच्चालुमिल्लशुद्धतयॅटो
हव्यवाहननाकुं निनक्कॅन्तरिकॅटो ! ४५
पावकन् दुःखं तीर्न्नु देवकळोटुं कूटि-
प्पावनन्मारां मुनिमारुमाय् वसिच्चितु । ४६
लोकवुं तॅळिञ्ञितु तापसवरन्मारॅ !
शोकनाशनत्तिन्नु चॉल्लीटां कथयिन्नुम् । ४७

रुरुमुनियुटॅ अर्द्धायुर्द्दानवुं विवाहवुम् ।

च्यवननॅन्नु गर्भच्यवनत्वेन नाम-
मवनु भविच्चितु तत्सुतन् प्रमतिक्कु १
भुवनमनोहरियाकिय घृताचियिल्
तपसांनिधियाय रुरुनामावुण्टायान् । २

अशुद्ध नहीं हो सकती । फिर आपकी तो किसी भी प्रकार अशुद्धि सम्भव नहीं । ३७-४२ सूर्य के किरण जिस पदार्थ का भी स्पर्श करें वह पदार्थ, विचार किया जाय, तो शुद्ध ही हो जाता है। इसलिए आप अज्ञानियों की तरह क्यों खेद कर रहे हैं ? जो ज्ञानवान लोग हैं उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा । जिस वस्तु का भी आप भक्षण करलें, आप हव्यवाहन को कोई अशुद्धि नहीं होगी, यह जान लीजिए । भगवान् पावक (अग्नि) का दुःख समाप्त हुआ और देवों और पावन मुनियों के साथ सुख से रहने लगे । अब शोक के नाश के लिए आज और कथा सुनाऊँगा । ४३-४७

मुनि रुरु का अर्द्धायुर्दान और विवाह

गर्भ का च्यवन (पात) होने के कारण बालक का नाम च्यवन पड़ा । उसके पुत्र प्रमति द्वारा सारे भुवन की मनोहारिणी घृताची से रुरु नामक तपोनिधि पुत्र का जन्म हुआ । उन दिनों विश्वावसु के बीज के द्वारा सुलोचना मेनका ने तपोधन ऋषि के आश्रम में एक कन्यारत्न

अक्कालं विश्वावसुतन्नुटॆ बीजंकॊण्टु
मैक्कण्णि मेनकयुं पॆट्टितु कन्यारत्न- ३
मॆत्रयुं तपस्सुळ्ळोरृष्याश्रमत्तिङ्कल्
पृथ्वियिलिट्टुंकळञ्ञवळु पोयाळल्लो । ४
पैतलॆ कृपावशनाय्कण्टु मुनिवरन्
पैदाहादिकळ् तीर्त्तु वळर्त्तुंतुटङ्ङिनान् । ५
प्रमदाजनङ्ङळिल् वरयामवळ्क्कन्नु
प्रमदाल् प्रमद्वरयॆन्नॊरु पेरुमिट्टान् । ६
अक्कुमारियॆक्कण्टु मन्मथातुरनायान्
चॊल्कॊण्ट रुरुमुनि तातनतरिञ्ञप्पोळ् ७
अवळॆ वळर्त्तॊरु मुनियॆक्कण्टु परञ्-
ञ्ञावर्कळिरुवर्क्कुं कल्पिच्चु मुहूर्तवुम् । ८
उत्रमां नक्षत्रमञ्चारारान्ताळॆन्नुतन्नॆ
तत्रैव कौतूहलत्तोटॊरुक्किनारॊक्कॆ । ९
कन्यकतानुं मरिच्चीटिनाळ् पान्पुकटि-
च्चॆन्ने कष्टमेयॆन्नु दुःखिच्चारॆल्लावरुम् । १०
हाहेयमहो ! पापं आॅ हेयं हतयाया-
ळा हन्त हतोहमित्याकुलनायि रुरु । ११

को जन्म दिया। फिर उसे पृथिवी में छोड़कर वह चली गयी। बच्चे को देखकर मुनिवर दया के वश में आ गये, और उसकी भूख और प्यास शान्त करके उसे पालने लगे। वह प्रमदाओं (महिलाओं) में श्रेष्ठ थी। इसलिए मुनि ने प्रमोद से उसका नाम प्रमद्वरा रखा। १-६ उस कुमारी को देख कर विख्यात मुनिवर रुरु, मन्मथ (मदन) के वश में आगये। यह बात जब उनके पिता को ज्ञात हुई तब वे कन्या के पालक मुनिवर से मिले और आपस में सलाह करके उन्होंने दोनों के विवाह का लग्न निश्चित किया। जो पांचवें या छठे दिन उत्तर नक्षत्र में पड़ता था और उसी क्षण बड़े कौतूहल के साथ सब तैयार किया गया। पर अन्त में साँप के काटने से कन्या मर गयी और सब लोग दुःख में डूब गये। ७-१० रुरु तो बहुत ही व्याकुल हुआ और चिल्लाने लगा—हा ! यह हेय है, अहो पाप, हा हेय ! वह मर गयी ! मैं मर गया ! कन्या के शव को देखकर

कन्यकाशवं कण्टु शोकमोहादि पूण्टु
वन्न वेदनयोटुमोटिप्पोय् वनं पुक्कान् । १२
ञान् चॅय्त तपोबलं कोण्टिवळ् जीविक्कॅन्नु
वाञ्छपूण्टरुळ्चॅय्तान् प्रमतितनयनुं । १३
वन्नॉरु देवदूतनन्नेरमुरचॅय्ता-
नॉन्नरियेणमायुस्सटवळ् जीविप्पील । १४
निन्नुटॅ शोकं कण्टिट्टॉन्नु चोदिच्चीटुन्नु-
ण्टुन्नियालुपायमिल्लॅन्नतो वरायल्लो । १५
ऍङ्किल् निन्नर्द्धायुस्सु कॉटुत्तालुण्टामिवळ्
सङ्कटं भवानतिनिल्लॅङ्किलतु चॅय्क । १६
ऍङ्किलिन्नतु चॅय्यामॅन्नितु रुरुवप्पोळ्
किङ्करन् धर्मराजनोटतुमरियिच्चान् १७
धर्मराजनुमतिननुज्ञ नल्कीटिनान्
निर्म्मलाङ्गियुमुणर्न्नॅँळुन्नेट्टतुनेरम् । १८
कल्पिच्च मुहूर्त्तं कॉण्टवनुं वेट्टुकॉण्टान्
अद्भुतांगियुमायि सुखिच्चु मरुवुन्नाळ् । १९

शोक और मोह के वश में आकर वह दुःख के साथ चला गया और वन में प्रविष्ट हो गया। प्रमति के तनय (रुरु) ने तीव्र इच्छा के साथ कहा—मेरे तपोबल से यह फिर जीवित हो जाय!। उस समय यमराज का एक दूत आया और उसने कहा—एक बात जान लो, जिसकी आयु समाप्त है वह फिर जीवित नहीं हो सकती। तुम्हारा शोक देखकर एक बात मुझे तुमसे पूछना है—कोशिश करने पर उपाय तो निकल आता ही है, यह बात प्रसिद्ध है। इस स्थिति में अगर तुम अपनी आयु का आधा भाग उसको दे दो तो वह फिर जीवित हो जावेगी। तुम्हें अगर उसमें दुःख न हो तो ऐसा करो। तब रुरु ने कहा—मैं ऐसा करने के लिए तैयार हूँ। धर्मराज के किंकर ने यह बात अपने स्वामी को सुनाई। धर्मराज ने अपनी अनुज्ञा दी और उस समय निर्मलांगी उठ खड़ी हुई। निश्चित लग्न पर रुरु ने विवाह भी कर लिया। और जब वह अपनी मनोहर रूपवाली (पत्नी) के साथ सुख से रह रहे थे, तब ११-१९

शान्तनाय् मरङ्ङातु कण्टॉरु मरयोरुं ।
शान्तचित्तन्माराय मामुनिजनङ्ङळुं ३४
आवर्तन्तितिनियॅन्तु तन्नुळ्ळिल् निरूपिच्चु
देवकळोटु चॉन्नारुण्टाय विशेषङ्ङळ् । ३५
अग्नितन्नभावत्ताल् मरङ्ङु कर्म्मङ्ङळुं
मग्नमायितु लोकमापदांबुधितन्निल् । ३६
सृष्टिकर्त्तावायीटुं ब्रह्मनोटिवयॅल्ला-
मॉट्टुं वैकातॅ चॅन्नङ्ङुणर्त्तिक्कयु वेणं । ३७
कष्टमॅन्तितिनॉरु कारणमरिञ्ञिल्ल
नष्टमायिटुमिप्पोळल्लायि्कल् प्रपञ्चवुं । ३८
पॅट्टॅन्नु देवादिकळतु केट्टनन्तरं
क्लिष्टमानसन्माराय् सत्यलोकवु पुक्कार् ।
शिष्टन्माराकुं मुनिमारुं निर्ज्जरन्मारुं ३९
स्पष्टवर्ण्णोद्यल्स्तुति नमस्कारादि परि-
तुष्टनायीटुं जगल्स्रष्टाविनोटु चॉन्नार् । ४०
उण्टाय विशेषं केट्टग्निये विधातावुं
कॉण्टाटि विळिच्चरुळिच्चॅय्तानतुनेरं । ४१
ऑन्निलुं भवज्ज्वाल तट्टियालशुद्धियि-
ल्लॉन्नुकॉण्टुमे भवानशुद्धमुण्टाय्वरा । ४२

ब्राह्मण और शान्तात्मा महामुनि सोचने लगे अब क्या होगा ? उसके बाद वे सब देवों के पास गये और उनसे सारा वृत्तान्त बतला दिया। अग्नि के अभाव के कारण सारा कर्मकाण्ड समाप्त हो गया और जगत् विपत्तिसागर में डूब गया। ३०-३६ सृष्टि के कर्त्ता जो ब्रह्मा हैं उनसे जाकर विना विलम्ब के इन सब बातों को कहना चाहिए। नहीं तो यह सारा प्रपञ्च नष्ट हो जायगा। पता ही नहीं चल रहा है कि इसका क्या कारण है। यह बात सुनते ही देव सब दुखी हो गये और तुरन्त सत्यलोक चले गये। तब शिष्ट मुनिजन और देवगण की स्पष्टवर्णबद्ध स्तुतियों और नमस्कारों से परितुष्ट जगत्स्रष्टा (ब्रह्मा) से सभी वृत्तान्त कहे गये। इस वार्ता को सुनकर विधाता ने अग्नि को बुलाकर सत्कार किया और कहा। जिसमें भी आपकी ज्वाला का स्पर्श हो जाय वह

भास्कररश्मिकळ् चॅन्नॅन्तॅल्लां तॉट्टुमॅन्ना-
लोक्कुन्पोळ् तॉट्टु वस्तु शुद्धमाय् वरुमत्रे । ४३
अज्ञानिकळॆप्पोलॅ खेदिप्पानॅन्तु भवान्
सुज्ञानिजनङ्ङळोटॉन्नुं पटुकयिल्ल । ४४
सर्व्ववुं भक्षिच्चालुमिल्लशुद्धतयॅटो
हव्यवाहननाकुं निनक्कॅन्नरिकॅटो ! ४५
पावकन् दुःखं तीर्न्नु देवकळोटुं कूटि-
प्पावनन्मारां मुनिमारुमाय् वसिच्चितु । ४६
लोकवुं तॅळिञ्ञितु तापसवरन्मारॅ !
शोकनाशनत्तिन्नु चॉल्लीटां कथयिन्नुम् । ४७

रुरुमुनियुटॅ अर्द्धायुर्द्दानवुं विवाहवुम् ।

च्यवननॅन्नु गर्भच्यवनत्वेन नाम-
मवनु भविच्चितु तत्सुतन् प्रमतिक्कु १
भुवनमनोहरियाकिय घृताचियिल्
तपसांनिधियाय रुरुनामावुण्टायान् । २

अशुद्ध नहीं हो सकती । फिर आपकी तो किसी भी प्रकार अशुद्धि सम्भव नहीं । ३७-४२ सूर्य के किरण जिस पदार्थ का भी स्पर्श करें वह पदार्थ, विचार किया जाय, तो शुद्ध ही हो जाता है । इसलिए आप अज्ञानियों की तरह क्यों खेद कर रहे हैं ? जो ज्ञानवान लोग हैं उनका कुछ नहीं बिगड़ेगा । जिस वस्तु का भी आप भक्षण करलें, आप हव्यवाहन को कोई अशुद्धि नहीं होगी, यह जान लीजिए । भगवान् पावक (अग्नि) का दुःख समाप्त हुआ और देवों और पावन मुनियों के साथ सुख से रहने लगे । अब शोक के नाश के लिए आज और कथा सुनाऊँगा । ४३-४७

मुनि रुरु का अर्द्धायुर्दान और विवाह

गर्भ का च्यवन (पात) होने के कारण बालक का नाम च्यवन पड़ा । उसके पुत्र प्रमति द्वारा सारे भुवन की मनोहारिणी घृताची से रुरु नामक तपोनिधि पुत्र का जन्म हुआ । उन दिनों विश्वावसु के बीज के द्वारा सुलोचना मेनका ने तपोधन ऋषि के आश्रम में एक कन्यारत्न

अक्कालं विश्वावसुतन्नुटॅ बीजंकॉण्टु
मैक्कणिण मेनकयुं पॅट्टितु कन्यारत्न- ३
मॅत्रयुं तपस्सुळ्ळोरृष्याश्रमत्तिङ्कल्
पृथ्वियिलिट्टुंकळञ्ञवळुं पोयाळल्लो । ४
पैतलॅ कृपावशनाय्कण्टु मुनिवरन्
पैदाहादिकळ् तीर्त्तु वळर्त्तुतुटङ्ङिनान् । ५
प्रमदाजनङ्ङळिल् वरयामवळ्क्कन्नु
प्रमदाल् प्रमद्वरयॅन्नॉरु पेरुमिट्टान् । ६
अक्कुमारियॅक्कण्टु मन्मथातुरनायान्
चॉल्कॉण्ट रुरुमुनि तातनतरिञ्ञप्पोळ् ७
अवळॅ वळर्त्तॉरु मुनियॅक्कण्टु पर-
ञ्ञवर्कळिरुवर्क्कुं कल्पिच्चु मुहूर्तवुम् । ८
उत्रमां नक्षत्रमञ्चारान्नाळॅन्नुतन्नॆ
तत्रैव कौतूहलत्तोटॉरुक्किनारॉक्कॅ । ९
कन्यकतानुं मरिच्चीटिनाळ् पान्पुकटि-
च्चॅन्ने कष्टमेयॅन्नु दुःखिच्चारॅल्लावरुम् । १०
हाहेयमहो ! पापं आॅ हेयं हतयाया-
ळा हन्त हतोहमित्याकुलनायि रुरु । ११

को जन्म दिया । फिर उसे पृथिवी में छोड़कर वह चली गयी । बच्चे को देखकर मुनिवर दया के वश में आ गये, और उसकी भूख और प्यास शान्त करके उसे पालने लगे । वह प्रमदाओं (महिलाओं) में श्रेष्ठ थी । इसलिए मुनि ने प्रमोद से उसका नाम प्रमद्वरा रखा । १-६ उस कुमारी को देख कर विख्यात मुनिवर रुरु, मन्मथ (मदन) के वश में आगये । यह बात जब उनके पिता को ज्ञात हुई तब वे कन्या के पालक मुनिवर से मिले और आपस में सलाह करके उन्होंने दोनों के विवाह का लग्न निश्चित किया । जो पांचवें या छठे दिन उत्तर नक्षत्र में पड़ता था और उसी क्षण बड़े कौतूहल के साथ सब तैयार किया गया । पर अन्त में साँप के काटने से कन्या मर गयी और सब लोग दुःख में डूब गये । ७-१० रुरु तो बहुत ही व्याकुल हुआ और चिल्लाने लगा—हा ! यह हेय है, अहो पाप, हा हेय ! वह मर गयी ! मैं मर गया ! कन्या के शव को देखकर

कन्यकाशवं कण्टु शोकमोहादि पूण्टु
वन्न वेदनयोटुमोटिप्पोय् वनं पुक्कान् । १२
ञ्ञान् चॆय्त तपोबलं कोण्टिवळ् जीविक्कॅन्नु
वाञ्छपूण्टरुळ्चॆय्तान् प्रमतितनयनुं । १३
वन्नॉरु देवदूतनन्नेरमुरचॆय्ता-
नॉन्तद्रियेणमायुस्सट्वळ् जीविप्पील । १४
निन्नुटॆ शोकं कण्टिट्टॉन्नु चोदिच्चीटुन्नु-
ण्टुन्नियालुपायमिल्लॅन्नतो वरायल्लो । १५
ऍङ्किल् निन्नर्द्धायुस्सु कॉटुत्तालुण्टामिवळ्
सङ्कटं भवानतिनिल्लॅङ्किलतु चॆय्क । १६
ऍङ्किलिन्नतु चॆय्यामॅन्नितु रुरुवप्पोळ्
किङ्करन् धर्मराजनोटतुमद्रियिच्चान् १७
धर्मराजनुमतिननुज्ञ नल्कीटिनान्
निर्म्मलाङ्गियुमुणर्न्नॅ्ळुन्नेट्तुनेरम् । १८
कल्पिच्च मुहूर्त्तं कॉण्टवनुं वेट्टुकॉण्टान्
अद्भुतांगियुमायि सुखिच्चु मरुवुन्नाळ् । १९

शोक और मोह के वश में आकर वह दुःख के साथ चला गया और वन में प्रविष्ट हो गया। प्रमति के तनय (रुरु) ने तीव्र इच्छा के साथ कहा—मेरे तपोबल से यह फिर जीवित हो जाय ! । उस समय यमराज का एक दूत आया और उसने कहा—एक बात जान लो, जिसकी आयु समाप्त है वह फिर जीवित नहीं हो सकती। तुम्हारा शोक देखकर एक बात मुझे तुमसे पूछना है—कोशिश करने पर उपाय तो निकल आता ही है, यह बात प्रसिद्ध है। इस स्थिति में अगर तुम अपनी आयु का आधा भाग उसको दे दो तो वह फिर जीवित हो जावेगी। तुम्हें अगर उसमें दुःख न हो तो ऐसा करो। तब रुरु ने कहा—मैं ऐसा करने के लिए तैयार हूँ। धर्मराज के किंकर ने यह बात अपने स्वामी को सुनाई। धर्मराज ने अपनी अनुज्ञा दी और उस समय निर्मलांगी उठ खड़ी हुई। निश्चित लग्न पर रुरु ने विवाह भी कर लिया। और जब वह अपनी मनोहर रूपवाली (पत्नी) के साथ सुख से रह रहे थे, तब ११-१९

सहस्त्रपादन्टॅ शापमोक्षम्

पण्टु तन् पत्नि तन्नॅक्कटिच्चुकॉन्नतुळ्ळि-
लुण्टाककॉण्टु वैरमवनु मुळुक्कयाल् १
दण्डुमाय् नटन्नवन् कुण्डलिकळॆयॉक्कॅ
दण्डहस्तन्टॅ पुरत्तिङ्कलाक्कीटुमल्लो । २
पण्डितनाय रुरु दण्डमोङ्ङ्ङ्ङ्पोळॉरु
डुण्डुभमॉरुदिनमवनोटुरचॅय्तान् ३
ऍन्तु ञान् पिळच्चतु निन्नोटॅन्नुर चॅय्क
जन्तुक्कळॆल्लामॉक्कुमॉन्नुं कॉल्लरुतल्लो । ४
चॉल्लिनानतु केट्टु नल्ल मामुनि रुरु
कॉल्लुन्न जन्तुक्कळॆ कॉल्लुकॅन्नतेवरू । ५
ऍन्नुटॅ भार्यतन्नॅक्कटिच्चु कॉन्नानॉरु
डुंडुभमतुमूलं निङ्ङळॆक्कॉल्लुन्नु ञान् । ६
डुंडुभं चॉन्नानप्पोळदण्ड्यन्मारॅ वृथा
दण्डिप्पिच्चीटुन्नोरॅ दण्डहस्तनु पिन्नॅ ७
दण्डिप्पिच्चीटुं घोरनरकङ्ङळिलाक्कि-
प्पण्डितनाय भवानॅङ्किलुमितुकेळ्क्क । ८

सहस्त्रपाद का शापमोक्ष

अतीत में [सर्प द्वारा] अपनी पत्नी के काटे जाने के कारण रुरु के हृदय में वैर बहुत बढ़ा और वह हाथ में लाठी लिये घूमते थे और रास्ते में जितने कुण्डली (साँप) मिलते सबको यमसदन भेजा करते थे। जब रुरु ने जो पण्डित था एक डुंडुभ (सांप) के मारने के लिए लाठी उठायी तब उसने निवेदन किया—यह बतलाइये, मैंने क्या अपराध किया? सभी जन्तु समान हैं, किसी को भी मारना नहीं चाहिए। यह सुनकर श्रेष्ठ महामुनि रुरु ने कहा—जो जन्तु औरों को मार डालते हैं वे भी मारे ही जायँगे, और क्या हो सकता है। मेरी पत्नी को एक डुंडुभ ने मार डाला, इसलिए मैं तुम लोगों को मार रहा हूँ। १-६ तब डुंडुभ ने निवेदन किया—जो अदण्ड्यों को दण्ड देते हैं उनको यमराज घोर नरकों में डालकर डण्ड देंगे। आप

मट्टॉरु परिषकळ् कटिच्चुकॉल्लुन्नतुं
मुट्टुं ञानवरुटॆ वेषमॆन्नतेयुळ्ळु । ९
अतु केट्टॉरु रुरु दिव्यनॆन्नरिञ्ञप्पोळ्
चतियॆन्तिये नम्मोटारॆन्नु चॉल्लीटॆन्नान् । १०
सहस्त्रपादनहं ञानॉरु मुनिशापाल्
वहिच्चीटुन्नेनिह डुंडुभवेषादिकळ् । ११
ऍन्तु नी पिळच्चतु शपिच्चतेतु मुनि ?
बन्धमॆन्तिवट्टिनॆन्नोटु परयणम् । १२
केळ्क्क नी खगमनां मामुनि मम सखि
भोष्क्कल्ल होमं चॆय्युन्नेरं ञान् क्रीडार्त्थमाय् १३
तृणंकॉण्टुण्टाक्किय सर्प्पमङ्ङॆट्टुत्तिट्टे-
ननसु तार्ण्णमॆन्नतवनुमरियातॆ । १४
पेटिच्चु मोहिच्चुटन् मोहं तीर्न्नुरचॆय्तान् ।
मूढनां भवानुमीवेषमाय् वरिकेन्ना- १५
नय्यो ञानेतुमोर्त्तल्लॆन्नुटॆ कळियत्रे
नीयिनिश्शापमोक्षं नल्कीटॆन्नपेक्षिच्चान् । १६

पण्डित हैं, फिर भी मेरी बात सुन लीजिए । औरों को काटकर मार डालने वाले [सर्प] और जाति के हैं, उनका जैसा मेरा केवल वेष है । यह सुनकर जब रुरु ने समझा कि यह कोई दिव्य पुरुष है तब कहा—बिना कपट के मुझे बतला दीजिये कि आप कौन है । "मैं सहस्त्रपाद हूं । एक मुनि के शाप के कारण मैं इस सर्पवेष का धारण कर रहा हूं ।" (तब रुरु ने कहा)—तुमने क्या अपराध किया और किस मुनि ने शाप दिया ? इसका क्या कारण है । यह सब मुझसे बतलाओ । ७-१२ (सहस्त्रपाद ने कहा—) सुन लीजिए, मेरे मित्र मुनि खगम जब हवन कर रहे थे उस समय—यह विनोद नहीं है—मैंने खेल में एक घास का सांप बनाकर वहाँ डाल दिया । यह न जानकर कि वह घास का है और सजीव नहीं है, वे डर गये और बेहोश हो गये । जब फिर होश में आये तब उन्होंने कहा—आप मूर्ख हैं । आप भी इस वेष के हो जायँ ! । (तब उन्होंने कहा—) "हन्त ! मैंने कुछ भी नहीं सोचा था । यह केवल खेल था । आप इस शाप का मोक्ष भी बतला दीजिए ।" (तब खगम ने कहा—)

भार्ग्गवसुतनाय रुरुमामुनि कण्टाल्
भाग्यवानाय निनक्कॅन्नुटँ शापंतीरुं । १७
ऍन्नरुळ् चॅय्तु मम सखियां खगमनु-
मिन्निप्पोळ्क्काणाय्वन्नु निन्तिरुवटियेयुं । १८
शापवुं तीर्न्नु मम तापवुमकन्नितु
पापवुमुण्टाय्वरुं हिंसचॅय्यरुतल्लो । १९
तापसन्माक्कुं विशेषिच्चुमतरुतल्लो
तापसश्रेष्ठा ! भवानोटु ञान् चोल्लेणमो । २०
कोपमाकुन्नतल्लो कॉटिय नरकङ्ङळ्
भूपतिकळ्क्कुं दुष्टवधमे चॅय्तीटावू । २१
सल्क्षितिपतिवरनां परीक्षित्तुतन्नॅ
तक्षकन् कटिच्चु कॉन्नीटिनानतुमूल- २२
मक्षिकर्ण्णन्मार्कुलं नष्टमाक्कीटुवानाय्
मुख्यनायीटुं जनमेजयनवन्मक- २३
नारंभिच्चितु सर्प्पयागमॅन्नरिञ्ञालुं ।
आरुं भाविच्चाल् मुटङ्ङातॉरु सर्प्पयाग- २४
मस्तिकन् पऱञ्ञातु माटियॅन्नरिञ्ञालु-
मॅत्रयुं दोषमुण्टु हिंसय्कॅन्नतु नूनं । २५

जब भार्गव (प्रमति) का पुत्र महामुनि रुरु तुम्हें देखेंगे, तब तुम्हारा भाग्य खुल जायगा और मेरा शाप समाप्त हो जायगा। मेरे मित्र खगम ने इस प्रकार कहा और आप का दर्शन हो गया। शाप की समाप्ति हो गयी और मेरा दुःख भी दूर हो गया। आप हिंसा न करें क्योंकि आप को पातक होगा। विशेषतः तापसों के लिये यह बिलकुल अनुचित है। आप तापसों में श्रेष्ठ हैं, आप से मैं क्या कहूँ ? । १३-२० कोप घोर नरकों में परिणत हो जाता है। भूपतियों के लिए भी केवल दुष्टवध ही विहित है। तक्षक ने अच्छे भूपति परीक्षित को काटकर मार डाला इसलिए सर्पों के कुलों को नष्ट करने के लिए उनके मुख्यपुत्र जनमेजय ने, जान लीजिए सर्प-सत्र का आरम्भ किया है। यह भी जान लीजिए कि जिस सर्पयाग को और कोई रोक न सकता था उसको अस्तिक ने समझाकर रोक दिया। इसमें कोई संदेह नहीं है हिंसा से बड़ा दोष पैदा

सहस्रपादनोटु चोदिच्चु रुरुवप्पोळ्
महत्वमेऱु जनमेजयनतुचॆय्वान् २६
ऍन्तु कारणमॆन्नुमस्तिकनॉळिच्चतिन्
बन्धमॆन्तॆन्नुमरुळ्चॆय्यणमॆन्ननेरं । २७
अतु केळ्प्पिप्पान् पात्रमल्ल ञ्ञानॆन्नु चॉल्लि
मतिमान् दशशतपदनुं मऱञ्ञितु । २८
रुरु मामुनिवरनतु केळाय्कमूल-
मुरुतापवुं पूण्टु नटन्नु पलेटत्तुं । २९
पिन्नप्पोन्नाश्रमत्तिल् वन्नु तन् तातनोटु
चॉन्नतु केट्टु पितावविनोटरुळ्चॆय्तान् । ३०
चॉल्लुवनखिलवुं केट्टुकॉळ्कॆङ्किलॆन्नु
चॉल्लितु पौलोमत्तिलॆन्नाळ् पैङ्किळिमकळ् । ३१
इङ्ङनॆ चॉल्लि महाभारतं नूऱायिरं
मंगलग्रन्थमितिहासराजाख्यमतिल् ३२
मुन्पिनालुळ्ळ पौलोमास्तिकं पर्व्वं रण्टिल्
मुन्पिल् पौलोममतु चुरुक्किच्चॉन्नेनल्लो । ३३
आस्तिकपर्व्वमिनियाकुन्नततु केळ्प्पा-
नास्थयुण्टॆङ्किलतु चुरुक्किच्चॉल्लामल्लो । ३४

होता है। (यह सुनकर) रुरु ने सहस्रपाद से कहा—बड़े महत्व वाले जनमेजय ने क्यों यह काम किया है और क्या कारण है कि अस्तिक ने उसको रोक दिया ? यह मुझे बतलाइए। इस समय मैं यह सुनाने का अधिकारी नहीं हूँ—इतना कहकर मतिमान् सहस्रपाद तिरोहित हो गये। २१-२८ यह न सुनने के कारण महामुनि रुरु बड़े दुःख के साथ इधर-उधर घूमने लगे। फिर अपने आश्रम में लौटकर उन्होंने पिता जी से सब कह दिया। पिता ने सुनकर यों कहा।—मैं सब सुना दूँगा। सुन लो ! । शुककन्या ने बताया—इतना पौलोम [पर्व] में कहा गया है। इस प्रकार महाभारत सुनाया गया। इस इतिहासराज में सौ हजार मंगल ग्रन्थ हैं। पौलोम और आस्तिक पहले के दो पर्व हैं। उनमें से पौलोम संक्षेप में कहा गया है। इसके बाद आस्तीक पर्व है। उसे भी सुनने के लिए यदि आस्था हो तो संक्षेप में सुना जा सकता है। आस्तिक्य (श्रद्धा)

यत वाण धरेन श्रीराम गुणधाम ❊ अबोध रावण शुन से-सबार नाम
अमर्त्त समर्थ वाण, वाण महाबल ❊ विष्णुजाल इन्द्रजाल कालान्त अनल
उल्कामुख वरुण विद्युत खरशान ❊ ग्रहपति नक्षत्र गगन रुद्र वाण
सूचीमुख शिलीमुख घोरदरशन ❊ सिंहदन्त बज्रदंत वाण विरोचन
कालदण्ड ऐषिक देखह कर्णिकार ❊ चन्द्रमुख अश्वमुख देख सप्तसार
विकट संकट वाण सप्त धाराधार ❊ अर्द्धचन्द्र खुरपा आशुग क्षुरधार
पशु पक्षी अग्नि आर अग्नि मुखवाण ❊ कुबेरास्त्र राजहंस वाण वर्द्धमान
यमक दुर्ज्जय वाण भंग ये विभंग ❊ त्रिशूल अंकुश वाण वायव्य आतंक
बज्रवाण गरुड़ मयूर सुसन्धान ❊ काकमुख भेकमुख कपोतक वाण
विष्णुचक्र षटचक्र वाण हुताशन ❊ सन्तापन विलापन संग्रामे शमन
गजांक सन्धान वाण चारि दिके आँटा ❊ सिंह ओ शार्दूल तार चारि दिके काँटा
एत वाण रघुनाथ करेन सन्धान ❊ याँर एक वाणे बालि त्यजिलेक प्राण
ये बालिर निकटेते तोर पराजय ❊ से बालिके मारिलेन राम महाशय
बाल्यक्रीड़ा याँहार शिलेर धनुर्भंग ❊ कि साहसे तार संगे युद्धेर प्रसंग
भेदिलेन सत्पताल राम एक शरे ❊ ताँर तुल्य वीर केवा आछे चराचरे

रावण तू अपने सारे वंश सहित नष्ट हो जायगा। गुणसागर राम के पास जितने बाण हैं, हे अबोध रावण ! उन सब के नाम तो सुन। अमर्त्त-समर्थ वाण, महाबल वाण, विष्णुजाल, इन्द्रजाल, कालान्त, अनल, उल्कामुख, वरुण, विद्युत, खरशान, गुहपति, नक्षत्र, गगन, रुद्रबाण, सूचीमुख, शिलीमुख जैसे भयानक रूपवाले वाण, सिंहदन्त, वज्रदन्त और विरोचन, वालदन्त, ऐषीक व कर्णिकार वाण, चन्द्रमुख, अश्वमुख एवं सप्तसार विकट संकट-वाण जिसके सप्तमुख हैं, अर्द्धचन्द्र, खुरपा, आशुत्र, क्षुरधार वाण, पशु, पक्षी, अग्नि और अग्निमुख वाण, कुवेरास्त्र, राजहंस, वर्धमान बाण, यमक दुर्जय-वाण, मंत्र-विमंत्र बाण, त्रिशूल, अंकुश, वायव्य, आतंक, वज्रवाण, गरुड़, मयूर, सुसन्धान वाण, काकमुख, भेकमुख, कपोतक वाण, विष्णुचक्र, षटचक्र, हुताशन, संतापन, विलापन जैसे संग्राम-शमन बाण, गजांक चारों ओर से कसा हुआ सन्धान वाण, सिंह और शार्दूल जिनके चारों ओर काँटे हैं—इतने वाणों पर रघुनाथ की गति है, जिनमें से एक वाण से बालि ने प्राण त्याग दिया। जिस बालि से तू पराजित हुआ था उसी बालि को श्रीराम ने मार गिराया। शिव का धनुष तोड़ना जिनके लिए बाल-क्रीड़ा के समान है, उनके साथ तेरे युद्ध का क्या प्रसंग ? राम ने एक वाण से सप्तताल को भेद किया, उनके समान वीर इस चराचर पर दूसरा कौन है। किस बूते पर तू आँखें लाल कर

कि हेतु देखिस रे पाकल करि आँखि ❋ माकड़ेर डिम्ब सम तोर लंका देखि
तोर काछे आछे तोरे नाहि करि शंका ❋ उपाड़िया लैते पारि स्वर्णपुरी लंका
हेर हेर मुण्ड मोर सुमेरुर चूड़ा ❋ हेर हेर पद मोर कैलासेर गोड़ा
हेर हेर हस्त मोर बज्रेर समान ❋ एकइ चापड़े तोर लइब परान
अपमाने रावण करिल हेंट माथा ❋ पात्र मित्र सहित ना कहे कोन कथा ६८
रावण अंगदे बले गञ्जिलि विस्तर ❋ एक वार्त्ता जिज्ञासि रे अवगति कर
ये वानर पोड़ाइल मोर लंकापुरी ❋ ये वा अक्षकुमारे मारिल बले धरि
भांगिल अशोक वन अति सुशोभन ❋ तार मत वीर आछे कह कत जन ६९
अंगद बलिछे तारे भर्त्सिया वचने ❋ तोर बल विक्रम बुझिनु एत दिने
सेवकेर सने यदि पाइलि पराजय ❋ केमने राखिबि लंका कह रे निश्चय
तार छोट वीर नाहि वानर कटके ❋ निर्बल बलिया तारे केह नाहि डाके
से मरिले दुःखशोके नाहिक वानरे ❋ तेंइ पाठाइया छिनु लंकार भितरे
वीर मध्ये तारे नाहि गणे कोन जन ❋ घरेर सेवक बेटा पवननन्दन
हनूमाने बान्धिया बेड़েছे अहंकर ❋ पड़िलि आमार हाते जाबि यमद्वार

रहा है, तेरी लंका को मैं मकड़ी के अंडे के समान देखता हूँ। तेरे ही निकट हूँ लेकिन तुझसे कोई डर नहीं है मुझको, चाहूँ तो समूची स्वर्णपुरी लंका को उखाड़ लूँ। देख, देख, मेरा सिर सुमेरु के शिखर के समान है; देख, देख, मेरे पैर कैलास पर्वत का सानुदेश हैं; देख, देख, मेरे हाथ वज्र के समान है, एक ही झापड़ से तेरे प्राण ले लूँ। अपमान से रावण ने शिर झुका लिया, पार्षदों से कुछ भी बात नहीं की ॥ ६८ ॥

रावण ने अंगद से कहा, तूने काफी भर्त्सना कर ली है, अब एक बात तो बता। जिस बन्दर ने यह लंकापुरी जला डाला, जिसने अक्षकुमार को मार डाला, सुशोभन अशोक वन को जिसने तहस-नहस कर दिया उसके जैसे वीर और कितने हैं ॥ ६९ ॥

अंगद ने तिरस्कार करते हुए कहा, इतने दिनों में तेरे बल-विक्रम का सही अन्दाजा लगा। यदि सेवक से ही तेरी ऐसी करारी हार हुई है तो तू कैसे लंका को अपने अधिकार में रख सकेगा। बानर सेना में उससे छोटा कोई वीर नहीं है। कमजोर होने के कारण उसे कोई नहीं बुलाता। उसके मरने पर बानरों में कोई क्लेश नहीं होगा, इसी कारण उसको लंका में भेजा गया था। उसकी गिनती वीरों में कोई नहीं करता। वह पवन-नन्दन तो घर का नौकर मात्र है। हनुमान को बाँध कर तेरा घमंड बढ़ गया है; आज

लइया जाइब तोरे गले दिया दड़ि ❊ दशमाथा भांगिब मारिया लेजेर बाड़ि
तोर सर्व्वनाश हेतु उत्पत्ति सीतार ❊ निर्व्वंश करिते तोरे राम अवतार
कोथाय बैसेन राम अयोध्या नगरी ❊ कोथा आइलेन तिनि एइ लंकापुरी
एत दूरे आसि राम बान्धिला सागर ❊ से रामेर सने दुष्ट तोर पाठान्तर
देवता जिनिया तोर बाड़ियाछे आश ❊ एक सीता जन्ये तोर हबे सर्व्वनाश
वंशे केह रहिवेक, ना करिह साध ❊ आपना आपनि तुइ पाड़िलि प्रमाद
खाटे पाटे शुये थाक् दिन दुइ चारि ❊ हास्य परिहास कर लये दिव्यानारी
परिवार गणे देख दिने दुइ वार ❊ विश्वकर्म्मार निर्म्माण देख घर द्वार
देख तुइ लंकापुरी कनक निर्म्माण ❊ अंगद विक्रम यत कृत्तिवास गान ७०

रावणेर प्रति अंगदेर भर्त्सना

तुइ आति दुराचारी, हरिलि परेर नारी, परलोके नाहि तोर भय ।
दशरथ महाराजा, देवलोक करे पूजा, श्रीराम ये ताँहार तनय ।।
याँहार दुर्ज्जय वाण, भये विश्व कम्पमान, हेन राम लंकार भितर ।
देवराज करे पूजा, हेले मारे बालिराजा, ताँर सने तोर पाठान्तर ।।

तू मेरे हाथों में आ पड़ा है, अब सीधे मृत्यु-पुरी को पहुँचेगा। तेरे गले में रस्सी डालकर तुझे ले जाऊँगा। पूँछ के प्रहार से तेरे दस मुंडों को चूर-चूर कर दूँगा। तेरे सर्वनाश के निमित्त ही सीता का जन्म हुआ है और तुझको निर्वंश करने के लिए ही राम ने अवतार लिया है। कहाँ राम का स्थान अयोध्या नगरी में है और कहाँ वह इस लंकापुरी में आए हैं। इतनी दूर आकर राम ने सागर बाँध डाला है और इन्हीं राम के साथ तूने विवाद छेड़ दिया है। अरे दुष्ट ! देवताओं पर विजय प्राप्त कर तेरा दिमाग खराब हो गया है, अकेली सीता के लिए ही तेरा सत्यानाश हो जायगा। ऐसी आकांक्षा न रखना कि तेरे वंश में कोई भी जीवित रह जायगा। तूने स्वयं ही अपनी विपत्ति बुला ली। पलंग पर पड़े मौज से दो चार दिन बिता ले, दिव्य-नारियों के साथ हास-परिहास कर ले, दिन में दोबार परिवार-वर्ग को देख ले, विश्वकर्मा के बनाये घर-द्वार देख ले, इस सोने की लंकापुरी को भी देख ले। यों अंगद की विक्रम-कथा कृत्तिवास गा रहे हैं ।। ७० ।।

रावण के प्रति अंगद की भर्त्सना

तू बड़ा दुराचारी है, दूसरे की नारी का तूने अपहरण किया, तुझे परलोक का भय नहीं है। श्रीराम उसी महाराजा दशरथ के पुत्र हैं जिनकी पूजा देवता भी करते हैं। जिनके दुर्जय वाण के भय से सारा विश्व काँपता रहता

सुग्रीवेर बल यत, ताहा वा कहिब कत, से सकल हइबि विदित ।
तोरे एक लाथि मारि, काँपाइब लंकापुरी, कि करिबे तोर इन्द्रजित् ॥
शुन राजा लंकेश्वर, आमार वचन धर, आइलाम दिते समाचार ।
श्रीराम सागर पार, नाहिक निस्तार आर, निकटे ये तोर यमद्वार ॥
राजा हये परदार, हरिलि रे दुराचार, बोध मात्र नाहि तोर घटे ।
केवल ब्रह्मार वरे, जिनिलि रे पुरन्दरे, राम नामे तोरे बल टुटे ॥
राख रे आपन प्राण, कर सीता प्रतिदान, भज गिया रामेर चरण ।
घाटि माग ताँर ठाँइ, इहा भिन्न गति नाइ, तबे तोर रहिबे जीवन ॥
तोरा जाति निशाचर, ना चिनिस आत्म पर, तोर भाइ रामे कैल मित ।
श्रीरामेर अंगीकार करिबेन एइवार विभीषण लंकाय पूजित ॥
शुनिया अंगदवाणी, करे सबे कानाकनि, ए लंकार नाहिक निस्तार ।
कोपे उठे लंकेश्वर, बले राजा धर धर, देखि अंगदेर अहंकार ॥

है, वही आज लंका के भीतर उपस्थित हैं। जिनकी पूजा देवराज किया करते हैं, बालिराज को जिन्होंने अनायास ही पराजित किया है उनके साथ तेरा द्वन्द्व है। सुग्रीव कितना शक्तिशाली है यह मैं क्या बताऊँ, तुझको स्वयं ही मालूम पड़ जायगा। तुझे एक लात मारकर लंकापुरी को थर्रा दूँ, तेरा इन्द्रजीत क्या कर सकेगा। ऐ राजा लंकेश्वर! मेरा वचन सुन ले, मैं यह समाचार देने आया हूँ कि श्रीराम ने सागर लाँघ लिया है, तेरा अब कोई निस्तार नहीं, तू यमद्वार के बहुत निकट पहुँच गया है। राजा होकर तूने परस्त्री का अपहरण किया, तेरे दिमाग में थोड़ी सी भी बुद्धि नहीं है। केवल ब्रह्मा के वरदान के कारण तूने पुरन्दर पर विजय प्राप्त की, लेकिन राम-नाम के कारण तेरी सब शक्ति लुप्त हो गई है। अपने प्राण बचा, सीता को जाकर लौटा आ और राम के चरणों की बन्दना कर। उनके समक्ष जाकर क्षमा माँग ले, इसके सिवा तेरा कोई उपाय नहीं है, तभी तेरे प्राण बच सकते हैं। तू निशाचर जाति का है, अपना पराया नहीं समझता, तेरे भाई ने जाकर राम से मित्रता कर ली। श्रीराम ने यह अंगीकार कर लिया है और वे अब विभीषण को लंका में सुप्रतिष्ठित करेंगे। अंगद के वचन सुनकर सभी लोग कानाफूसी करने लगे कि इस लंका के लिए अब कोई बचाव नहीं रहा। राजा लंकेश्वर कोप से उठ खड़े हो गये और बोले, इसको पकड़ लो, इस अंगद के अहंकार को तो चूर करूँ। सारे सेनापति यह देखकर मन ही मन यह परामर्श करने लगे कि अब हम लोगों की कोई रक्षा नहीं कर सकता। श्रीराम

देखि सब सेनापति, मने युक्ति करे इति, आमादेर रक्षा नाहि आर ।
राम पद करि आश, सरस्वती-परकाश, कृत्तिवास नाचाड़ि सुसार ७१ ॥

अंगद कर्त्तृक चारि राक्षस वध ओ रावणेर मुकुट लइया श्रीरामचन्द्रेर निकटे गमन

अंगदेर रावण देखाय यत डर ❋ रुषिया अंगद वीर करिछे उत्तर
आर कपि नहि, आमि बालिर तनय ❋ तोर क्रोधे रावणा, आमार किवा भय
रावण, बड़ाइ ना करिस मोर आगे ❋ आमि तोरे मारिले रामेर सत्य भागे
राम सुग्रीवेर युक्ति आमि भाल जानि ❋ तोरे आर कुम्भकर्णे बधिवेन तिनि
इन्द्रजिते अतिकाये बधिवे लक्ष्मण ❋ आर यत राक्षसे बधिवे कपिगण
कोन बेटा धरिबे आसुक त्वरा करि ❋ एक चड़े ताहारे पाठाव यमपुरी ७२
क्रोधाकुल चारि दिके चाहे दशानन ❋ अंगदेर हाते पाये धरे चारि जन
चारि निशाचर करे अंगदे प्रहार ❋ अंगदेर दृढ़ अंग कि करिबे तार
अंगद से चारि जने धरिल सापुटे ❋ एक लाफे प्राचीरेर उपरे से उठे
प्राचीरे तुलिया वीर मारिल आछाड़ ❋ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़

के चरणों की आशा कर कृत्तिवास नृत्य छन्द में गाया जाने वाला सुन्दर गीत सरस्वती की कृपा से रचता है ॥ ७१ ॥

अंगद के द्वारा चार राक्षसों का वध और रावण का मुकुट लेकर श्रीरामचन्द्र के पास जाना

अंगद को रावण ने भय दिखाया तो रोष में आकर अंगद वीर ने जवाब दिया, मैं कोई सामान्य कपि नहीं—बालि का बेटा हूँ। तेरे क्रोध से मुझको कोई डर नहीं, ऐ रावणा, मेरे सामने तू लम्बी-चौड़ी बातें मत कर। मैं अगर तुझे मार डालूँ तो राम का सत्य-पालन खंडित हो जायगा। राम-सुग्रीव की युक्ति मैं भली-भाँति जानता हूँ। वे तेरा और कुम्भकर्ण का वध करेंगे। अतिकाय इन्द्रजीत का वध लक्ष्मण करेंगे। और बाकी राक्षसों का निधन कपियों के हाथ होगा। कौन निगोड़ा मुझको पकड़ना चाहता है आगे बढ़ आवे। एक ही झाँपड़ में उसको यमपुरी भेजता हूँ ॥ ७२ ॥

दशानन ने क्रोध से चारों ओर देखा। चार राक्षसों ने अंगद के हाथ-पैर पकड़ लिये। चार निशाचर मिलकर अंगद को पीटने लगे। लेकिन अंगद का शरीर वज्र के समान है, उसका इससे कुछ भी नहीं बिगड़ा। अंगद उन चारों राक्षसों को समेट कर एक छलांग में प्राचीर के ऊपर जा बैठा। प्राचीर पर चढ़ कर उसने उनको धर पटका। उनके सिर चकना चूर हो गये

से चारि राक्षसे मारि भांगिल प्राचीर ❋ अंगद वीरेर डरे केह नहे स्थिर ৭
प्राचीरे उठिया भावे बालिर कुमार ❋ कोन द्रव्य लये जाव रामे भेटिव
हनूमान एसे छिल लंकार भितर ❋ दिलेक सीतार मणि रामेर गोच
मणि पेये रघुमणि आनन्दित अति ❋ तदवधि महातुष्ट हनूमान प्र
एइ स्थिर करिलेक अंगद अन्तरे ❋ रतन मुकुट आछे रावणेर शि
ए मुकुट लये जाव राम सम्भाषणे ❋ प्रसन्न हवेन राम इहा दरश
प्राचीरे बसिया छिल बालिर कोडर ❋ एक लाफे गिया पड़े रावण उप
सिंहासने बसिया रावण तारे धरे ❋ जड़ाजड़ि करि पड़े भूमिर उप
धरा टलमल करे उभयेर भरे ❋ इन्द्र गरुड़ेर युद्ध गगन उप
दुइ सिंह युद्धे येन करि सिंहनाद ❋ दुइ जने मल्लयुद्ध, हइल प्रम
रावणेरे आछाड़िया बालिर नन्दन ❋ मुकुट लइया वेगे उठिल ग
अंगदेर विक्रमे रावण काँपे डरे ❋ अधोमुखे उठिया गायेर धूला झ
रावणेर काछे आछे सब सेनापति ❋ एत वीर थाकिते तार एरूप दुर्गति ৭
रावण बलिछे, सबे आछ कोन काजे ❋ वानरे मुकुट लय सवाकार म

और हड्डियाँ चूर-चूर। उन चारों राक्षसों को मार कर उसने प्राचीर त
डाला। वीर अंगद के भय से सभी चंचल हो उठे॥ ७३॥

प्राचीर पर चढ़ कर बालि-नन्दन सोचने लगे कि राम को भेंट चढ़
के लिए कौन सी वस्तु लेकर जाया जाय। हनुमान लंका में आया था
सीता की चूड़ामणि लेकर गया था। मणि पाकर रघुमणि बहुत आनन्दि
हुए थे और तभी से वे हनुमान के प्रति बहुत प्रसन्न हैं। अंगद ने मन ही
यह विचार किया कि रावण के सिर पर जो रत्न-जड़ा मुकुट है वही ले
मैं राम के पास जाऊंगा जिसको देखकर राम निःसन्देह प्रसन्न हों
बालिपुत्र प्राचीर पर बैठा था उछल कर रावण पर जा गिरा। सिंहासन
बैठे रावण ने उसे पकड़ लिया। एक दूसरे से उलझ कर वे जमीन पर
गिरे। दोनों के भार से धरती डगमगाने लगी, मानों ऊपर गगन में इ
और गरुड़ का युद्ध हो रहा हो। सिंहनाद करते हुए दोनों ऐसे जूझने
मानों दो सिंह हों। दोनों में मल्लयुद्ध होने लगा और सभी लोग भया
हो गये। बालि-तनय ने रावण को धर पटका और उसका मुकुट लेकर तु
गगन में चढ़ गया। अंगद के पराक्रम से रावण डर के मारे काँपने लग
उठकर सिर झुकाये बदन की धूल झाड़ने लगा। रावण के पास इ
सेनापति थे और इतने वीरों के रहते हुए रावण की ऐसी दुर्दशा हुई॥ ७४॥

रावण ने कहा, तुम लोग किस काम के हो? तुम लोगों के रहते ब

वीरगण बले, शुन लंका-अधिकारि ❋ आपनि हारिले मोरा कि करिते पारि
तव सने युद्ध करे बालिर नन्दन ❋ मोरा भावि पाछे लय सवार जीवन
चारि वीर धरे छिल तारे सावधाने ❋आछाड़िया अंगद मारिल सबे प्राणे७५
पात्र मित्र सहित चिन्तित दशानन ❋ वैरी काँपाइया गेल बालिर नन्दन
एक लाफे पड़े गिया वानर भितर ❋ श्रीरामे भेटिल, यथा सुग्रीव वानर
शत्रुर मुकुट दिल राम विद्यमान ❋ देखिया वानर सब करिछे बाखान
मुकुट देखिया राम सहास्यवदन ❋ तुष्ट हये अंगदेरे देन आलिंगन
चारि द्वारे शुनि वानरेर हुलाहुलि ❋ अंगदेरे पुष्प देय अंजलि अंजलि
श्रीराम बलेन, वीर, कह त कुशल ❋ किमते भेटिले गिया सेइ महाबल
रघुपति अनुमति करिल तत्पर ❋ अंगद कहिछे वार्त्ता यथा पूर्व्वापर७६

श्रीरामेर निकटे अंगद कर्त्तृक रावणेर ऐश्वर्य्य ओ अपमान ज्ञापन

श्रीरामे नोयाये माथा, अंगद कहिछे कथा, हरषित सकल वानर।
रघुमणि हरषित, सुग्रीव सुआनन्दित, लक्ष्मणेर हर्ष बहुतर ॥

मुकुट लेकर चला गया। बीरों ने कहा, सुनो लंकेश ! तुम स्वयं हार जाओ तो हम लोग क्या कर सकते हैं। बालि का बेटा तुम्हारे साथ लड़ रहा था और हम लोग सोच रहे थे कि कहीं दूसरों की जान न ले ले। चार वीर उससे लिपट गये थे, उनको उसने पटक-पटक कर मार डाला ॥ ७५ ॥

अपने पार्षदों सहित दशानन चिन्तित हो गया। शत्रु बालि-कुमार आकर सबको कँपा गया। एक ही छलांग में वह वानरों में जा उतरा और श्री राम से भेंट की, जहाँ सुग्रीव भी बैठे थे। राम के सम्मुख उसने रावण का मुकुट रख दिया तो सभी वानर उसकी प्रशंसा करने लग गये। मुकुट देखकर राम के चेहरे पर मुस्कान छा गयी और प्रसन्न होकर उन्होंने अंगद को बाहों में भर लिया। चारों द्वार पर बन्दरों का कोलाहल सुन पड़ा—सभी आकर अंगद को अंजुरी भर-भर कर पुष्प देने लगे। श्रीराम ने कहा, वीर अपना कुशल-समाचार सुनाओ। बताओ उस महाबल से तुमने किस प्रकार भेंट की। रघुपति की आज्ञा से अंगद पूरी वार्त्ता ब्योरेवार सुनाने लगा ॥ ७६ ॥

श्रीराम के समक्ष अंगद द्वारा रावण की सम्पदा और अपमान का वर्णन

श्रीराम के सम्मुख सिर झुका कर अंगद सारा विवरण सुना रहा है और सारे बन्दर हर्षमग्न हैं। राम, लक्ष्मण और सुग्रीव आनन्द से उत्फुल्ल हैं। तुम्हारे आदेश से मैं भागता हुआ लंका गया और गढ़ के भीतर प्रवेश कर गया।

तोमार आरति पेये, लंकाय गेलाम धेये, प्रवेशनु गड़ेर भितर ।
सुवर्णेर आउयास येन चन्द्र परकाश, तथि शोभे प्रवाल प्रस्तर ॥
विश्वकर्म्मा कृत घर, देखि अति मनोहर, चारिभिते काञ्चन देयाल ।
श्वेत रक्त नील पीत, प्रस्तरेते सुशोभित, ताहे शोभे रतन मिशाल ॥
गेलाम राजार घर, देखि सैन्य बहुतर, खाण्डा जाठि विचित्र निर्म्माण ।
सोनोर पाटेर पड़ा, नाना वर्ण देखि घोड़ा, हस्ती सब पर्व्वत प्रमाण ॥
देखिलाम सरोवरे, हंस-हंसी केलि करे, घाट सब विचित्र निर्म्माण ।
कमल कुमुदोपरे, केलि करे मधुकरे, रूपसी राक्षसी करे स्नान ॥
देखिलाम नारीगण, रूपे मोहे त्रिभुवन, दुइ कर्णे रत्नेर कुण्डल ।
पारिजात माला हारे, शोभे नाना अलंकारे, येन चन्द्र गगनमण्डल ॥
वीणा वाँशी बाजे ताय, केह वा संगीत गाय, गाने करे मोहित संसार ।
नाना आभरण परि, येन स्वर्ग विद्याधरी, रूपे येन देव अवतार ॥
देखिलाम पुष्पवन, मयूर मयूरीगण, क्रीड़ा करे मुग्ध कामरसे ।
प्रति गाछे पिकध्वनि, बड़इ मधुर शुनि, भ्रमर भ्रमरी रसे भासे ॥
गेलाम राजार पाश, चतुर्द्दिके महोल्लास, रावणेरे भर्त्सिनु विस्तर ।
यतेक बलिले तुमि, द्विगुण शुनाइ आमि, कोपे ज्वले राजा लंकेश्वर ॥

वह सब सुवर्ण से बने आवास हैं, मानों चन्द्रमा के प्रकाश से जगमगा रहे हों और प्रवाल-प्रस्तर से बने निर्माण-कार्य हैं। विश्वकर्मा द्वारा बनाए हुए मनोहर सारे भवन हैं और चारों ओर कांचन के बने प्राचीर हैं। सफेद नीले, लाल, पीले पत्थरों से वे सुशोभित हैं जिनमें स्थान-स्थान पर रत्न जड़े हैं। राजा के महल में भी गया। तरह-तरह के सैन्य हैं जिनके हाथों में खड्ग और लौहदंड शोभित हैं। विभिन्न वर्ण के घोड़े हैं और पहाड़ के समान हाथी। देखा, सरोवर में हंस-हंसिकाएँ केलि कर रही हैं और उनमें अद्भुत सारे घाट बने हुए हैं। कमल और कुमुद पर मधुकर गुंजन कर रहे हैं और जल में रूपवती राक्षसी स्नान कर रही हैं। ऐसी नारियों को भी देखा जिनके रूप से त्रिभुवन मुग्ध है, जिनके कानों में रत्नजड़े कुंडल लटक रहे हैं। गले में पारिजात की माला है। वे विभिन्न अलंकारों से गगनमंडल में चन्द्रमा के समान सुशोभित हैं। वहाँ कहीं पर वीणा और वंशी का वादन हो रहा है तो कहीं संगीत का गायन हो रहा है; गीत-वाद्य से सारा संसार प्रमुदित है। विभिन्न आभरणों से सज्जित नारियाँ मानों स्वर्ग की विद्याधरियाँ हों, अथवा दिव्य अवतार हों। वहाँ फुलवाड़ियाँ भी देखीं जिनमें मयूर-मयूरियाँ मुग्ध कामरस से क्रीड़ा कर रही हैं। प्रत्येक वृक्ष पर कोयल मधुर स्वर में कूक रही है और भँवरे गुंजन कर

आज्ञा दिल लंकेश्वर, धरे चारि निशाचर, लाफ दिनु प्राचीर उपर ।
चारि जने संहारिया, रावणेरे गालि दिया, शून्य पथे आइनु सत्वर ।।
शुनिया अंगदवाणी, हरषित रघुमणि, अंगदेरे दिलेन प्रसाद ।
सरस्वती परकाश, विरचिल कृत्तिवास, वानरेर जयजय-नाद ।। ७७
श्रीराम बलेन हे अंगद युवराज * तोमार पिताके मारि पाइलाम लाज
से सकल दुःख किछु ना करिह मने * तोमारे बाड़ाब आमि अशेष सम्माने
दक्षिणेर द्वारे जाह आपनार थाना * तव कोपे दशानन पाछे देय हाना
विदाय हइया जाय दक्षिणेर द्वार * कृत्तिवास राचिल अंगद रायवार७८

इन्द्रजितेर प्रथम वार युद्धे गमन एवं नागपाश द्वारा श्रीरामेर लक्ष्मणेर वन्धन

अंगदेर भर्त्सने कुपित दशमुख * असम्मान लज्जाय हइल अधोमुख
बहुकोटि सेनापति प्रधान प्रधान * जुझिवारे सवाकारे करे संविधान
सप्त स्वर्ग जिनिलाम सप्त ये पाताल * मम डरे देवगण काँपे सर्व्वकाल

रहे हैं। राजा के पास गया और उसको बहुत डाँटा-फटकारा। आपने मुझ से जितना बताया था उसका दुगुना मैंने कह सुनाया और राजा लंकेश्वर क्रोध से तिलमिलाने लगा। लंकेश्वर की आज्ञा से उसके चार अनुचरों ने मुझको पकड़ लिया तो उन चारों का बध कर रावण को बुरा-भला कह कर मैं शून्य पथ से तुरन्त लौट आया। अंगद की बातें सुनकर रघुनाथ बहुत प्रसन्न हुए और अंगद को उन्होंने प्रसाद दिया। बन्दरों ने इस पर जय-घोष किया।। ७७ ।।

श्रीराम ने कहा, हे युवराज अंगद! तुम्हारे पिता को मारकर मुझको बड़ी लज्जा मिली। उन बातों का कुछ ख्याल न करना, तुमको मैं अमित सम्मान का अधिकारी बनाऊँगा। जाओ दक्षिण-द्वार पर अपना मोर्चा जाकर संभालो, कहीं तुमपर कुपित रावण उस पर हमला न कर दे। अंगद विदा लेकर दक्षिण-द्वार की ओर चला। कृत्तिवास ने अंगद के दौत्य-विवरण को प्रस्तुत किया ।। ७८ ।।

इन्द्रजीत का पहली बार युद्ध में जाना और नागपाश द्वारा
राम-लक्ष्मण को बाँधना

अंगद की भर्त्सना सुनकर दशानन बहुत क्रोधित हो गया, लज्जा और अपमान से उसका सिर झुक गया। मुख्य-मुख्य सेनापतिओं को बुलाकर सभी को युद्ध करने का आवाहन किया। मैंने सातों स्वर्ग और सातों पाताल पर विजय प्राप्त की, मुझसे देवता सदा भय के मारे काँपा करते हैं।

इन्द्र यम सूर्य्य मम डरे नाहि आँटे ❋ एत दूरे आसिया वानर बेटा ठाटे
इन्द्रजित, बलि तोमा सवार प्रधान ❋ राम लक्ष्मणेरे मारि राखह सम्मान
हस्ती घोड़ा ठाट आदि लह त अपार ❋ आजिकार युद्धे मार तार चारिद्वार
सावधान हये बापू, कर गिया रण ❋ आगे मार अंगदेरे, शेषे अन्यजन ७९
बापेर दुलाल बेटा वीर मेघनाद ❋ सर्व्वांग भरिया परे राजार प्रसाद
साजिल से मेघनाद, बापेर आरति ❋ लेखा जोखा नाहि, यत साजे सेनापति
सारथि आनिल रथ संग्रामे गहन ❋ मनोमत रथखान करिल साजन
कनक रचित रथ विचित्र निर्म्माण ❋ वायुवेग अष्टघोड़ा रथेर योगान
पर्वतीय घोड़ा मुखे हीरार बिम्बकी ❋ क्षणे रथखान देखि क्षणे हये लुकि
स्वर्ण रौप्य साजे रथ करे झिकिमिकि ❋ अष्ट अक्षौहिणी ठाट योद्धा ये धानुकी
दशकोटि हाती चले विशकोटि घोड़ा ❋ पञ्चविंश कोटि चले शेल ओ झकड़ा
नानामत रथ लये योगाय सारथि ❋ नाना अस्त्र लये चले सब योद्धपति
पितृ प्रदक्षिण करि रथे गिया चड़े ❋ विंशति योजन पथ सैन्य आड़े जोड़े

इन्द्र, यम, सूर्य मेरे सम्मुख डरते रहते हैं और इतनी दूर आकर यह निगोड़ा बन्दर मेरी खिल्ली उड़ा गया। सुनो इन्द्रजीत, तुम सबके प्रधान हो, राम लक्ष्मण को मार कर मेरे सम्मान की रक्षा करो। असंख्य हाथी, घोड़े और सेना लेकर हमला करो और आज युद्ध में उसको चारों ओर से घेर कर मारो। सावधान होकर रण में जाओ और सबसे पहले उस अंगद का वध करो और बाद में अन्य लोगों का ॥ ७९ ॥

वीर मेघनाद बाप का लाड़ला बेटा है। सारे अंगों पर राजा के प्रसाद के रूप में आभूषण पहन कर, पिता का आदेश लेकर चल पड़ा। उसके साथ असंख्य सेनापति भी सुसज्जित हुए। सारथी अपने रथ को घनघोर संग्राम में ले आया। रथ को अपने मनमाने ढंग से उसने सुसज्जित किया। कनकनिर्मित रथ की बनावट भी विचित्र है। पवन की गति वाले आठ घोड़े उस रथ में जोते गये। पर्वतीय घोड़ों के मुख हीरक-बिम्बकी आभूषण से सुसज्जित हैं। सोना और चाँदी से बना रथ चमचमा रहा है—कभी दिख जाता है तो कभी आँखों से ओझल हो जाता है। धनुर्धारी योद्धाओं की दस अक्षौहिणी सेना चल पड़ी। साथ में दस करोड़ हाथी और बीस करोड़ घोड़े भी चले। पच्चीस करोड़ शेल और झकड़ा नामक अस्त्र भी साथ हैं। विभिन्न प्रकार के रथ लेकर सारथी आए और विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र लेकर योद्धागण भी। पिता की प्रदक्षिणा कर वह रथ पर

कटकेर पदभरे कम्पिता मेदिनी ❋ कटकेते वाद्य बाजे तिन अक्षौहिणी
सहस्र दगड़ बाजे, सहस्र काहाल ❋ कोटि कोटि घण्टा बजे मृदंग विशाल
भेउरी झांझरी बाजे त्रिशकोटि काड़ा ❋ कांस्य करताल बाजे तिन लक्ष पड़ा
घन घन बाजे ताय कत कोटि दामा ❋दण्डी ओ महरी बाजे नाहि तार सीमा
सहस्र भोरंग बाजे डम्फ कोटि कोटि ❋ दश लक्ष दगड़ेते घन पड़े काठि
बहु लक्ष शिंगा बाजे अति खरशान ❋ कत कोटि बाजे सिन्धु आर विन्दुयान
विरान्नइ कोटि बाजे धुरि ओ महरी ❋ त्रिशकोटि शानाइ बाजे आर ये झांझरी
खमक ठमक बाजे पन्चाश हाजार ❋ विशकोटि बाजिछे पाखज ओ रसार
नाना शब्द करि बाजे पायेर नूपुर ❋ माल साट मारे केह शब्द जाय दूर
बाजे स्वर मंगल साताश लक्ष काँसी ❋ मृदुस्वरे बाजिछे आटाश लक्ष वाँशी
वाद्य शब्द देवतार मने लागे त्रास ❋ सहस्र सहस्र बाजे रुद्रक पिनाश
डहर विशाल ढाक बाजे जयढोल ❋ समस्त पृथिवी जुड़े उठे गण्डगोल
राक्षस कटक भरे पृथिवीर काँप ❋ हाथी घोड़ा रथ नड़े हये एक चाप८०

जाकर बठा। उसकी सेना लम्बाई-चौड़ाई में बीस योजन रास्ता छके हुए है। कटक के पदचाप से पृथ्वी डगमगाने लगी। तीन अक्षौहिणी सैन्य में मारू वाद्य बज रहा है। हजार-हजार नगाड़े बज रहे हैं और करताल भी हजार-हजार; करोड़ों घंटियाँ बज रही हैं और विशालाकार मृदंग भी, झाँझरी और झाँझ बज रहे हैं और तीस करोड़ डफली भी। काँसे के मंजीरे भी तीन लाख बज रहे हैं। द्रुतलय में कितने ही करोड़ दमामे बज रहे हैं। दंडी और अद्भुत डुगडुगियाँ भी असंख्य बज रही हैं। सहस्र भेरियाँ बज रही हैं और करोड़ों डफ भी। दस लाख धौंसे पर दनादन चोब बरस रही है, कई लाख सींगियाँ उच्च स्वर से बज रही हैं, कितने ही करोड़ दुन्दुभि, बयानबे करोड़ तुरही और मौहरें बज रही हैं। तीस करोड़ शहनाई और झाँझों का वादन हो रहा है। पचास हजार खमक-ठमक बज रहे हैं। बीस करोड़ पखावज और रसार बज रहे हैं। पैरों के घूंघुर भी विभिन्न ध्वनियों से बज रहे हैं और तरह-तरह के नाद और रवों की आवाज बहुत दूर तक जा रही है। मंगल-स्वर बज रहा है और सत्ताइस लाख घड़ियाल भी। अट्ठाइस लाख बाँसुरी भी मृदु मन्द ध्वनि में बज रही हैं। सहस्रों की संख्या में ढाकें बज रही हैं और वाद्य-रव से देवताओं के मन में त्रास का संचार हो रहा है। डंके बज रहे हैं और जयढोल भी—सारी पृथ्वी पर कोलाहल छाया है। राक्षसों के कटक के भार से धरती थर्रा रही है और हाथी, घोड़े, रथ भी एक पद-चाप में समस्वर बढ़ रहे हैं॥ ८०॥

कटकेर धुलाय पृथिवी अन्धकार ❋ प्रथमे चापिल गिया पूर्व्वकार द्वार
एक चापे करे वीर वाण वरिषण ❋ गाछ ओ पाथर वरिषये कपिगण
राक्षस ओ वानरे हइल मिशामिशि ❋ कौतुक देखिछे देवगण तथा आसि
वाण जुड़े राक्षस धनुके दिया चाड़ा ❋ वानर उपरे पड़ितेछे जोड़ा जोड़ा
वानर पाथर-गाछ करे वरिषण ❋ कोटि कोटि राक्षस रणे त्यजिछे जीवन
चापड़ मुकुटि मात्र वानरेर ताड़ा ❋ मुकुटिर घाये कारो माथा हैल गुँड़ा
वाघेर येमन रूप वानरेर रंग ❋ मरणेर भय नाहि रणे नाहि भंग
उभय कटक जुझे रक्ते हैल रांगा ❋ रक्ते नदी बहे येन भाद्रमासे गंगा
घोड़ा हाती वीर आदि रक्तस्रोते भासे ❋ हरिषे वानर सैन्य मने मने हासे
तार तुल्य ढेउ उठे रक्त कलकलि ❋ युद्धेर नाहिक सीमा अधिक कि बलि
कोन युगे एइ मत युद्ध नाहि हय ❋ ज्ञान हय, असमय प्रलय उदय ८१
पूर्व्वद्वारे समर करिया यथोचित ❋ चलिल दक्षिणद्वारे वीर इन्द्रजित
अंगदेरे देखि तथा इन्द्रजित हासे ❋ गालागालि देय तारे, यत मने आसे

कटक के पैरों से उठती धूल से पृथ्वी अंधकारमयी हो गयी। पहले वे पूर्वी द्वार पर जा धमके। एक साथ ये वीर वाण चलाने लगे और वानर पेड़ और पत्थर बरसाने लगे। राक्षस और वानर वहाँ आपस में गुथ गये और देवगण वहाँ आकर कौतुक निहारने लगे। धनुष पर वाण चढ़ाकर राक्षस सन्धान करने लगे और वानरों पर वे वाण ढेर के ढेर गिरने लगे। वानर भी पेड़-पत्थर फेंकने लगे और करोड़ों राक्षस रण में प्राण त्यागने लगे। वानरों का आक्रमण केवल मुक्के और झाँपड़ के माध्यम से हो रहा है। झाँपड़ खाकर किसी का सिर टूट गया। व्याघ्र का जैसा रूप होता है वानरों का भी वैसा ही रंग-ढंग है। न तो उनको मृत्यु का कोई भय है और न वे युद्धक्षेत्र से भागते ही हैं। दोनों सेनाएँ जूझ रही हैं और रक्त से चारों ओर लाली छा गयी है। खून की नदी बहने लगी है मानों भादों के महीने की गंगा हो। घोड़ा, हाथी, वीर सभी खून के प्रवाह में बह रहे हैं। हर्ष से वानरी-सेना मन ही मन हँस रही है। रक्त में खलबली मची हुई है और युद्ध मानों एक उत्ताल तरंग के समान बढ़ता ही जा रहा है। किसी भी युग में ऐसा घमासान युद्ध नहीं हुआ। प्रतीत होता है असमय ही प्रलय आ गया है॥ ८१॥

पूर्वी द्वार पर यथोचित युद्ध करने के पश्चात वीर इन्द्रजीत दक्षिण द्वार की ओर चला। वहाँ अंगद को देखकर इन्द्रजीत हँसने लगा। जी भर कर उसको गालियाँ दी। मेरे बाप को गाली देकर डर से तू भाग गया,

मोर बापे गालि दिया पलाइलि डरे ❋ आय तोर कोन बाप आजि रक्षा करे
बापके मारिया तोर माके दिलि आने ❋ धिक् रे वानरा तोर लाज नाहि मने
यार शरे मरे तोर पिता बालिराज ❋ धिक् तोरे अधम करिस तार काज
खाइब घाड़ेर मांस कामड़ाब मास ❋ मोर हाते आज तोर निश्चित विनाश
देशेते जीयन्त जाबि ना करिस साध ❋ अन्य जन नहि आमि वीर मेघनाद ८२
अंगद बलिछे, रे, गर्जिस अकारण ❋ पदाघाते आजि तोर लइब जीवन
मारिते गेलाम तोरे लंकार भितर ❋ से कोप पड़िल चारि राक्षस उपर
योगिवेशे तोर बाप सीतादेवी हरे ❋ तार पापे मोर बाप मरे एक शरे
तार पापे पड़े रणे त्रिशिरा कबन्ध ❋ तोर बापेर पापेते सागरे सेतुबन्ध
तोर बाप नारीचोरा तोर रण चुरि ❋ आजि तोरे निश्चित पाठान यमपुरी
चोर-पुत्र चोर तुइ चुरि तोर रण ❋ आजिकार युद्धे तोर लइब जीवन ८३
एत शुनि इन्द्रजित् पूरिल सन्धान ❋ कोटि कोटि वानरेर लइल परान
अंगदे एड़िया सबे पलाय वानर ❋ रण मध्ये अंगद रहिल एकेश्वर
महा क्रोधे अंगद काँपिछे थर थर ❋ इन्द्रजित परे फेले पादप पाथर

देखूँ की आज तेरा कौन सा बाप आकर तेरी रक्षा करता है। अरे बानरा ! तूने अपने बाप को मरवा कर माँ को दूसरे के हाथों में सौंप दिया, तुझे धिक्कार है। तुझको शर्म भी नहीं आती, जिसके बाण से तेरे पिता बालि राजा का देहान्त हुआ तू उसी की सेवा करता है—तुझे धिक्कार है। तेरी गर्दन का मांस मैं चबाकर खा जाऊँगा, आज मेरे ही हाथों तेरा विनाश लिखा हुआ है। देश को जिन्दा वापस जायगा ऐसी साध मन में न रखना, मैं कोई सामान्य जन नहीं, मेघनाद हूँ ॥ ८२ ॥

अंगद ने कहा, अरे नाहक ही तू गरज रहा है, आज पदाघात से ही तेरे प्राण ले लूँगा। तुझको लंका के भीतर मारने गया तो मेरा क्रोध चार राक्षसों पर ही उतर पड़ा। तेरे बाप ने योगी का भेष रखकर सीता देवी का हरण किया और उसी के पाप से मेरे पिता एक बाण से मारे गये, उसी के पाप से त्रिशिरा-कबन्ध भी रण में गिरे। तेरे बाप के पाप के कारण ही सागर पर सेतु बँध गया। तेरा बाप स्त्री-चोर है और तू रण-चोर। आज ही के संग्राम में मैं तेरे प्राण लूँगा ॥ ८३ ॥

इतना सुन कर इन्द्रजीत ने धनुष पर बाण चढ़ाया और करोड़ों वानरों के प्राण चले गये। अंगद से कतरा कर सब वानर भागने लगे—रणक्षेत्र में अंगद अकेला अडिग खड़ा रहा। असह क्रोध से अंगद थरथर काँप रहा है और इन्द्रजीत पर वृक्ष और पत्थर फेंक रहा है। क्रोधित हो अंगद बीर ने

कुपिया अंगद वीर रथे मारे लाथि ※ लाथिर चोटे चूर्ण करे रथ ओ सारथि
अंगद विक्रमे इन्द्रजित काँपे त्रासे ※ लाफ दिया इन्द्रजित उठिल आकाशे
आकाशे थाकिया देखे दुइ सैन्य रण ※ राक्षस वानरे युद्ध नहे निवारण ८४
प्रचण्ड राक्षस एल हये आगुयान ※ सम्पाति वानरे मारे तिनशत वाण
वाण खेये सम्पाति ये हइल विवर्ण ※ उपाड़िया आने वृक्ष नामे अश्वकर्ण
अश्वकर्ण वृक्ष धरि दिल तिन पाक ※ वायुवेगे घुरे येन कुमारेर चाक
एड़िलेक गाछ-गोटा करिया हुंकार ※ वृक्षाघाते प्रचण्ड हइल चूरमार
सम्पाति वानर वीर प्रचण्डे मारिया ※ असंख्य राक्षस मारे लेजे जड़ाइया
चारि वीर लेजे बाँधि मारिल आछाड़ ※ भांगिल माथार खुलि, चूर्ण हैल हाड़
तपन नामे निशाचर आइल गजस्कंधे ※ संधान पूरिया वाण नील वीरे विन्धे
वाण खेये नील वीर उठि दिल रड़ ※ चड़िया हातीर कांधे तारे मारे चड़
चड़-चापड़ेते गेल दुइ आँखि उड़े ※ संग्रामेर माझेते तपन गेल पड़े ८५
रथे चड़ि आइल विद्युन्माली नाम ※ वानरेर संगे करे दुर्ज्जय संग्राम

रथ पर लात जमा दी और रथ एवं सारथि दोनों चूर्ण-चूर्ण हो गये। अंगद का पराक्रम देख इन्द्रजीत त्रास से काँपने लगा। छलांग मारकर वह आकाश में चढ़ गया आकाश में रह कर वह दोनों सेनाओं का युद्ध देखने लगा। राक्षस-वानर के युद्ध में कोई विराम नहीं ॥ ८४ ॥

प्रचंड नामक राक्षस आगे बढ़ आया और सम्पाति नामक वानर पर तीन सौ वाण फेंके। वाण की चोट खाकर सम्पाति व्याकुल हुआ और वह लपककर एक शालवृक्ष उखाड़ लाया। वृक्ष को पकड़ कर उसको उसने तीन बार घुमाया। इतनी जोर से वह घूमा मानों कुम्हार का चाक हो। हुंकार के साथ पेड़ को उसने चलाया, पेड़ के प्रहार से प्रचंड चूर-चूर हो गया। वीर प्रचंड का निधन करने के उपरान्त सम्पाति वानर ने पूँछ में लपेट कर असंख्य राक्षसों का वध किया। चार वीरों को पूँछ में लपेट कर उसने पटक दिया। उनके शिर फूट गये और हड्डियाँ चूर-चूर हो गयीं। हाथी पर सवार हो तपन नामक निशाचर आया। नील वीर को निशाना बनाकर उसको वाण से बींध डाला। वाण से चोट खाकर नील वीर दौड़ पड़ा और हाथी के कन्धे पर चढ़कर उसको झापड़ मारने लगा। झापड़ की चपेट में उसकी दोनों आँखें जाती रहीं और वह युद्ध क्षेत्र में जा गिरा॥ ८५ ॥

विद्युन्माली नामक राक्षस रथ पर सवार आया। वह वानरों के साथ घनघोर संग्राम करने लगा। ऐसे ही समय उसने हनुमान को देखा और

हेनकाले हनूमाने देखिल सम्मुखे ❊ तिनशत वाण मारे हनूमानेर बुके
वाण खेये हनूमान भीत नहे चिते ❊ लाफ दिया उठिल विद्युन्मालीर रथे
रथेते उठिया तार धरिलेक चूले ❊ टानाटानि करि तारमाथा छिंड़िफेले ८६
रणेते प्रवेश करे सुवर्ण राक्षस ❊ एकेबारे मद खाय साताश कलश
सोनार उपर तार सोनार वाहार ❊ रावण कटके आसि छाड़े हुहुंकार
खाँड़ा धरे कखन, कखन धनुर्व्वाण ❊ वानर कटक कोटि कैल खान खान
घोर अन्धकार हैल सेइ रण स्थले ❊ वानर कटक सब धरे धरे गिले
रणस्थले वानरेर देखिया दुर्गति ❊ आइल दारुण कोपे नील सेनापति
कुपिया से नील वीर चारिदिके चाय ❊ विद्युन्मालीर रथ-चक्र एक पाय
उपाड़िया चाका गोटा तुलि निल हाते ❊ दानवे रुषिल येन देव जगन्नाथे
एड़िलेक चाका गोटा तुलि बाहुबले ❊ अन्तरीक्षे फिरे चाका गगनमण्डले
वायुवेगे आसे चाका, कि कहिब कथा ❊ चाकार धारे काटिपाड़े सुवर्णेर माथा ८७
सुषेण वानरराज राजार श्वशुर ❊ दुइ पुत्र लये बुड़ा जुझिछे प्रचुर
जुझिते जुझिते बुड़ार बेड़े गेल रंग ❊ लाफ दिया उठे येन वयस तरंग

हनुमान के सीने पर तीन सौ वाण प्रहार किये। वाण खाकर हनुमान कुछ भी भयभीत न हुए, वरन् उछल कर विद्युन्माली के रथ पर जा धमके। रथ पर चढ़कर उन्होंने विद्युन्माली के झोंटे धरे और खींच-खाँच कर उसका सिर धड़ से अलग कर दिया ॥ ८६ ॥

अब रण में सुवर्ण राक्षस ने प्रवेश किया। यह एकबारगी सत्ताईस घड़ा मदिरा पीता है। 'सुवर्ण' पर सुवर्ण की बहार है। वानर कटक के बीच आकर उसने हुंकार भरी। कभी तो वह हाथ में खड्ग ले लेता तो कभी धनुष-वाण। वानरी-सेना को काट-काट कर टुकड़े-टुकड़े करने लगा। रणक्षेत्र में अंधेरा छा गया और वानरों को पकड़-पकड़ कर वह लीलने लगा। समरभूमि में वानरों की दुर्दशा देखकर नील-सेनापति क्रोध से आगे बढ़ आए। चारों ओर क्रोध से निहारकर उनकी आँखें विद्युन्माली के रथ के चक्र पर पड़ीं। समूचा पहिया उखाड़ कर उन्होंने हाथ में ले लिया मानों दानवों पर देव जगन्नाथ कुपित हो गये। समूचे पहिये को घुमा कर ऊपर की ओर फेंका। पहिया गगन-मंडल में चक्कर लगाकर वायुवेग से नीचे उतरा और सुवर्ण का सिर काट कर फेंक दिया ॥ ८७ ॥

वानर-राज सुषेण राजा के श्वसुर हैं। अपने दोनों पुत्रों को लेकर वृद्ध खूब लड़ रहा है। लड़ते लड़ते बूढ़ा तरंग में आ गया—ऐसी छलांग भरने

जुझिते जुझिते बुड़ा पड़े गेल भोले ❊ दश विश राक्षस चापिया धरे कोले
बुड़ार चापड़े चड़े कर्णे तालि लागे ❊ निमिषे राक्षस सब लंका मध्ये भागे८८
युझेन लक्ष्मण वीर सुमित्रानन्दन ❊ अवसन्न नहे वीर प्रथम यौवन
रघुवंशे उद्भव लक्ष्मण महामति ❊ सूर्य्येर किरण वीर शशधर ज्योति
उदयास्त युझे वीर, नाहि अवसान ❊ धन्य शिक्षा वीरेर से, धन्य धनुर्व्वाण
मारे लक्ष निशाचरे चक्षुर निमिषे ❊ राक्षस सहस्र कोटि मारे वेला शेषे
लक्ष्मणेर युद्ध देखि देवतार धन्ध ❊ तिन लक्ष राक्षसेर काटि पाड़े स्कन्ध
रक्ते नदी बहे वाटे, रक्ते उठे फेना ❊ लक्ष्मणेर वाणे पड़े राक्षसेर थाना
वाद्यभाण्ड भंग दिया पलाइल त्रासे ❊इन्द्रजित देखे ताहा थाकिया आकाशे८९
पिता मोर कटक सँपिल हाते हाते ❊ राखिते नारिन ठाट जाइब किमते
अग्निकेतु भस्मकेतु विक्रमे विशाल ❊ बज्रदन्त वीर पड़े लंकार कोटाल
पड़े शठ निशठ साक्षात् यमदूत ❊ अक्षय राक्षस पड़े समरे अद्भुत

लगा मानों नई जवानी से भरा हो। लड़ते-लड़ते बूढ़ा जोश में आ गया और दस-बीस राक्षसों को बाहों में दबोच लेने लगा। बूढ़े के झापड़ और तमाचों की आवाज से कान बहरे होने लगे। क्षण भर में सारे राक्षस लंका के भीतर भागने लग गये ॥ ८८ ॥

सुमित्रा-नन्दन वीर लक्ष्मण लड़ रहे हैं। उनकी नई जवानी है और उनमें नाम मात्र भी अवसाद नहीं है। महामति लक्ष्मण का जन्म रघुवंश में हुआ है, सूर्य की किरणों और चन्द्रकान्ति के सदृश वह दीप्तिमान् हैं। प्रात: से सन्ध्या तक वीरवर लड़ते रहे, उनमें थकान नहीं आई; धन्य है इस वीर की शिक्षा और धन्य हैं उसके धनुष-वाण। पलक झंपते ही लाख निशाचरों को मार गिराता। दिन ढलते-ढलते उसने सहस्र-कोटि राक्षस मार डाले। लक्ष्मण का युद्ध देखकर देवता चकित रह गये। तीन लाख राक्षसों के सिर काट कर फेंक दिये। खून से राह में नदी बहने लगी और उसमें लहरें और फेन उठने लगे। लक्ष्मण के वाणों से राक्षसों का मोर्चा टूट गया। गाजा-बाजा लेकर वे त्रास से भाग खड़े हुए। इन्द्रजीत ने आकाश में रहकर यह सब देखा ॥ ८९ ॥

पिता ने मेरे हाथों में सेना को सौंपा—उस सेना को मैं नहीं रख सका ! अब मैं किस प्रकार से लौट सकूँगा ? पराक्रमी अग्निकेतु भस्मकेतु और लंका के कोतवाल वीर बज्रदन्त भी गिर गये। साक्षात् यमदूत जैसे शठ-निशठ भी पराभूत हुए। समर में बेजोड़ अक्षय राक्षस का भी निधन हो गया।

काक्क पॉरुळा अडक्कत्तै आक्कम्
अदनिनूङ् किल्लै उयिर्क्कु ॥ २ ॥

रहो सचेत आत्मसंयम पर, सर्वोपरि उसको निधि[1] मान ।
इससे अधिक आत्मा के हित में है नहीं और कल्यान ॥ २ ॥

आत्म-संयम वह अमूल्य निधि है जिसकी बड़ी सतर्कता से निगरानी करना चाहिए। अपनी आत्मा के लिए इससे अधिक कोई श्रेयस्कर लाभ नहीं है ॥ २ ॥

शॅऱिवऱिन्दु शीर्मै पयक्कुम् अऱिवऱिन्
ताट्ऱिन् अडङ्गप् पॅऱिन् ॥ ३ ॥

वही ज्ञानियों में ज्ञानी है, जिसको भलीभाँति है ज्ञान—
'इन्द्रियादि मन पर संयम से बनता है सत्पुरुष महान्' ॥ ३ ॥

जो व्यक्ति ज्ञानी है और अपने आत्म-संयम को सँजोये रहता है वही ज्ञानियों में अग्रगण्य रहता है ॥ ३ ॥

निलैयिर् ऱिरिया तडङ्गियान् तोट्ऱम्
मलैयिनुम् माणप् पॅरिदु ॥ ४ ॥

अविचल अचल सदा संयम पर अतुलनीय संयमी-स्वरूप ।
भव्य[2] मेरु गिरि से भी सुन्दर तेजस्वी का तेज अनूप ॥ ४ ॥

अविचल रूप से जो आत्म-संयम को रखते हैं वे मेरु से भी अधिक सुन्दर दीखते हैं ॥ ४ ॥

ऍल्लार्क्कुम् नऩ्ऱाम् पणिदल् अवरुळ्ळुम्
शॅल्वर्क्के शॅल्वन् तगैत्तु ॥ ५ ॥

सदा आत्मसंयम श्रेयस्कर सब के हित में एक समान ।
संयम-धन से किन्तु धनी होते हैं अधिक और श्रीमान्[3] ॥ ५ ॥

आत्म-संयम सब के लिए अच्छा है। धनवानों के लिए तो आत्म-संयम धन से भी अधिक धन है ॥ ५ ॥

ऑरुमैयुळ् आमैपोल् ऐन्दडक्कल् आट्ऱिन्
ऍऴुमैयुम् एमाप् पुडैत्तु ॥ ६ ॥

---

१ खजाना २ शानदार, अति सुन्दर ३ धनवान् ।

पंच इन्द्रियों को वश में कर, ले समेट कछुए की भाँति।
सात जन्म तक सुलभ संयमी को सर्वदा सुखद सुख-शान्ति ॥ ६ ॥

यदि कोई कछुवे की तरह पाँचों इन्द्रियों पर संयम रख सके तो उसे सात जन्मों तक सुख-शान्ति प्राप्त होगी ॥ ६ ॥

यागावार् आयिनुम् नागाक्क कावाक्काल्
सोगाप्पर् सॉल्लिऴुक्कुप् पट्टु ॥ ७ ॥

अन्य इन्द्रियों की अपेक्षा जिह्वा पर निग्रह[1] अनिवार्य।
कटुवाणी की क्षणिक भूल से होते बड़े-बड़े अपकार्य[2] ॥ ७ ॥

चाहे किसी भी वस्तु की निगरानी न की जाय, परन्तु जिह्वा को वश से रखना आवश्यक है। जिह्वा की एक तुच्छ गलती अति दुख का कारण बन जाती है ॥ ७ ॥

ऑन्ऱानुम् तीच्चॉल् पॉरुट्पयन् उण्डायिन्
नन्ऱागा ताकि विडुम् ॥ ८ ॥

एक बार भी किसी हृदय पर कटु वयनों से पहुँचा कष्ट।
उसके दुख से आजीवन के पुण्य-धर्म होते सब नष्ट ॥ ८ ॥

एक अपशब्द के कहने से यदि किसी को पीड़ा पहुँचती है तो सारे पुण्यों का श्रेय समाप्त हो जाता है ॥ ८ ॥

तीयिनाऱ् शुट्टपुण् उळ्ळारुम् आऱादे
नाविनाऱ् शुट्ट वडु ॥ ९ ॥

जल कर पड़े फफोले, पाकर समय, एक दिन होते शान्त।
किन्तु 'बात की चोट' अमिट! जीवन-पर्यन्त न होती अन्त ॥ ९ ॥

जलने से जो फफोले पड़ जाते हैं वे भी एक दिन स्वस्थ हो जाते हैं, परन्तु जिह्वा द्वारा की गई चोट कभी ठीक नहीं होती ॥ ९ ॥

कदम्कात्तुक् कट्रडङ्गल् आट्रुवान् सॅव्वि
अऱम्पार्क्कुम् आट्रिन् नुऴैन्दु ॥ १० ॥

जिसे इन्द्रियों पर संयम है, जिसके वश में क्रोध-विकार।
उसी आत्मा के स्वागत में रहता स्वयं धर्म तैयार ॥ १० ॥

---

१ संयम, रोक २ अनिष्ट।

जो दृढ़ता से इन्द्रियों और क्रोध पर संयम रखता है उसकी आत्मा को धर्म स्वयं चल कर मिलता है ॥ १० ॥

अदिकारम् (अध्याय) १४

ऑऴुक्कमुडैमै (सदाचरण)

ऑऴुक्कम् विऴुप्पम् तरलान् ऑऴुक्कम्
उयिरिऩुम् ओम्ब्प् पडुम् ॥ १ ॥

सदाचार से मानव जग में होता कीर्तिमान है धन्य।
प्राणाधिक इस सदाचरण की सदा सुरक्षा करो अनन्य ॥ १ ॥

सद्-आचरण से कीर्ति उपलब्ध होती है। सदाचरण [और शिष्टाचार] की रक्षा अपने जीवन से भी अधिक मूल्यवान् समझ कर करनी चाहिए ॥ १ ॥

परिन्दोम्बिक् काक्क ऑऴुक्कम्; तॅरिन्दोम्बित्
तेरिऩुम् अक्दे तुणै ॥ २ ॥

सब-गुण से सम्पन्नों का भी सदाचार बिन कहाँ निबाह ?
जीवन में सर्वदा सहायक—'सदाचरण' की पकड़ो राह ॥ २ ॥

सदाचरण की सुरक्षा पूरी तरह करनी चाहिए, क्योंकि सर्वगुणों से सम्पन्न रहते हुए भी, सदाचरण ही [जीवन में] सर्वोपरि सहायक सिद्ध होता है ॥ २ ॥

ऑऴुक्कम् उडैमै कुडिमै इऴुक्कम्
इऴिन्द पिऱप्पाय् विडुम् ॥ ३ ॥

शिष्ट-सदाचारी जीवन है श्रेष्ठ कुलीनों की पहचान।
सदाचार से रहित पतित होते हैं बड़े-बड़े कुलवान् ॥ ३ ॥

सद्-आचरण ही कुलीनता का [वास्तव में] प्रतीक है। दुराचरण जीवन को पतित और अधम बनाता है [केवल उच्चकुल में जन्म सदाचारविहीन को पतन से बचा नहीं सकता।] ॥ ३ ॥

मऱ्प्पिऩुम् ओत्तुक् कॉळलाकुम् पार्प्पाऩ्
पिऱप्पॉऴुक्कम् कुऩ्ऱक् कॅडुम् ॥ ४ ॥

विप्र, भले ही विस्मृत[1] वेदों पर कर सकें पुनः अधिकार,
पतित-आचरन की कुलीनता का सम्भव न कभी उद्धार ॥ ४ ॥

ब्राह्मण, वेदों को भूलने के बाद उन्हें शीघ्र पुनः ग्रहण कर सक है; परन्तु सदाचार-विहीन होने पर तो [ब्राह्मण] अपनी कुलीन [एवं श्रेष्ठता] को सदा के लिए गवाँ देता है ॥ ४ ॥

अऴुक्का ऱुडैयाऩ्कण् आक्कम्पोऩ् ऱिल्लै
ऑऴुक्क मिलाऩ्कण् उयर्वु ॥ ५ ॥

परसन्ताप-ईर्ष्या[2] से जीवन में सुलभ न धन-संयोग ।
उसी भाँति आचारहीन को दुर्लभ सदा सुयश का योग ॥ ५ ॥

ईर्ष्यालु व्यक्ति इस जीवन में कभी धन नहीं प्राप्त कर सक है, उसी प्रकार निम्न आचरण का व्यक्ति कभी कीर्ति नहीं प्राप्त क सकता ॥ ५ ॥

ऑऴुक्कत्तिऩ् ऑल्कार् उरवोर् इऴुक्कत्तिऩ्
एदम् पडुपाक् कऱिन्दु ॥ ६ ॥

सदाचरण-सन्मार्ग न तजते कभी संयमी व्यक्ति महान्;
'अधमाचारी का विनाश निश्चय'—है उन्हें सर्वथा ज्ञान ॥ ६ ॥

संयमी जन कभी भी सदाचरण से पृथक् नहीं होते, क्योंकि वे जान हैं कि निम्न आचरण से विनाश के भागी होंगे ॥ ६ ॥

ऑऴुक्कत्तिऩ् ऍय्दुवर् मेऩ्मै इऴुक्कत्तिऩ्
ऍय्दुवर् एय्दाप् पऴि ॥ ७ ॥

सदाचार पर चल कर मानव को उपलब्ध सुयश-सम्मान ।
पतित-आचरण से मानव के पल्ले बस कलंक-अपमान ॥ ७ ॥

सदाचरण के द्वारा मनुष्य कीर्ति और प्रतिष्ठा को प्राप्त करत है । सदाचार-विहीन मानव कलंक और निरादर को प्राप्त होता है ॥ ७ ॥

---

१ भूले हुए २ किसी की उन्नति को देखकर जलना ।

नन्ऱिक्कु वित्ताकुम् नल्लॉळुक्कम् तीयॉळुक्कम्
ऍन्ऱुम् इडुम्बै तरुम् ॥ ८ ॥

सदाचार सुखस्रोत, धर्म का सदाचार है बीज स्वरूप।
वामाचार-ग्रस्त[1] मानव का जीवन सदा दुःख का रूप ॥ ८ ॥

सदाचार सद्धर्म का मूल [और परमानन्द का स्रोत] है। पतित आचरण से जीवनपर्यन्त अनन्त दुःख प्राप्त होते हैं ॥ ८ ॥

ऑळुक्कम् उडैयवर्क्कु ऑल्लावे तीय
वळुक्कियुम् वायार् शॉलल् ॥ ९ ॥

सदाचारयुत् शिष्ट जनों के मुख से अहो! स्वप्न में भूल-
कर भी नहीं निकलते अनुचित शब्द कभी कुत्सित,[2] प्रतिकूल[1] ॥ ९ ॥

सदाचारी शिष्टजनों के मुख से कभी भूल से भी अपशब्द नहीं निकलते ॥ ९ ॥

उलकत्तो टोट्ट ऑळुकल् पलकट्ऱुम्
कल्लार् अऱिविला दार् ॥ १० ॥

सदाचार से हीन, लोक-व्यवहार का नहीं जिसको ज्ञान,
ऐसे विद्यावारिधि[3] को भी गिनता कौन, भला विद्वान ? ॥ १० ॥

सर्व विद्यानिधान होते हुए भी, यदि वे लोक-व्यवहार और सदाचार से रहित हैं, तो उनकी गणना विद्वानों में नहीं हो सकती ॥ १० ॥

अदिकारम् (अध्याय) १५

पिऱन्इल् विळैयामै (परस्त्री-लोलुपता)

पिऱन्पॉरुळाळ् पॅट्टॉळुकुम् पेदैमै ञालत्
तऱम्पॉरुळ् कण्डार्कण् इल् ॥ १ ॥

लोकाचार-धर्मसमलंकृत[4] होते जो सत्पुरुष महान्,
'पर नारी से प्रेम'—न उनमें कभी उपजता यह अज्ञान ॥ १ ॥

---

१ उलटे (अनुचित) काम करने वाला २ भद्दे ३ विद्यासागर ४ धर्म के लक्षणों से युक्त।

व्यक्ति जो धर्म और लोकाचरण से युक्त होते हैं वे कभी भी किसी परस्त्री से प्रेम करने की मूर्खता नहीं करते ।। १ ।।

अऱत्तुकडै निन्ऱारुळ् ऍल्लाम् पिऱन्कडै
निन्ऱारिऱ् पेदैयार् इल् ।। २ ।।

सदाचार से विमुखों में, अधमाधम[1] निपट मूर्ख वह व्यक्ति,
जो पड़ोस के गृह में गृहिणी से घुस-पैठ मिलाता युक्ति ।। २ ।।

धर्म और सदाचार से विमुख व्यक्तियों में वे व्यक्ति सर्वाधिक मूर्ख हैं जो अपने पड़ोसी के गृह में घुस-पैठ करते हैं [क्योंकि उनको तिरस्कार और दण्ड का भय सदैव सताता है ।] ।। २ ।।

विळिन्दारिन् वेऱल्लर् मन्ऱ तॅळिन्दारिल्
दीमै पुरिन्दॉळुकु वार् ।। ३ ।।

जिनको है विश्वास—उन्हीं मित्रों की नारी से व्यभिचार !
जीवन रहते मृतक तुल्य हैं—ऐसे अधमों को धिक्कार ।। ३ ।।

अपने ऊपर भरोसा करनेवाले मित्रों की पत्नियों पर जो व्यक्ति कुदृष्टि डालते हैं वे घृणित, जीवित रहते भी मृत शरीर के समान हैं ।। ३ ।।

ऍन्नैत्तुणैयर् आयिनुम् ऍन्नाम् तिनैत्तुणैयुम्
तेरान् पिऱनिल् पुगल् ।। ४ ।।

परनारी से साँठगाँठ में जिसे न अपयश[2] का है ध्यान,
भले अतुल सम्मानयुक्त, टिक सकता कब उसका सम्मान ।। ४ ।।

व्यक्ति कितना भी सम्मानित क्यों न हो, उसके मान का क्या लाभ यदि वह किसी दूसरे की गृहिणी के साथ बदनामी सहकर भी, कुचेष्टा करे [बदनामी उसके सम्मान को नष्ट कर देगी ।] ।। ४ ।।

ऍळिदॅन इल्लिऱप्पान् ऍय्दुम्ऍञ्ञ् ञान्ऱुम्
विळियादु निऱ्कुम् पळि ।। ५ ।।

परनारी से दुराचार है जिनके लिए सहज व्यापार,
आजीवन बदनाम, कुयश का उनके लिए खुला है द्वार ।। ५ ।।

परस्त्री के साथ व्यभिचार को सामान्य समझकर जो करता है

---

१ नीचों में नीच २ बदनामी ।

वह सदा के लिए कुख्यात होता है [वह बदनामी हटना उतना ही कठिन है जितना व्यभिचार-पंक में फँस जाना सरल है।] ॥ ५ ॥

पगैपावम् अच्चम् पऴियॅन्ऱ नान्गुम्
इकवावाम् इल्लिऱप्पान् कण् ॥ ६ ॥

घृणा (शत्रुता), पाप और भय, पग-पग पर दारुण अपमान—
व्यभिचारी को इन चारों सन्तापों से[1] है कभी न त्रान ॥ ६ ॥

व्यभिचारी को, घृणा, पाप, भय और अपमान इन चारों से कभी त्राण नहीं मिल सकता ॥ ६ ॥

अऱन्इयलाल् इल्वाऴ्वान् ऍन्बान् पिऱन्इयलाळ्
पॅण्मै नयवा दवन् ॥ ७ ॥

जो कुदृष्टि से नहीं निरखता परनारी का रूप-सुरूप,
सद्गृहस्थ है वही, उसी को कहते हैं जन, धर्मस्वरूप ॥ ७ ॥

परस्त्री की सुन्दरता को जो व्यक्ति कुदृष्टि से नहीं देखता है, वही धर्मवान् सद्गृहस्थ कहा जायगा। [अन्यथा गृहस्थ के अन्य सुलक्षणों के रहते भी सद्गृहस्थ नहीं कहा जायगा।] ॥ ७ ॥

पिऱन्मनै नोक्काद पेराण्मै शान्ऱोर्क्
कऱन्ऑन्ऱो ? आन्ऱ ऑऴुक्कु ! ॥ ८ ॥

लोलुप[2] दृष्टि न परनारी पर, ऐसे जो संयमी महान्,
धर्मवान् नर वही लोक में, वही पुरुष मर्यादावान् ॥ ८ ॥

जो संयमी व्यक्ति परस्त्री को कुवासना की दृष्टि से नहीं देखते, वही [पुरुषपुंगव] धर्मवान् और [लोक में] मर्यादावान् हैं ॥ ८ ॥

नलक्कुरियार् यार्ऍनिन् नामनीर् वैप्पिऱ्
पिऱर्क्कुरियाळ् तोळ्तोया दार् ॥ ९ ॥

सिन्धु[3]-घिरी इस विस्तृत धरनी पर उनका ही विरद बखान,
परनारी से दुराचार का जिनके मन में कभी न ध्यान ॥ ९ ॥

समुद्र से घिरी इस [विशाल] पृथ्वी पर उन्हीं व्यक्तियों की प्रशंसा अनन्यता से की जाती है जिन्होंने कभी पड़ोसी की स्त्री को बाहुपाश में नहीं लिया ॥ ९ ॥

---

१ दुःखों से   २ ललचायी   ३ समुद्र।

अऱऩ्वरैयाऩ् अल्ल शॅयिऩुम् पिऱऩ्वरैयाळ्
पॅण्मै नयवामैनऩ्ऱु ॥ १० ॥

सना कुकर्मों में आजीवन, पापयुक्त अवगुण की खान,
किन्तु न उन्मुख[1] पर नारी से, ऐसा धन्य-धन्य इन्सान ॥ १० ॥

जिसने जीवन पर्यन्त अवगुण व कुकर्म ही किये हों वह व्यक्ति भी धन्य है, यदि उसने अपने पड़ोसी की स्त्री [अर्थात् परनारी] पर कुदृष्टि नहीं डाली ॥ १० ॥

अदिकारम् (अध्याय) १६

पॉऱैयुडैमै (सहनशीलता)

अगळ्वारैत् ताङ्गुम् निलम्पोलत् तम्मै
इगळ्वार्प् पॉऱुत्तल् तलै ॥ १ ॥

धरा[2] खोदने वालों का भी धरा सहन करती है भार;
'दुष्ट जनों के दुर्वचनों को सहना'—सद्गुण उसी प्रकार ॥ १ ॥

जैसे धरती उन व्यक्तियों का, जो उसके वक्षस्थल को खोदते हैं, भार सहन करती है, उसी प्रकार दुर्जनों की कटूक्तियों को सहन करना भी मनुष्य का सर्वोच्च गुण है ॥ १ ॥

पॉऱुत्तल् इऱप्पिऩै ऍऩ्ऱुम्; अदऩै
मऱत्तल् अदऩिऩुम् नऩ्ऱु ॥ २ ॥

'क्षमा करे अपराध किसी के'—यह संयम की है पहचान;
किन्तु 'भूल जाना अपराधों को' गुण उससे अधिक महान् ॥ २ ॥

अपने प्रति किसी के अपराध को क्षमा करना उत्तम है, परन्तु [अपराधी के] अपराधों को भूल जाना और भी अधिक उत्तम है ॥ २ ॥

इऩ्मैयुळ् इऩ्मै विरुन्तॉराल्; वऩ्मैयुळ्
वऩ्मै मडवार्प् पॉऱै ॥ ३ ॥

सर्वोपरि दीनता—अतिथि की कर न सके सेवा-सत्कार।
सर्वोपरि दृढ़ शक्ति—मूर्खों का सह सकना दुर्व्यवहार ॥ ३ ॥

---

१ अनुरक्त, झुका २ पृथ्वी।

अतिथि की सेवा न करना सर्वोपरि दरिद्रता है। मूर्खों के असहनीय व्यवहार को [सहनशीलता से] वहन करना महान् शक्ति और दृढ़ता का परिचायक है ॥ ३ ॥

निऱैयुडैमै नीङ्गामै वेण्डिन् पॉऱैयुडैमै
पोट्ऱि ऑऴुकप् पडुम् ॥ ४ ॥

सदा कीर्ति की विमल पताका फहराये—यह जिसे पसन्द,
सहनशीलता-क्षमा—इन्हीं के बल पर हो सकता निर्द्वन्द ॥ ४ ॥

विमल कीर्ति को अक्षुण्ण बनाये रखना है, तो क्षमा और सहनशीलता, की प्रवृत्ति को सदैव अपनाना और बनाये रखना चाहिये ॥ ४ ॥

ऑऱुत्तारै ऑन्ऱाग वैयारे; वैप्पर्
पॉऱुत्तारैप् पॉन्पोऱ् पॉदिन्दु ॥ ५ ॥

नहीं क्रोध-प्रतिशोध[1] किसी को जग में देता है सम्मान;
अक्षय स्वर्णकोष के तद्वत्[2] क्षमावान् की कीर्त्ति महान् ॥ ५ ॥

क्रोध [और प्रतिशोध] की कहीं सराहना नहीं होती। किन्तु क्षमावान् और सहनशील की कीर्त्ति अक्षय स्वर्णभण्डार की भाँति मूल्यवान है ॥ ५ ॥

ऑऱुत्तार्क् कॉरुनाळै इन्बम्; पॉऱुत्तार्क्कुप्
पॉन्ऱुन् तुणैयुम् पुगऴ् ॥ ६ ॥

क्षणिक सुक्ख है सुलभ, क्रोधवश जब हम हैं लेते प्रतिकार[3],
आजीवन है, किन्तु क्षमा करने पर, सुख-संतोष अपार ॥ ६ ॥

रोष [और प्रतिशोध] से केवल एक दिन का (अर्थात् क्षणिक) आनन्द प्राप्त होता है, परन्तु क्षमा करने का सुख-संतोष सदैव अमर रहता है ॥ ६ ॥

तिऱन्अल्ल तऱ्पिऱर् शॅय्यिनुम् नोनॉन्
तऱन्अल्ल शॅय्यामै नन्ऱु ॥ ७ ॥

अपकारी[4] पर रोष न करके उचित सदा करुणा का भाव।
बदले में अपकार न करना है विशेष सद्गुणी स्वभाव ॥ ७ ॥

---

१ बदला २ समान ३ बदला ४ बुराई करने वाला।

जो तुम्हारे साथ बुराई करें उन पर शोक न करो [करुणा का भाव रखो] और प्रयत्न करो कि बदले में उनके प्रति बुराई न करो ॥ ७ ॥

मिकुदियाल् मिक्कवै शॅय्दारैत् ताम्दम्
तकुदियाल् वॅऩ्ऱु विडल् ॥ ८ ॥

यदि मदान्ध[1] दुष्टों के हाथों कभी पहुँचता तुमको क्लेश।
उन्हें विजय करने में समरथ सहिष्णुता का अस्त्र विशेष ॥ ८ ॥

अहंकर और मद में आकर जो व्यक्ति तुम को क्लेश पहुँचाता है, उस पर क्षमा और सहिष्णुता की सद्वृत्ति से विजय प्राप्त करो ॥ ८ ॥

तुऱन्तारिल् तूय्मै उडैयर् इऱन्दार्वाय्
इऩ्ऩाच्चॉल् नोऱ्गिऱ्पवर् ॥ ९ ॥

सहनशील है दृढ़ी[2], न जिसका दुर्वचनों पर जाता ध्यान,
ऐसे सद्गृहस्थ का जीवन संन्यासी के सदृश महान् ॥ ९ ॥

जिनमें कटु वचन सहने की दृढ़ शक्ति है, वह गृहस्थ होते हुए संन्यासियों के समान हैं ॥ ९ ॥

उण्णादु नोऱ्पार् पॅरियर्; पिऱर्शॉल्लुम्
इऩ्ऩाच्चॉल् नोऱ्पारिऩ् पिऩ् ॥ १० ॥

उनका तप है धन्य जिन्होंने है व्रत लिया बिना आहार[3];
कटुवाणी का सहन किन्तु है अधिक श्रेष्ठ तप का आचार ॥ १० ॥

अनाहार व्रत करने वाले, महान् तपस्वी हैं; किन्तु वचनों को सहन करने वाले साहिष्णु पुरुष उनसे भी श्रेष्ठ तपस्वी हैं ॥ १० ॥

अदिकारम् (अध्याय) १७

अऴुक्काऱामै (ईर्ष्या निवृत्ति)

ऑऴुक्काऱाक् कॉऴ्क ऑरुवऩ्तऩ् नॅञ्जत्
तऴुक्का ऱिलाद इयल्पु ॥ १ ॥

सदाचार सत्पथ पर समझो है आचारवान् विद्वान्,
परसन्ताप-ईर्ष्या का जिसके मन में है कभी न भान[4] ॥ १ ॥

---

१ मद में चूर २ अचल, संयमी ३ अनाहार व्रत ४ आभास।

जिसका हृदय ईर्ष्या से रहित है उसी को कल्याणकारी सन्मार्ग पर समझना चाहिए ॥ १ ॥

विळुप्पेट्रिन् अक्दॉप्पि तिल्लैयार् मट्टुम्
अळुक्काट्रिन् अन्मै पॅरिन् ॥ २ ॥

विजय ईर्ष्या पर पाई है, मत्सर[1] का न हृदय में नाम—
उसका है सौभाग्य, न उससे और अधिक मानव गुणधाम ॥ २ ॥

यदि मन में किसी के प्रति ईर्ष्या का भाव नहीं है तो इससे बढ़कर संसार में कोई भी सद्गुण नहीं है ॥ २ ॥

अऱनाक्कम् वेण्डादान् ऍन्बान् पिऱनाक्कम्
पेणा तळुक्करुप् पान् ॥ ३ ॥

अन्य किसी के धन-वैभव से जिसके मन में है सन्ताप,
अपने ही धन-वैभव से, मानो कर रहा शत्रुता आप ॥ ३ ॥

जो भी दूसरों के धन और ऐश्वर्य से ईर्ष्या करता [और संताप करता] है समझो कि वह अपने ही धन-धर्म का शत्रु है। [परसन्तापी] को कभी सुख नसीब नहीं होता ॥ ३ ॥

अळुक्काट्रिन् अल्लवै शॅय्यार् इळुक्काट्रिन्
एदम् पडुपाक् करिन्दु ॥ ४ ॥

कभी ईर्ष्यावश प्रबुद्धजन पहुँचाते न किसी को हानि;
उन्हें ज्ञान है—यह प्रवृत्ति[2] उनके ही लिए दुःख की खानि ॥ ४ ॥

बुद्धिमान् व्यक्ति कभी भी ईर्ष्या के वशीभूत होकर किसी को हानि नहीं पहुँचाते, क्योंकि वे जानते हैं कि किसी के प्रति ईर्ष्या स्वयं अपने लिए दुःख का कारण बन जाती है ॥ ४ ॥

अळुक्का रुडैयार्क् कदुशालुम् ऑन्नार्
वळुक्कियुम् केडीन् पदु ॥ ५ ॥

हमको क्षमा भले वह कर दें, जिनके प्रति हमको है डाह,
किन्तु डाह का दुष्प्रवाह[3] उपजाता स्वयं निरंतर दाह[4] ॥ ५ ॥

इर्ष्यालु व्यक्ति के लिए उसका ईर्ष्या का स्वभाव स्वयं ही [परम शत्रु होकर] दुखदायी बन जाता है; भले ही उसके शत्रु [अथवा जिनसे

---

१ इर्ष्या, डाह   २ स्वभाव   ३ बुरा बहाव   ४ जलन, ताप।

वह ईर्ष्या करता है वे] उसको दुःख न भी पहुँचायें। [डाह और परसन्ताप, सांसारिक सभी सुखों के मौजूद रहते भी मन को सदैव दग्ध और दुःखी रखते हैं] ॥ ५ ॥

कॉडुप्प दळुक्करुप्पान् शुट्रम् उडुप्पदूउम्
उण्पदूउम् इन्ऱिक् कॅडुम् ॥ ६ ॥

दानी देता दान दीन को—होता देख जिसे सन्ताप,
भोजन-वस्त्र-विहीन सगे-सम्बन्धी उसके पाते ताप ॥ ६ ॥

निर्धन-दुखी जनों को दान दिया जाते देखकर जो जलता है उसके सगे-सम्बन्धी सदैव भोजन-वस्त्र से दीन रहते हैं ॥ ६ ॥

अव्वित् तळुक्का ऱुडैयान्ैच् शॅय्यवळ्
तव्वैयैक् काट्टि विडुम् ॥ ७ ॥

ईर्ष्यालु[1] से कुपित, भाग्यलक्ष्मी जब होती है प्रतिकूल,
देवि दरिद्रा (मूदेवी[2]) को उसके करती है अनुकूल ॥ ७ ॥

जो दूसरों के धन से इर्ष्या करते हैं, उनसे भाग्यलक्ष्मी भी इर्ष्या करती है, और उनसे विमुख होकर उन इर्ष्यालु व्यक्तियों के पास अपनी बड़ी बहिन [मूदेवी अर्थात् दरिद्रता की देवी] को भेज देती है ॥ ७ ॥

अळुक्का ऱॅन्नऑरु पावि तिरुच्चॅट्रुत्
तीयुळि उय्त्तु विडुम् ॥ ८ ॥

नष्ट हुआ सौभाग्य सकल, मत्सर का ज्योंही हुआ शिकार।
अधम आत्मा को दुखदायी नरक-अग्नि का खुलता द्वार ॥ ८ ॥

किञ्चित् इर्ष्या भी सौभाग्य को नष्ट कर देती और आत्मा को नरकाग्नि में डाल देती है [अर्थात् ईर्ष्या इहलोक-परलोक दोनों को बिगाड़ देती है।] ॥ ८ ॥

अव्विय नॅञ्जत्तान् आक्कमुम् शॅव्वियान्
केडुम् निनैक्कप् पडुम् ॥ ९ ॥

ईर्ष्यालु धनवान् ! सदाचारी-सद्धर्मी हो धनहीन !
अनहोनी दोनों, न कल्पना कर सकते हैं कभी प्रवीन[3] ॥ ९ ॥

---

१ ईर्ष्या करने वाला २ भाग्य लक्ष्मी की बड़ी बहिन दरिद्रता की देवी
३ समझदार।

ईर्ष्यालु व्यक्ति कैसे धनवान हो सकता है, और सदाचारी सन्मार्गी व्यक्ति किस प्रकार निर्धन हो सकता है—यह कल्पना करना ही आश्चर्य-जनक है [अर्थात् यह दोनों बातें असम्भव हैं; न ईर्ष्यालु को सम्पन्नता के दर्शन हो सकते हैं, न सद्वृत्ति वाले को विपन्नता के ॥ ९ ॥

अळुक्कर्‌ ऱकन्ऱारुम् इल्लै ऱक्दिल्लार्‌
पॅरुक्कत्तिल् तीरन्दारुम् इल् ॥ १० ॥

कभी न होते ईर्ष्यालु, जीवन में सुख-समृद्धि-सम्पन्न ।
मत्सर-मुक्त[1] जनों का जीवन सफल, न होते कभी विपन्न[2] ॥ १० ॥

ईर्ष्यालु व्यक्ति को सुख-समृद्धि कभी सुलभ नहीं है, और ईर्ष्या-रहित व्यक्ति सदैव फलते-फूलते हैं ॥ १० ॥

अदिकारम् (अध्याय) १८
वॅक्कामै (लोभ-त्याग)

नडुविन्ऱि नन्पॉरुळ् वॅक्किर्‌ कुडिपॉन्ऱिक्
कुट्ऱमुम् आङ्गे तरुम् ॥ १ ॥

सदोपार्जित[3] अन्य किसी के धन पर दृष्टि, विना अधिकार,
लोभ-ग्रस्त ऐसे मानव का होता शीघ्र नष्ट परिवार ॥ १ ॥

यदि कोई व्यक्ति दूसरे के सदोपार्जित धन के अनधिकार अपहरण की लालसा करता है, तो यह लोभ उसके परिवार के निश्चय विनाश का कारण होता है ॥ १ ॥

पडुपयन् वॅक्किप् पळिप्पडुव शॅय्यार्‌
नडुअन्मै नाणु पवर् ॥ २ ॥

ध्यानमात्र से लज्जित होते, रुचिर[4] न जिनको कभी अधर्म,
लालच में पड़कर न लाभवश करते ऐसे जन अपकर्म[5] ॥ २ ॥

जो व्यक्ति अन्याय और अनुचित कर्म करने से लजाते हैं, वे लोभवश दूसरों के धन को हस्तगत करने से सदा दूर रहते हैं ॥ २ ॥

---

१ ईर्ष्या-हीन २ दुखी, विपत्तिग्रस्त ३ उचित ढंग से कमाया हुआ ४ पसन्द ५ बुरे कर्म ।

शिट्ऱिऩ्पम् वॅक्कि अऱऩल्ल शॅय्यारे
मट्ऱिऩ्पम् वेण्डु पवर् ॥ ३ ॥

अहो ! आत्मा, जिनकी रखती है सच्चे सुख की अभिलाष ,
क्षणिक लालसाओं में पड़कर, लोभ न आता उनके पास ॥ ३ ॥

जिनकी आत्मा शाश्वत और वास्तविक सुख की अभिलाषा रखती है वे कभी भी क्षणिक दुर्वासनाओं में पड़कर अपकर्म नहीं करते ॥ ३ ॥

इलम्ऍऩ्ऱु वॅक्कुदल् शॅय्यार् पुलम्वॅऩ्ऱ
पुऩ्मैयिल् काट्चि यवर् ॥ ४ ॥

निपट दीन हैं किन्तु संयमी जिन्हें इन्द्रियों पर अधिकार !
पर धन की लालसा न रखते, कभी लोभ के नहीं शिकार ॥ ४ ॥

जिन्होंने अपनी इन्द्रियों पर संयम कर रक्खा है वे [विवेकी व्यक्ति] दरिद्रता में भी लोभवश दूसरे के धन की लालसा नहीं करते ॥ ४ ॥

अक्कि यकऩ्ऱ अऱिवॅऩ्ऩाम् यार्माट्टुम्
वॅक्कि वॅऱिय शॅयिऩ् ? ॥ ५ ॥

लोभ और तृष्णा[1] में पड़कर, अपनाता है पापाचार !
कौन कहेगा ऐसा मानव बुद्धि-ज्ञान का है भण्डार ? ॥ ५ ॥

बुद्धि औ ज्ञान की विलक्षणता किस काम की है, यदि मनुष्य लोभ-तृष्णा में पड़कर संसार में दुराचरण करता है। [अर्थात् लोभ ज्ञानियों और बुद्धिमानों की भी मति भ्रष्ट कर देता है] ॥ ५ ॥

अरुळ्वॅक्कि आट्ऱिऩ्कण् निऩ्ऱाऩ् पॉरुळ्वॅक्किप्
पॉल्लाद शूळ्क् कॅडुम् ॥ ६ ॥

धर्ममार्ग पर चला, सुयश-सन्मारग की जिसको अभिलाष ,
लोभ-लालसा में फँस कर उसका भी निश्चय सदा विनाश ॥ ६ ॥

जो सद्गृहस्थ सन्मार्ग पर चल कर सुयश का अभिलाषी है, वह लोभ में फँस कर दूसरों का धन अपहरण करने पर, निश्चय विनाश के गर्त में पहुँच जायगा ॥ ६ ॥

---

१ प्यास, लालसा ।

वेण्डऱ्क वॅक्कियाम् आक्कम् विळैवयिऩ्
माण्डऱ् करिदाम् पयऩ् ।। ७ ।।

अनधिकार लालच में फँस कर, परधन पर करना अधिकार—
कभी न सुख का हेतु, सर्वदा दुखदायी है लोभ-विकार ।। ७ ।।

तृष्णा और लोभ के वश में पराया धन नहीं अपहरण करना चाहिए; क्योंकि ऐसे धन-लाभ से सिवाय दुःख के सुख कभी प्राप्त नहीं होता [सुख तो न्याय से अर्जित धन ही से सुलभ है] ।। ७ ।।

अक्कामै शॅल्वत्तिऱ् कियातॅनिऩ् वॅक्कामै
वेण्डुम् पिऱऩ्कैप् पॉरुळ् ।। ८ ।।

परधन-हरन किया मानो अपने धन का भी किया विनास;
निज समृद्धि[1] की कुशल तभी जब तजो पराये धन की आस ।। ८ ।।

यदि धन को स्थायी रखना है [और विनाश से बचाना है] तो दूसरे के धन पर लोलुप दृष्टि न रखो। पराये धन पर लोभ न करना ही समृद्धि-लाभ का मार्ग है ।। ८ ।।

अऱऩऱिन्दु वॅक्का अऱिवुडैयार्च् शेरुम्
तिऱऩऱिन् ताङ्गे तिरु ।। ९ ।।

लोभरहित हैं धर्मपरायण, जिन्हें न परधन से है प्यार।
सदा समय पर भाग्यलक्ष्मी का प्रस्तुत है इन्हें दुलार ।। ९ ।।

भाग्यलक्ष्मी समय पर उन्हीं सुपात्रों के पास पहुँचती है जो लोभ-पाश से मुक्त हैं ।। ९ ।।

इऱलीऩुम् ऍण्णादु वेक्किऩ् विऱलीऩुम्
वेण्डामै ऍऩ्ऩुम् शॅरुक्कु ।। १० ।।

होते नष्ट लोभ में पड़कर वही न जिनको बुद्धि-विचार।
लोभरहित सामर्थ्यवान् हैं, सहज उतरते पारावार[2] ।। १० ।।

विचारहीन मानव, लोभ में पड़कर, विनाश को प्राप्त होते हैं; लोभ-तृष्णा से रहित आत्माएँ ही सफल [और संसार-संकट पर विजयी] होती हैं ।। १० ।।

---

१ सम्पन्नता, खुशहाली   २ संसारसागर।

अदिकारम् (अध्याय) १९

पुऱङ्कूऱामै (परनिन्दा)

अऱम्कूऱान् अल्ल शॅयिनुम् ऑरुवन्
पुऱम्कूऱान् ऍन्ऱल् इनिदु ॥ १ ॥

वाणी मलिन, अधम प्राणी के लिए न अनुचित है सत्कार;
यदि परोक्ष[1] में परनिन्दा[2] से मुक्त रहा उसका आचार ॥ १ ॥

मलिन वाणी और दुराचरण वाला व्यक्ति भी धन्य है यदि वह किसी की पीठ पीछे निन्दा नहीं करता ॥ १ ॥

अऱन् अऴीइ अल्लवै शॅय्दलिऩ् दीदे
पुऱन् अऴीइप् पॉयॅत्तु नगै ॥ २ ॥

सम्मुख मृदु[3], परोक्ष में निन्दा—जिन अधमों का यह व्यापार,
दुष्टों से भी दुष्ट, अधम से अधम, निन्द्य[4] यह कपटाचार ॥ २ ॥

जो सामने तो बनावटी प्रसन्न मुद्रा में वार्ता करते हैं और पीछे निन्दा करते हैं, ऐसे [कपटी] व्यक्ति, कुमार्गियों और दुष्कर्मियों से भी अधिक अधम हैं ॥ २ ॥

पुऱङ्कूऱिप् पॉय्त्तुयिर् वाऴ्दलिऩ् शादल्
अऱङ्कूऱुम् आक्कम् तरुम् ॥ ३ ॥

झूठ, पराई निन्दा से आजीवन दुःखदायी परिणाम;
इससे अच्छी मृत्यु कि जीवन-संकट से देती आराम ॥ ३ ॥

परोक्ष-निन्दा और मिथ्याभाषण में लिप्त जीवन से तो मृत्यु ही अच्छी है, क्योंकि इससे जीवन [की व्याधियों] से मुक्ति प्राप्त हो जाती है ॥ ३ ॥

कण्णिन्ऱु कण्णऱच् चॉल्लिनुम् शॉल्लऱ्क
मुन्निन्ऱु पिन्नोक्काच् चॉल् ॥ ४ ॥

कटुवाणी है निन्द्य, किन्तु सम्मुख कह देना फिर भी क्षम्य[5],
किन्तु पीठ-पीछे की निन्दा है अनुचित सर्वथा अक्षम्य ॥ ४ ॥

किसी के सामने कटु वाक्य तो कहा जाना क्षम्य हो सकता है, परन्तु उसके पीठ पीछे बुराई करना सर्वथा अनुचित है ॥ ४ ॥

---

१ पीठ पीछे २ दूसरे की बुराई ३ मीठा बोलने वाला ४ घृणित ५ क्षमा करने योग्य, सहनीय ।

चन्द ही रोज़ में मिर्ज़ा साहब की बीबी ने उसे अपने ढंग पर लगा लिया। तीन बरस के बाद अहमदअली के साथ अक़्द कर दिया गया।

जिस तरह मिर्ज़ा ने बहू को तालीम दी। बअीनही यही ख़याल दामाद की निस्बत था। मगर इस मतलब के लिए उन्होंने किसी लड़के को परवरिश नहीं किया। उसमें यह लिम थी कि अगर ऐसा किया जायगा तो साहबज़ादे सुसराल के टुकड़े तोड़ने के आदी हो जायँगे। उनसे फिर कोई काम न होगा। लड़की ऐसे लड़के से न दबेगी। उम्र भर बे-लुत्फ़ी रहेगी। मगर अब लड़की भी ब्याहने के लायक़ होगई है। आख़िर उनके दोस्तों में से कोई एक साहब वाहिदहुसैन नामी थे, उन्होंने शादी का पैग़ाम दिया। लड़के के चाल-चलन से मिर्ज़ा बख़ूबी वाक़िफ़ थे। इसलिए कि अगर्चे पहले से उसका शान व गुमान भी न था कि इस लड़के के साथ लड़की का अक़्द किया जायगा, लेकिन मिर्ज़ा को अपने और अपने अहबाब के लड़कों की तालीम से एक क़ुदरती लगाव था। इसलिए मिर्ज़ा उस लड़के की हालत से बख़ूबी वाक़िफ़ थे। पैग़ाम आते ही मिर्ज़ा ने मंज़ूर किया। मामूली रुसूम के बाद शादी कर दी गई। लड़के-लड़की दोनों की शादियों में मिर्ज़ा साहब ने ख़िलाफ़ जुम्हूर तमाम बेहूदा रस्मों को तर्क कर दिया। ख़ास अहबाब की दावत के सिवा और किसी क़िस्म का सामान नहीं किया गया। न रंडियाँ नाचीं न भांड-भगेतों को बुलाया। लड़के की शादी में तो दोनों तरफ़ का इख़्तियार ख़ुद इन्हीं को था। सकीना के ख़ालू बराए नाम शरीक हो गए थे और जो कुछ उन्होंने सकीना को अपनी ख़ुशी से दिया उसको निहायत ही शुक्रगुज़ारी से मंज़ूर कर लिया। लड़की की शादी में यह शर्त पहले ही कर ली गई थी कि माँझा, साचक़, बरात बतौर मुतआरफ़ न होगा। सिर्फ़ शरई अक़्द किया जायगा। दूल्हा की माँ को डोमिनियों के बुलवाने पर बहुत इसरार था मगर मिर्ज़ा साहब ने हरगिज़ मंज़ूर न किया। शरबत पिलाई की रस्म को मिर्ज़ा बहुत ही बुरा जानते थे। इसलिए अक्सर अज़ीज़ों और दोस्तों से बिगड़ गई। मगर मिर्ज़ा उन लोगों में न थे जिनको किसी अम्र माक़ूल में निज़ाम मुआशरत की मुताबअत[1] में कोई उज़्र नहीं है—अलावा उन उमूर जो ख़िलाफ़ ख़ुदा ओ रसूल या ख़िलाफ़ अक़्ल हों। उमूर जायज़ में हम-मुआशरत की इस तरह फ़र्माबर्दारी जिस तरह सल्तनत के क़ानून की या तशरीअ् के अहकाम[2] की। मगर जो रस्म और क़ानून के ख़िलाफ़ होगा उसमें निज़ाम मुआशरत का मुक़ाबला पूरी क़ूवत से किया जायगा। लड़के-लड़कियों की शादियों के बाद मिर्ज़ा बहुत ही सुबुकदोश[3] होगए। अब उन्होंने वह तरीक़ः ज़िन्दगी इख़्तियार किया जिससे दुनिया में बिहिश्त का लुत्फ़ आता था। बशर्ते कि

१ अनुकरण २ शास्त्रादेश ३ उऋण, भार से हलके।

बिहिश्त में तब्अी[1] मिहनत भी अस्बाब ऐश में दाख़िल हो। मिर्ज़ा का यह ख़याल था कि बग़ैर मिहनत के ज़िन्दगी बसर नहीं हो सकती।

अब उन्होंने लखनऊ के क़रीब एक मौज़े में एक क़िता ज़मीन ख़ुदकाश्त किया। साल में सिर्फ़ दो एक महीना लखनऊ में रहते थे। बाक़ी तमाम साल गोया वही घर था। शहर में मिर्ज़ा का दिल न लगता था इसलिए कि यहाँ इनकी दिलचस्पी का कोई सामान मुहय्या न था। इनके दो शुग़ल थे—एक मशक़्क़त, दूसरे कुतुबबीनी[2]। शहर के लोगों को इन दोनों बातों से नफ़रत। उनका ख़ास शुग़ल जिससे मिर्ज़ा को नफ़रते कुल्ली थी, कबूतरबाज़ी, बटेरबाज़ी की।

❀ ❀ ❀

अगर्चे बचपने के दोस्तों का असर मिर्ज़ा आबिदहुसैन की सीरत पर नहीं पड़ा और यह अम्र क़ाबिल सताइश है कि वह इस असर की ख़राबी से महफ़ूज़ रहे लेकिन आम नश्वोनमा के बाद अलबत्ता अक्सर क़ौमी तबीयतों ने इन पर असर डाला और उसका उन्हें ममनून होना चाहिए।

मसलन सय्यद जाफ़रहुसैन साहब जिनको इनसे ख़ास मुहब्बत थी। सय्यद साहब की सीरत क़ौम और मुल्क के लिए एक उम्दः मिसाल है। इब्तदाई उम्र से सय्यद साहब के क़ुवा[3] इस लायक़ न थे कि वह किसी क़िस्म की सख़्त तब्अी मशक़्क़त कर सकें। इसलिए तालीम अंगरेज़ी आला दर्जे की न हासिल कर सके। सिर्फ़ इन्ट्रैंस क्लास पहुँच के बसबब अलालत[4] मदरसा छोड़ना पड़ा। मगर मसलहत-अन्देश ज़ेह्न इन्सान को हरगिज़ बेकार नहीं छोड़ते। इसलिए उन्होंने रुड़की कालेज के दाख़िले का इम्तहान पास किया और उस मदरसे में दाख़िल हो गये। यहाँ इन्होंने अपनी बिल् इस्तिक़् मिहनत और नेक चलन से अपने उस्तादों को बहुत ही ख़ुश रखा। अगर्चे उस मदरसे में एक साहब और भी लखनऊ के रहने वाले उस ज़माने में दाख़िल थे और सय्यद साहब और वह बवजह हमवतन होने के एक ही बारिक बल्कि एक ही कमरे में मुक़ीम थे। यह दूसरे हज़रत इन्तहा के काहिल। फ़ज़ूलख़र्च और सबसे बड़ा ख़ब्त शायरी का उनके दिमाग़ में समाया हुआ था। रुड़की कालेज में दाख़िल होकर बजाए इसके वह तालीमी कोर्स को याद करते, ग़ालिब और ज़ौक़ के दीवान हिफ़्ज़ फ़रमाते थे। सरेशाम से आधीरात बल्कि उससे कुछ ज़्यादः देर तक अपना और अपने साथियों का वक़्त ज़ाया करने के सिवा उनका कोई और काम न था। सुबह को माशा-अल्लाह उस वक़्त सो के उठते थे जिस वक़्त कालेज का घण्टा बजता था। यानी साढ़े दस बजे। फिर उस वक़्त भी अगर उनका शाहाना मिज़ाज दुरुस्त हुआ तो कालिज

१ शौक़िया २ पुस्तकों का अध्ययन ३ बल-पौरुष ४ बीमारी।

गए वर्ना बारिक ही में पड़े रहे। माहवारी इम्तहानों में किताबें देखना क़सम था। सिर्फ़ इम्तहान से एक दिन पहले जब तुलबा आपस में बैठ कर मुबाहिसा किया करते थे, उसमें ख़ौफ़े ख़ुदा करके शरीक हो जाते थे। मगर नहीं मालूम क्या ख़ुदा की क़ुदरत थी कि किसी इम्तहान में फ़ेल न हुए। सिर्फ़ पास होने भर के मार्क्स (नम्बर) मिल जाया करते थे। हज़रत को इसका फ़ख़्र था। सालाना में ख़ुदा-ख़ुदा करके पास हो गए और एक साल के लिए सय्यद साहब को अपने हाल पर छोड़के कालिज से निकल आए। नौकरी पर भी एशियाई शायरी का ज़हरीला असर और उनके मलज़ूम[1] काहिली, बेपरवाई, बद्‌दिमाग़ी को लिये हुए पहुँचे, भला ऐसों से नौकरी क्या होती। डेढ़ दो बरस के बाद मौक़ूफ़ कर दिए गये। फिर मुस्तक़िल सरकारी मुलाज़िमत न मिली। ख़ुदा जाने किस तरह हैं और क्योंकर हैं। उन हज़रत के कालेज से निकल आने के बाद सय्यद साहब का पीछा छूटा। अब सय्यद साहब ने मुस्तक़िल मेहनत करना शुरू की। दूसरे साल के इम्तहान में (जो रुड़की कालेज का आख़िरी इम्तहान है) दूसरे दर्जे में पास हुए और एक मज़मून में इनाम भी पाया। इसके बाद मुहकमे नहर में मुलाज़िम हुए। और उस मुहकमे में अब भी आला दर्जे के ओहदे पर हैं। मैं पहले एक मुक़ाम पर लिख चुका हूँ कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने इंजीनियरी का इम्तहान आप ही की राय से पास किया था। बल्कि उस इम्तहान के पास करने में आपने बड़ी मदद की। पैमायश व लेविल, नक़्शाकशी, तख़मीना इमारत वग़ैरह सब आप ही से सीखा था।

सय्यद साहब को इनके साथ और इनको सय्यद साहब के साथ ख़ास दर्जे का ख़ुलूस[2] था। वह आपकी मद्‌ह व सना[3] ग़ायबाना[4] करते थे। और यह उनकी तक़्लीद करते थे और वह इनकी। मज़ाक़ दोनों का मिलता हुआ। शेरो-शायरी से इनको भी नफ़रत थी और उन्हें भी। समझते दोनों थे। मगर वाक़िईयत[5] में इस क़दर ग़र्क़ थे कि मज़ामीनख़याल[6] इनको हेच व पोच मालूम होते थे।

एक मर्तबा का ज़िक्र है। सय्यद जाफ़रहुसैन साहब के वही लखनवी हमवतन जिनका ज़िक्र ऊपर आ चुका है, फ़सीहुलमुल्क नवाब मिर्ज़ा साहब दाग़ देहलवी का तीसरा दीवान बड़े ज़ौक़ व शौक़ से ख़रीद करके लाए। सय्यद साहब उस वक़्त मौजूद थे। ख़ुदा जाने क्या जी में आया, दीवान उठा के देखना शुरू किया। इत्तफ़ाक़ से पेंसिल हाथ में। अश्‌आर-नज़री[7] करना शुरू कर दिया। सफ़े के सफ़े काट दिये और बाज़ अश्‌आर पर कुछ हाशिये भी चढ़ाये। बस यही मज़ाक़ मिर्ज़ा आबिद-

१ संबद्ध २ आत्मीयता ३ प्रशंसा व गुणगान ४ पीठ पीछे ५ यथार्थ जीवन ६ विषय-कल्पना ७ छन्दावलोकन।

हुसैन साहब का भी था। मेकानिक्स में दोनों को आला दर्जे की क़ाबिलियत थी। सैकड़ों कलों की तजवीज़ रोज़ाना हुआ करती थी, नक़्शे बना करते थे। बल्कि अगर मक़्दूर[1] हुआ तो उसके नमूने भी बनवाये गये। वर्ना आरज़ूएँ[2] दिलों में रह गईं।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन के अज़ीज़ों में से भी कोई ऐसा मौजूद न था जिससे मिर्ज़ा आबिदहुसैन के इख़्लाक़ को कोई नफ़ा पहुँचता हो। इनके एक अज़ीज़ का तज़किरः बतौर नमूने के किया जाता है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन के दूर के रिश्तेदारों में एक शख़्स मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन नामी लखनऊ के रहने वाले बहुत तबाह-हाल और परेशान थे। किसी क़दर फ़ारसी पढ़े हुए थे और बचपने से शोरगोई[3] का भी ख़ब्त था। उसने तबीयत को और नाज़ुक कर दिया था। मरसियाख़्वानी के शौक़ ने सब्र व क़नाअत[4] का सबक़ पढ़ा दिया था। साल भर के बाद अशरः मोहर्रम में किसी सरकार से सिर्फ़ पचीस रुपये की आमद थी। उसमें क्या होता था। एक बीवी, एक आप, एक लड़का, दो लड़कियाँ थीं। ग़रज़ कि यह सब बन्दे ख़ुदा के इफ़्लास[5] के पंजे में गिरफ़्तार थे। न कोई सूरत सफ़र की आप से आप नज़र आती थी कि उस बला से नजात हासिल हो और न इतनी हिम्मत और अक़्ल थी कि ख़ुद अपनी सअी बाज़ू[6] से मुख़लिसी[7] हासिल करें। जो लोग लखनऊ के निज़ाम मुआशरत से वाक़िफ़ हैं, उनसे तो कुछ कहने की ज़रूरत नहीं। मगर हाँ और लोगों को इतना बताना ज़रूर है कि यहाँ के रहने वाले अमूमन अक़्ल-मआश[8] से बेबहरः होते हैं। अगर्चे यह शहर अब ऐसा मुफ़्लिस हो गया है कि यहाँ के मुतवस्सित दर्जे[9] के लोगों में से अक्सर को आप फ़िक्रे-मआश[10] में मुब्तिला पाइयेगा। और अगर किसी चलते पुर्ज़े आफ़त के परकाले को अक़्ल मआश है भी तो वह अक़्ल फ़साद के साथ मिली हुई। नेक और जायज़ वसीलों से रुपया पैदा करना यहाँ के लोग नामुमकिन ख़याल करते हैं। और दुनिया भर में रुपया पैदा करने के लिए तरह-तरह की तदबीरें सोची जाती हैं। कोई इस फ़िक्र में है कि या कोई पेशा सीखें या कोई नौकरी करें; या अगर किसी क़दर रासुल्माल[11] पास है तो कोई दूकान खोलें या कोई कारख़ाना करें। यहाँ इस क़िस्म की कोशिश करने वाले पस्तख़याल[12] अदना दर्जे के लोग समझे जाते हैं। और जो शख़्स ऐसा कर लेता है, वह गोया दायरा तश्ख़ीस[13] से निकल जाता है। मसलन उन लोगों में जो अहल तश्ख़ीस में दाख़िल हैं, यह वही लोग हैं जिनके आबा व अज्दाद[14] साहबे सर्वत[15] थे।

---

१ समाई   २ इच्छाएँ   ३ कविता रचने का   ४ धैर्य और संतोष   ५ कंगाली के दैवी प्रकोप   ६ बाहुबल   ७ मुक्ति   ८ जीविकार्जन-बुद्धि   ९ मध्यम वर्ग   १० रोज़ी की चिन्ता   ११ पूंजी   १२ मंदबुद्धि   १३ मर्यादावाले   १४ पूर्वज   १५ सम्पन्न, धनाढ्य।

यह बुज़ुर्ग सर्वत को तो अपने साथ मुल्के अदम को लेते गए, मगर महज़ तशख़्ख़ुस[1] और निख़्वत[2] जो कि लाज़िमी सिफ़ात इस सर्वत के थे, अपनी औलाद की मीरास[3] में छोड़ गये। अगर किसी ने कोई पेशा कर लिया तो वह बेचारा अंगुश्तनुमा[4] हो जाता है। फिर करें क्या ? यह मुझसे सुनिये:—

(१) अगर अरबी शुद-बुद पढ़ी है और शक्कियाते नमाज़[5] और मसाएल रोज़-मर्र: से वाक़िफ़ हैं—किसी मुज्तहिद[6] से यह सई व सिफ़ारिश या बइज़हार रसूख़ियत-ख़ान्दानी इजाज़:[7] हासिल करके पेशनमाज़ बन जायँ। लखनऊ में तो ख़ैर मगर अक्सर बाहर के देहाती क़स्बाती बहुत से मोतक़िद[8] हो जायँगे।

(२) अगर चौगोशिया टोपी क़ालब[9] पर चढ़ाना जानता है, किसी नामी मरसियाख़्वान का शागिर्द हो जाय और उनसे कोई रुक़्क़ा लेकर बाहर चला जाय। हस्ब हैसियत लिवास व तशख़्ख़ुस ज़ाहिरी[10] कुछ न कुछ वसूल हो जायगा।

(३) अगर कुछ पढ़ा नहीं है सिर्फ़ किसी क़दर क़िर्अत[11] से वाक़िफ़ है, ख़ुसूसन ज़ाल और ज़ाद को ब-सेहत अदा कर सकता है, किसी मैयित[12] के रोज़: नमाज़ का उजूर:[13] ले। नमाज़ पढ़े या न पढ़े, रोज़े रखे या न रखे, यह उसका ईमान जाने। या हज या ज़िआरत का मुआमल: करले।

(४) अगर इल्म मजलिस से वाक़िफ़ हो, किसी रईस का दरबार करे, नौकरी का उम्मीदवार रहे। वक़्तन फ़वक़्तन बग़रज़ फ़ाक़ाशिकनी[14] के कुछ वसूल हो जाया करेगा।

यह सूरतें अक्ले-हलाल[15] की हैं। अब अगर हराम व हलाल से कोई बहस न रखता हो और सूरत ज़ाहिरी अच्छी हो, किसी मालदार औरत के फाँसने की फ़िक्र करे। आम इससे कि वह शौहरदार हो या बेवा। यह भी नामुमकिन हो तो किसी नौउम्र रईसज़ादे को क़ब्ज़े में लाये। उस हालत में अगर मुमकिन हो तो अपनी बहन या लड़की का निकाह उसके साथ कर दे या किसी और तरीक़े से उसके माल पर क़ब्ज़ा करे और जब वह यकबीनी-व-दोगोश[16] हो जाय तो उससे किनाराकशी करे; और तनहा उसकी लियाक़त न रखता हो तो जालियों की कम्पनी में शिरकत करे और जो कुछ

---

१ मर्यादा २ अभिमान ३ उत्तराधिकार ४ बदनाम, नक्कू ५ नमाज़ संबन्धी शंकाओं ६ शीआ सम्प्रदाय का धर्म-गुरु ७ पुश्तैनी योग्यता की सनद ८ श्रद्धालु, भक्त ९ टोपी चढ़ाने का साँचा १० पहनाव ओढ़ाव ११ क़ुर्आन का शुद्ध सस्वर उच्चारण १२ मरे हुए १३ मिहनताना १४ लंघन (उपवास) तोड़ने के लिए १५ हलाल रोज़ी १६ बिलकुल लाचार।

रुपिया पास हो तो जाली मुक़द्दमों में रुपये से मदद दे। रुपिया न हो तो पैरवी दौड़-धूप से अपना एक हिस्सा मुस्तक़िल कम्पनी में क़ायम करले।

यह सब सूरतें ऐसी हैं कि निज़ामेमुआशरत में[१] इज़्ज़त बाक़ी रहे और रुपिया पैदा हो; और अगर कोई ख़ुदा न ख़्वास्तः पेशा कर लिया या किसी क़िस्म का हुनर सीख के उससे अख़्ज़-मआश[२] करने लगा तो लोगों की निगाहों में ज़लील हो जायगा। यहाँ तक कि लड़के-लड़की की शादी ब्याह में दिक़्क़तें पेश आयेंगी। छोटी उम्मत वालों में शुमार कर लिया जायगा, ख़्वाह वह कैसा ही शरीफ़ुल्-नस्ल और शरीफ़ुल्-ज़ात क्यों न हो। यह उमूर जो यहां लिखे गये हैं, इसको नाज़रीन मज़ाक़ न समझें। यह बिल्कुल वाक़िआत हैं।

ग़रज़ कि हमारे मिर्ज़ा के अज़ीज़ मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन उसी क़िस्म के लोगों में से थे जिनके ऐसे ख़यालात होते थे और अपने ख़यालात के बदौलत यह और इनके बाल-बच्चे तरह-तरह के मुसाएब[३] में मुब्तिला थे।

जिस ज़माने में मिर्ज़ा साहब ज़िला मेरठ में असिस्टेंट इंजीनियर थे मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन बसीग़ए मरसियाख़्वानी उसी ज़िले में एक रईस के मकान पर तशरीफ़ ले गए। मिर्ज़ा साहब भी मुहर्रम की मजलिसों में वहाँ जाया करते थे। वहीं मुलाक़ात हुई। मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन को बलिहाज़ क़राबत[४] एक दिन अपने इलाक़े पर मेहमान किया। दावत की। एक रोज अपने मकान पर ख़ुद मजलिस करके मिर्ज़ा साहब से पढ़वाया। वक़्त-रवानगी मिर्ज़ा साहब को रईस की सरकार से पच्चीस रुपये वसूल हुये। मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन के इफ़्लास[५] का हाल कुछ पोशीदः न था। मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने एक मजलिस की पढ़वाई के हीले से पचास रुपये अपने पास से दिए। दूसरे साल फिर ऐसा ही इत्तफ़ाक़ हुआ। अबकी मर्तबा मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन ने कहा कि अगर कोई सूरत रोज़गार की मुमकिन हो तो कर दीजिए। मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने कहा कि सूरत रोज़गार की हो सकती है बशर्ते कि मिहनत पर आमादः हों। मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन इफ़्लास के हाथों बहुत तंग थे, मंज़ूर कर लिया। मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने साहब से कहके एक जगह मुहर्रिरी[६] की उनको दिलवा दी। पन्द्रह रुपये माहवार तनख़्वाह थी। मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन ख़ुशी-ख़ुशी लखनऊ गए। और मय अहलोअयाल[७] मिर्ज़ा आबिदहुसैन के इलाक़े पर पहुँच गए।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने उनके अहलोअयाल को अपने घर में उतार लिया।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी सकीना बेगम बहुत ही तंगमिज़ाज थीं। इसके

---

१ नागरिक जीवन में २ रोज़ी (जीविका) की प्राप्ति ३ मुसीबतों ४ आपसदारी ५ कंगाली ६ क्लर्की ७ बीवी-बच्चे।

अलावा लखनऊ के तर्ज़ मुआशरत[1] की आदी। आदतें बिगड़ी हुई। सुबह के नौ बजे सो के उठना। दिन भर फ़ुज़ूल औक़ात ज़ाया करना। वैसी ही कुछ बच्चों की भी ख़सलतें थीं।

उन लोगों को कभी बाहर जाने का इत्तफ़ाक़ न हुआ था। हर चीज़ बाहर की आपको बुरी मालूम होती थी। ख़्वाह वह दर हक़ीक़त बुरी हो या न हो।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन का हाल कुछ ही क्यों न हो लेकिन उनकी बीवी समझती थीं कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन ने जो उनके मियाँ को नौकर रखवा दिया है उसमें कुछ उन्हीं का मतलब है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी मेहमाननवाज़ी के लिहाज़ से जितनी उनकी ख़ातिर-दारी करती थीं वह उसको एक क़िस्म की ख़ुशामद और मतलबबरारी[2] समझती थीं। यह तो एक क़िस्म की ग़लतफ़हमी थी। इसके अलावा हसद[3] ने और भी आँखों पर पर्दे डाल दिये थे। एहसानफ़रामोशी[4] ऐब है मगर वह अपने शौहर को मिर्ज़ा आबिदहुसैन का मुहसिन[5] तसव्वुर करती थीं और उसी क़िस्म के सुलूक की मुतवक़्क़ो[6] थी जो मुहसिनों के साथ करना चाहिए। सकीना बेगम साहिबा ने ऐसे हल्क़ए मुआशरत में परवरिश पाई थी जहाँ बेग़रज़ी से किसी के साथ नेकी करने का मफ़्हूम[7] बिल्कुल नामुमकिन ख़याल किया जाता था। उनका यह मक़ूलः था कि "बे मतलब किसी को कोई कुछ नहीं देता।"

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी यह समझती थीं कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन और उनके ख़ानदान ने इनके शौहर और ख़ुद इनपर वह ज़ुल्म किया है जिसकी तलाफ़ी[8] रद्-मज़ालिम[9] से भी मुमकिन नहीं।

एक तो लखनऊ से छुड़वाने का गुनाह इस क़दर संगीन और सख़्त था कि अगर अदालत मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी के इख़्तियार में होती तो मिर्ज़ा आबिदहुसैन और उनके बीवी-बच्चों को कोल्हू में पेलवा डालतीं। उठते-बैठते यह कलाम था, "हाय पन्द्रह रुपल्ली के लिए घर छोड़ा, बार छोड़ा। मुझे जंगले में आ के रहना पड़ा। क्यों बहन रुक़य्या बेगम! (मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी का नाम) मैं कहती हूँ कि अगर यहाँ कोई मर जाए तो क्या हो। खटिया पर उठाया जायगा। फ़ातिहः दुरूद भी अच्छी तरह न हो।

तुम्हारे मियाँ का ख़ुदा भला करे किस जंगले में लाके डाला है, जहाँ अपना कोई अज़ीज़ न साथी। न पूछने वाला न देखने वाला। सब तो सब मेरी बतूली को

---

१ रहन सहन का तरीक़ः २ स्वार्थसिद्धि ३ इर्ष्या ४ कृतघ्नता ५ उपकारकर्ता ६ आशा रखती थीं ७ उद्देश्य ८ उद्धार, क्षतिपूर्ति ९ प्रायश्चित्त।

दूसरा साल भर के तीसरा साल शुरू हो गया है। शहर में दूधबढ़ाई[१] करती। चार अपने-पराये जमा होते। नज़र-नियाज़ होती। ज़ाकिर (बड़े लड़के का नाम था) को पन्द्रहवाँ साल है। माशाअल्लाह मसें भीगती हैं। उसका सील-कूंडे[२] करना है। और तो ख़ैर, बड़ी मुश्किल यह आन पड़ी कि हुरमुज़ी (बड़ी लड़की का नाम है) को नवाँ बरस है। शहर में होते तो उसकी निस्बत[३] का बन्दोबस्त करती। मुशातः[४] को बुलवा के कहीं से रुक़्आ[५] मंगवाती। मैं कहती हूँ कि यह होता क्या है। फट पड़े वह सोना जिससे टूटें कान। बाज़ आए हम इस पन्द्रह रुपये की नौकरी से। शहर के चने अच्छे और बाहर का पुलाव नहीं अच्छा।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी बहुत ही नेक और निमोही थीं, मगर पन्द्रह रुपये का ताना इतनी बार दिया गया कि आख़िर कलेजा पक गया। एक आध मर्तबा बोलना ही पड़ा। उनका बोलना था कि अच्छी ख़ासी लड़ाई ठन गई। बी सकीना बेगम आप ही आप ख़फ़ा हो गईं। बातचीत तर्क कर दी। आदतें उस ख़ानदान की बिलकुल बिगड़ी थीं। सबसे बढ़कर एक ख़राब आदत सवा पहर दिन चढ़े सो के उठना। नमाज़-दुआ से कोई वाक़िफ़ ही न था। मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी मुँह अँधेरे सो के उठती थीं और अपने साथ बेटी-बहू को भी उठाके नमाज़ पढ़वाती थीं उसके बाद कलाम-अल्लाह का एक सिपारः पढ़ा जाता था। मामाएँ असीलें[६] खाना पकाती थीं। बीवियाँ या किताबें पढ़ रही हैं या कुछ सी-पिरो रही हैं। ख़ुलासा यह कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन की जफ़ाकशी और मिहनतपसन्दी का तमाम घर पर असर था। छोटा-बड़ा इस ख़ान्दान का बेकारी को गुनाह अज़ीम समझता था। "अम्र बिल्मारूफ़ और नही अनिल्मुन्कर" याने 'अच्छे कामों के करने की हिदायत करना और बुरी बातों से रोकना' न सिर्फ एक फ़र्ज़ मज़हबी है बल्कि इन्सान की नेकी ख़ुद उसको कामों की तरफ़ मुतवज्जेह करती है। अगर तबीअतें बुराइयों की आदी न हो जायँ और उनमें तबीयत-पिज़ीरी[७] का जौहर मौजूद होता है तो इस्लाह मुमकिन है। जिन तबीअतों में ख़राब आदतें जड़ पकड़ लेती हैं तो उनमें बजाए तर्बियत पिज़ीरी के एक क़िस्म की ज़िद्द का माद्दा पैदा हो जाता है। इसमें शक नहीं कि उनका दिल भी अपनी बुराई का मुअ्तरिफ़[८] होता है मगर उसके तर्क[९] पर या तो क़ुदरत रखते या उसे मोहाल समझते हैं। इसलिए तबीयत उन हीलों को तलाश करने लगती है जिससे नसीहतगरों की ज़बानबन्दी की जाए या अगर औरों को नेकी करते हुए देख के ख़ुद अपना नफ़्स

---

१ बच्चे के दूध छुड़ाने की रस्म २ किशोरावस्था के आरंभ में नज़र-नियाज़ की रस्म ३ सगाई ४ ब्याह-काम तय कराने वाली औरत ५ रुक़्क़ः (सगाई का पैग़ाम) ६ शरीफ़ नौकरानियाँ ७ गुणग्राहकता ८ प्रशंसक ९ त्याग।

मलामत करे तो उसमें जौहरशरीफ़ को (जो फ़िलहक़ीक़त एक फ़िरिश्तः है जो हर हालत और हर वक़्त में इंसान को नेकियों की तर्ग़ीब[१] और बुराइयों से मना किया करता है और जब उसका कहना न मान के इन्सान बुराई करता है तो उसको सख़्त मलामत करता है) दबा देने बल्कि ख़ाक में मिला देने की कोशिश की जाती है।

मसलन जब मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी ने देखा कि कई वक़्त नमाज़ के गुज़र गये और मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी ने नमाज़ न पढ़ी तो पहले उनको तअज्जुब सा हुआ। दो एक मर्तबा इरादा किया कि कुछ कहें लेकिन लिहाज़ के मारे कुछ न कह सकीं। आख़िर एक दिन मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी को अलाहिदा ले जाके इस तरह तमहीद[२] उठाई।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी मुझे एक बात में बड़ा तअज्जुब है मगर कहते हुए शरम आती है। अगर आप बुरा न मानें तो कहूँ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—कहो?

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—कहना यह है कि मैंने आपको नमाज़ पढ़ते नहीं देखा और न लड़कों को। यह आप लोग नमाज़ किस वक़्त और कहाँ पढ़ते हैं कि मुझको ख़बर नहीं होती। भाई साहब की अज़ान और नमाज़ की आवाज़ अक्सर आती है।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—हाँ वह पढ़ते हैं शायद।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—हाँय, यह शायद कैसा और क्या आप नहीं पढ़तीं?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—रमज़ान और मुहर्रम में तो पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ते हैं। और यूँ कभी पढ़ ली और कभी न पढ़ी।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—तो क्या फ़क़त मुहर्रम और रमज़ान में नमाज़ वाजिब है और दिनों में नहीं?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—अब यह तो मौलवी लोग जानें, जो मैंने देखा था तुम से कह दिया।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—अच्छा आप क्यों नहीं पढ़तीं?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह भी एक कमबख़्ती की मार है। बात इतनी है कि मेरी तबीयत में शुब्हा कुछ इस क़िस्म का है कि जहाँ ज़रा सी छींट पड़ गई या कुछ ऐसी बात हो गई बस जी नहीं चाहता नमाज़ पढ़ने को?

---

१ प्रेरणा २ भूमिका।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—शुब्हा तो आप जानती हैं मुए शैतान की तरफ़ से होता है। शैतानी वसवसे[1] के ख़याल से ख़ुदा की नमाज़ का छोड़ना कैसा ?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—ऐ है भाभी तुम तो पढ़ी लिखी हो। तुमसे दलील कौन मिलाये। अच्छा अबकी से नहाऊँगी तो ज़रूर पढ़ूँगी।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—जान बूझ के एक मर्तबा की नमाज़ क़ज़ा करने का नहीं मालूम कितना अज़ाब है। और आपने कह दिया कि नहाऊँगी तो पढ़ूँगी। अभी परसों तो आप नहाई थीं।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—ऐ है नहाई तो थी फिर छींट पड़ गई। कपड़े ग़ारत हो गये।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—कहाँ छींट पड़ गई। जहाँ छींट पड़ गई हो उसको धोके ग़ोता दे लीजिये। शौक़ से नमाज़ पढ़िये।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—अब यह क्या मालूम कहाँ छींट पड़ गई है। अगर ऐसा होता फिर क्या था।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—तो मालूम होता है आपने छींट पड़ते देखा नहीं। अगर देखा होता तो यह ज़रूर मालूम होता कि कहाँ पर छींट पड़ी।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—हाँ तो मैं ख़ुद ही कहती हूँ कि शुब्हा है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—शुब्हा पर नमाज़ तर्क नहीं हो सकती।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—ख़ुदा मारे या जिलाए। मुझसे हर सट्टे नहीं नहाया जाता।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—आपसे हर सट्टे नहाने को कौन कहता है। हाँ तो यह कहिए कि न पढ़ी जायगी।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—कपड़े तो छिया-बिया और नमाज़ पढ़ लूँ। ऐसी नमाज़ से क़ुर्बान।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—हाँ तो कहिये कि नमाज़ न पढ़ियेगा, और फिर जब आप ही न पढ़ें तो लड़के भला क्यों पढ़ने लगे।

ग़रज़ कि इस तक़रीर के बाद मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी को मायूसी हो गई।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी को जहाँ और शिकायतें थीं उन सब में एक यह बहुत बड़ी शिकायत थी।

"हाय इस जंगल में लाके डाला है जहाँ कहीं अज़ान की आवाज़ नहीं आती। जहाँ शाम हुई और गीदड़ बोलने लगे।"

---

१ प्रेरणा।

जिस दिन से नमाज़ के बाब में गुफ़्तगू हुई थी, अज़ान का ज़िक्र इस शिकायत से हज़्फ़ कर दिया गया था[१], मगर मातम की शिकायत बाक़ी थी बल्कि उस दिन से मातम के लफ़्ज़ पर ज़्यादा ज़ोर दे दिया गया था। वजह उसकी यह थी कि जब इन्सान की एक बुराई साबित हो जाती है तो वह अपनी बाज़ नेकियों को जो उसमें मौजूद हों ज़ाहिर करने की ज़्यादातर कोशिश करता है, ताकि उसकी बुराई की वजह से जो उसकी ज़िल्लत हुई है दूसरी नेकी उसका मुवाज़नः[२] कर दे।

मातम के बार-बार तज़्किरे से यह मक़्सूद था कि अगर्चे हम नमाज़ के पाबन्द नहीं हैं लेकिन मातमदारी का शौक़ हमें बनिस्बत और लोगों के कम अज़् कम मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी से ज़्यादः है। मिर्ज़ा आबिदहुसैन के घर में अगरचे मातम और नौहःख़्वानी[३] का ज़िक्र न था मगर ख़ुदा के फ़ज़्ल से छोटे से लेके बड़ा तक एक मज़हबी तारीख़ से वाक़िफ़ था। पैग़म्बर और अह्लेबैत[४] के नाम पर जानोदिल से फ़िदा थे। ज़िक्र-अह्लेबैत को इबादत समझते थे। मगर न उस तरह कि जैसा मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी का ख़याल था। आठवें दिन जुमेरात को सवा पैसे की रेवड़ियाँ मंगवा के खड़े हो जाना और दो बोल सीधे उल्टे किसी धुन में पढ़ लेना और मातम-हुसैन कहके सीनःकोबी[५] कर लेना उनके नज़दीक चन्दाँ वाजिबात[६] से न था। मिर्ज़ा आबिदहुसैन का तरीक़ः दीनदारी आम लोगों के ऐसा न था और उनमें एक सिफ़्त ख़ुदादाद थी कि जिस बात को अच्छा समझ लेते थे, उसको अमल में लाने से पहले उनको किसी से हिजाब[७] न होता था। अवाम की तक़्लीद-महज़[८] से उनको चिढ़ थी। यही तरीक़ः आपके घर भर का हो गया था।

चन्दरोज़ तक मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी की इन शिकायतों का कोई जवाब नहीं दिया गया। आख़िर ईमान की बात थी, कहाँ तक सुकूत किया जाता[९]। एक दिन मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी को कहना पड़ा।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—तो क्या तुम जुमेरात को मातम किया करती हो ?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—हाँ बीबी सौ काम दुनिया के करते हैं। कोई न कोई काम ईमान का भी तो करना चाहिए। आख़िर ख़ुदा को भी एक दिन मुँह दिखाना है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—मगर आप नमाज़ तो पढ़ती नहीं जो असल काम ईमान का है।

---

१ निकाल दिया गया था २ क्षतिपूर्ति ३ मरे हुए के लिए रोना, मुहर्रम में मातम करना ४ पैग़म्बर की संतान ५ छाती पीटना ६ अनिवार्य कर्त्तव्यों ७ संकोच, लज्जा ८ अन्धानुकरण मात्र ९ चुप रहा जाता।

मिर्ज़ाँ फ़िदाहुसैन की बीवी—अच्छा नमाज़ नहीं पढ़ते न सही। मातम तो आठवें रोज़ का नाग़ा नहीं होने पाता।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—ऐसे मातम से कोई फ़ायदा नहीं। जब नमाज़ न पढ़ी तो ख़ाली मातम से क्या होता है ?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—तौबः तौबः करो। कुफ़्र न बको। मातम को तुम इस तरह कहती हो ?

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—मैं सच कहती हूँ। इमामहुसैन इस बात से हरगिज़ राज़ी न होंगे कि ख़ुदा के फ़र्ज़ को आप तर्क करके उनका मातम कीजिए।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह तुमने क्या कहा। मातम एक पर एक है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—मगर नमाज़ हज़ार पर एक है। बग़ैर नमाज़ के मातम काम न आयेगा।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—भाभी बाहर रहते-रहते तुम्हारा ईमान दुरुस्त नहीं रहा और हाँ मैंने एक और बात सुनी है। तुम्हारे मियाँ! ऐ है मुवे वह कौन कहलाते हैं, हाँ ख़ूब याद आया नेचरी, तुम्हारे मियाँ तो नेचरी हैं। जानती हूँ कि तुमने भी मियाँ के साथ अपना ईमान खो दिया। जब तो तुम मातम को इस तरह कहती हो। तुम ऐसा न कहो, आल-औलाद वाली हो।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—क्यों इसमें आल-औलाद को ख़ुदा न ख़्वास्ता क्या ज़रर[1] है ?

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—तो इतना भी तुम नहीं समझतीं। आल-औलाद का ज़लल (ज़रर) तो होता ही है। ख़ुदा कोई लाठी लेके मारता है। जब उसकी बातों में तुम पै निकालती हो। उसकी सज़ा कुछ न कुछ होना चाहिए। या दीदों-घुटनों के आगे आये या ख़ुदा न ख़्वास्ता शैतान के कान बहरे औलाद के दुश्मनों पर बन आये। हर जुमेरात को मातम किया करती थी। शामत की मार तीन जुमेरातें नाग़ा हो गईं। बतूली ऐसी माँदी हो गई कि किसी तरह बचने की कोई तवक़्क़ो न थी। आख़िर मुझे ख़्वाब में दिखाया कि तू हमारा मातम किया करती थी, उसे तूने नाग़ा किया। आख़िर पाई न उसकी सज़ा।

दूसरे दिन से मैंने तीन वक़्त मातम करना शुरू कर दिया। सुबह, दोपहर, शाम, लीजिये उसी दिन से मेरी लड़की अच्छी होने लगी।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी इमामहुसैन को भी तुम लोगों ने अपना सा बना लिया कि ज़रा-ज़रा सी बात पर खफ़ा हो जाते हैं।

---

१ क्षति।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह तो ख़फ़ा होने की बात ही है। आपस में देख लो। यह ख़याल करो कि तुम मुझको ईद-बक़रीद हिस्सा भेजती हो। और जो नाग़ा करो तो मुझको रंज होगा या नहीं, बस यूँ ही समझ लो।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—आप तो मुझको कहती हैं मगर मालूम हुआ कि आप ईमान की बातें बिलकुल नहीं जानती।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—सच है अपनी हाई औरों पर गवाँई। जैसे तुम मियाँ की मुहब्बत में ख़ुदा और रसूल सब भूल गईं, वैसा सबको जानती हो। बस तुम्हारे ईमान का हाल तो मालूम हो गया कि शिया मोमिन होके तुम मातम की कोई असल नहीं समझतीं।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—मैं मातम की कोई असल समझती हूँ या नहीं, यह मेरा दिल जाने और मेरा ईमान। मगर मुझे ऐसा मालूम होता है कि आप मुसलमान होके ख़ुदा की नमाज़ जो वाजिबात[1] में से है उसी की कोई हक़ीक़त नहीं समझतीं; न ख़ुद पढ़ती हैं न बच्चों को सिखाती हैं। हम लोग इमामहुसैन के ग़म को इतना मानते हैं कि रोज़ बाद नमाज़ और कलाम अल्लाह के, सज्जादी के अब्बा हदीस पढ़ते हैं। या अगर वह बाहर होते हैं तो मैं ख़ुद पढ़ती हूँ। सब छोटे-बड़े घर के सुनते हैं, जो बातें ख़ुश होने की हैं उन पर ख़ुश होती हूँ और जो रंज करने की बातें हैं उन पर रंज करती हूँ। जिन बातों को उन्होंने मना किया है उनसे बचते हैं और जिन कामों के करने का हुक्म दिया है उसे हत्तल्मक़्दूर[2] करते हैं।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—हमने तो एक दिन भी नहीं देखा।

इस पर मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी बे-इख़्तियार मुस्कराने लगीं और कहा।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी आप क्योंकर देखतीं। आप तो उस वक़्त सोई रहती हैं।

"जो सोया उसने खोया"

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—(इस बात पर ज़रा खिसियानी सी हो गईं) तो एक दिन मैं भी सुनूँगी, भाई साहब क्या पढ़ते हैं।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—ख़ैर, वह आजकल दौरे पर हैं। आप सबेरे उठिए, मैं आपको हदीस पढ़कर सुनाऊँगी।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—ज़रूर कल ही सही। वायदा तो कर लिया। मगर मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी को एक दिन भी सबेरे उठना नसीब न हुआ कि वह हदीस सुनतीं।

---

१ अनिवार्य कर्तव्य २ यथाशक्ति।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन साहब की बीवी में एक और सिफ़्त थी। बात-बात में गाली। ख़्वाह ग़ुस्से में, बच्चों से बात करने में, हर-हर लफ़्ज़ के बाद एक मोटी सी गाली ज़रूर शरीक हो गई। हुरमुज़ी की ज़बान भी माशाअल्लाह ख़ूब आरास्त:[1] थी। छोटी लड़की जो गोद में थी उसकी ज़बान खुलने लगी थी। उसको गालियाँ तालीम दी जाती थीं और जो एक आध लफ़्ज़ उस मासूम बच्चे की ज़बान से निकल जाता था उससे बहुत ख़ुश होती थीं।

साहबज़ादे का सिन अब चौदह बरस से कुछ ज़ाएद था। जिनके सील के कूँडे का तज़किर: पहले हो चुका है। ज़िला, जुगत, फ़ब्ती में ताक़[2] थे। उनकी शिकायत सबसे बड़ी यह थी कि यहाँ कनकौए का कहीं ज़िक्र न था और बग़ैर कनकौआ उड़ाये आप क्योंकर रह सकते थे। आख़िर आपने यह कारस्तानी की कि मिर्ज़ा साहब के दफ़्तर में से आपने एक गड्डी ट्रेसिंग पेपर की उड़ाई, और पैमायश करने की झण्डियों से एक झण्डी का बाँस जो उनकी कोन का था उसको काट के काँप-ठड्डे छीले। कई कनकौए तैयार हो गये। डोर के लिए अम्माँ की पेंचकें सत्यानास कीं। ख़ुलासा यह कि उन्होंने अपने शुग़्ल के लिए अच्छा ख़ासा सामान तैयार कर लिया। पढ़ने-लिखने से कोई ग़रज़ न थी।

एक दिन आप कनकौआ उड़ा रहे थे। इत्तफ़ाक़ से कनकौआ टूट के एक ग़रीब किसान के खेत में जा गिरा। उस खेत में गेहूँ बोये हुए थे। आप बेतकल्लुफ़ खेत में घुस गए और ग़रीब किसान की मिहनत के सरसब्ज़ खेत को पामाल करते हुए कनकौआ उठा लाए। दो एक मर्तब: तो किसान चुप हो रहा लेकिन जब कई मर्तबा ऐसा इत्तफ़ाक़ हुआ तो उसने इन्जीनियर साहब (मिर्ज़ा आबिदहुसैन) से नालिश की। मिर्ज़ा साहब को तअज्जुब हुआ कि यहाँ कनकौआ कहाँ से आया। ग़रज़ कि वह कनकौआ मंगा के देखा गया। काग़ज़ मिर्ज़ा साहब ने पहचाना। निहायत जिज़बिज़ हुए[3]। अह्ल दफ़्तर पर सख़्त ताकीद की यह साहबज़ादे दफ़्तर न जाने पायें और ट्रेसिंग पेपर अपने पास से मंगाके दफ़्तर में दाख़िल किया।

साहबज़ादे में एक और आदत बद थी। इन्जीनियर साहब के बंगले के क़रीब एक सरकारी बाग़ था। उसकी निगरानी मिर्ज़ा साहब के ज़िम्मे थी। उसका ठेका साल के साल दिया जाता था। ख़ुद मिर्ज़ा साहब के घर में मेवे और तरकारी बाज़ार से आती थी। या अगर बज़रूरत बाग़ से लिया गया तो उसके दाम ठेकेदार को दिये जाते थे। साहबज़ादे ने उस बाग़ से नारंगियाँ और अमरूद कच्चे-पक्के बेतकल्लुफ़ तोड़ना और खाना शुरू कर दिये। अक्सर ऐसा भी हुआ कि मियाँ ज़ाकिर ने उस

१ सजी-सवाँरी २ बोल बोलने, व्यंग करने में दक्ष ३ झुंझलाये।

चुराये हुए माल से चार पाँच नारंगियाँ और अमरूद अपनी अम्माँ जान को भी दिये। उन्होंने भी बग़ैर उसकी तहक़ीक़ और तफ़्तीश के कि यह कहाँ से लाता है नोश करना शुरू कर दीं। आख़िर उसकी भी शिकायत शुदः शुदः[1] इन्जीनियर साहब के गोश-गुज़ार[2] हुई। यह चोरी का मामला था। मिर्ज़ा साहब ने ज़ाकिर को बुलाकर सख़्त तम्बीह की। और मज़ीद तम्बीह के लिहाज़ से यह भी कह दिया कि अगर अबकी ऐसा हुआ तो मैं तुमको थाने पर भेज दूँगा। यह ख़बर मियाँ ज़ाकिर की माँ तक पहुँची। ऐ लीजिए क़ियामत आ गई। गोया किसी ने भिड़ के छत्ते को छेड़ दिया। कोई कोसना और गाली बाक़ी न रखी। कई दिन तक बड़बड़ाया कीं। है है थाने पर भेजने वाला ग़ारत हो। ऐ लो, बच्चे ने दो नारंगियाँ बाग़ से तोड़ लीं, उस पर बच्चा थाने पर भेजा जाता है। यह अज़ीज़दारी है। सच है इस वक़्त के अज़ीज़ यज़ीद[3] होते हैं।

आख़िर यहाँ तक कि मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी को बोलना पड़ा। धड़ाधड़ी की लड़ाई हुई।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी बेचारी लड़ना जानती ही न थीं मगर आख़िर इन्सान थीं कोई फ़िरिश्तः तो थीं नहीं। झूठी और बेतुकी बातों पर ख्वामख़्वाह ग़ुस्सा आ ही जाता है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी आप भी क़ियामत करती हैं। यह तो कुछ ऐसी बुरा मानने की बात न थी जिस पर आप बेक़ुसूर बुरा भला कह रही हैं। लड़के ने सरकारी बाग़ से नारंगियाँ और अमरूद चुराए, इस पर अगर उन्होंने तम्बीह के लिए कुछ कहा तो क्या बेजा किया।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—बस इसी बात पर तो मेरे दिल में आग लगती है जब तुम चोरी का नाम लेती हो। चोरी कैसी? चचा का बाग़ समझ के लड़के ने दो फल तोड़ लिये तो इसमें क्या ऐब हो गया। यों रोज़ वहीं से फल-फलारी आया करती है। माशा अल्लाह घर भर खाता है तो कुछ नहीं।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—बस यही तो आप समझती नहीं। हमारे घर में जो कुछ आता है मोल आता है।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह तो हमने कहीं नहीं सुना। घर के बाग़ में से फल-फलारी मोल आता है।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—तो क्या हमारा बाग़ है यह?

---

१ धीरे-धीरे २ कानों में आई ३ ह० इमामहुसैन का क़ातिल।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—फिर किस का बाग़ है ?

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—सरकारी बाग़ है ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—अच्छा वह सरकार का सही । सरकार ने तो दिया है तर-तरकारी खाने को ।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—सरकार से तनख़्वाह दी जाती है, भत्ता दिया जाता है । तर-तरकारी खाने को बाग़ नहीं दिये जाते । और दिये जायँ तो कहाँ-कहाँ दिये जायँ । आज यहाँ कल वहाँ । रोज़ जो बदली होती रहती है । बाग़ पर क्या मौक़ूफ़ । लाखों रुपये की जायदाद, माल सरकारी, इनके हवाले रहती है । उसकी जो कुछ आमदनी आई वह सरकार में दी जाती है । मसलन यही बाग़ है । इसका ठेका साल के साल हो जाता है । ठेकेदार जो रुपया देता है वह सरकार में चला जाता है ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—हाँ, आधे-तिहाई का होगा ।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—तौबः करो । हम लोग सिवाए तनख़्वाह और भत्ते के एक हब्बा के गुनहगार नहीं होते । जिस तरह हमारी तनख़्वाह महीने-महीने सरकार से मिलती है, उसी तरह हम सरकारी माल का दाम-दाम सरकार को देते हैं । उसमें हमारा क्या हक़ है जो हम ले लें ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—अच्छा तो क्या फल-फलारी से भी गये गुज़रे ?

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—हमारी क्या हक़ीक़त है । बड़े इंजीनियर साहब जब दौरे पर आते हैं, उनके लिए जो मेवा, तरकारी जाता है उसके दाम उनसे वसूल कर लिये जाते हैं और वह ख़ुशी से दे देते हैं ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह तो सब कहने की बाते हैं । बच्चे ने दो नारंगियाँ तोड़ लीं उस पर तूमार बाँधा । अभी भाई साहब या मियाँ बाक़र दो अमरूद तोड़ लेते तो उनका हाथ कौन पकड़ लेता । अच्छा वह सरकार ही का बाग़ है फिर क्या सरकार हर वक़्त देखा करती है ।

मिर्ज़ा आबिदहुसैन की बीवी—भाभी फिर वही कहे जाती है । यह सच है, कोई हाथ न पकड़ लेता और न कोई हर वक़्त देखता रहता है । मगर ख़ुदा देखता है । यह तो खुली-खुली चोरी है । भला उनके दुश्मन क्यों चोरी करते । क्या ख़ुदा ने हमें पैसा नहीं दिया है जो हम मोल ले लेते ।

मिर्ज़ा फ़िदाहुसैन की बीवी—यह तो हमने यहीं आके सुना । ककड़ी के चोर की गरदन नहीं मारी जाती । फल-फलारी इसी लिए होता है जिसके हाथ लगा उसने तोड़ लिया । ऐ लो हमारे मैके में ख़ाला हमसाई के घर में बेरी का दरख़्त था ।

सलोकु

अगम अगाधि पारब्रहमु सोइ ॥
जो जो कहै सु मुकता होइ ॥
सुनि मीता नानकु बिनवंता ॥
साध जना की अचरज कथा ॥ १ ॥

रब की आली जात है जिसकी थाह न आए
जो जो उसका नाम ले नाम से मुक्ती पाए
नानक की यह अर्ज़ है सुन ले मेरे मीत
बात निराली साध की कर साधों से प्रीत

असटपदी ७

साध कै संगि मुख ऊजल होत साध संगि मलु सगली खोत ।
साध कै संगि मिटै अभिमानु साध कै संगि प्रगटै सु गिआनु ।
साध कै संगि बुझै प्रभु नेरा साध संगि सभु होत निबेरा ।
साध कै संगि पाए नाम रतनु साध कै संगि एक ऊपरि जतनु ।
साध की महिमा बरनै कउनु प्रानी,
नानक साध की सोभा प्रभ माहि समानी ॥ १ ॥

साध की संगत करले बन्दे चेहरा हो पुरनूर[1] तेरा
साध की संगत करले बन्दे मैल हो मन का दूर तेरा
साध की संगत करले बन्दे जाएगा सब मान ग़रूर
साध की संगत करले बन्दे ज्ञान का हो सब नूर हज़ूर
साध की संगत करले बन्दे क़ुर्ब[2] खुदा का पाएगा
साध की संगत करले बन्दे सब धन्धा मिट जाएगा
साध की संगत करले बन्दे नाम खुदा का हीरा पाए
साध की संगत करले बन्दे एक खुदा पर जान लड़ाए
किस फ़ानी[3] को क़ुदरत है जो साधुओं की तारीफ़ करे
'नानक' रब की हम्द करे जो साधुओं की तौसीफ़[4] करे ॥१॥

---

१ प्रकाशमय २ सामीप्य ३ नाशवान ४ गुणगान ।

साध कै संगि अगोचरु मिलै साध कै संगि सदा परफुलै
साध कै संगि आवहि बसि पंचा साध संगि अंमृत रसु भुंचा
साध संगि होइ सभ की रेन साध कै संगि मनोहर बैन
साध कै संगि न कतहुं धावै साध संगि असथिति मनु पावै
साध कै संगि माइआ ते भिंन साध संगि नानक प्रभ सुप्रसंन ॥२

साध की संगत करले बन्दे अनदेखा रब पाएगा
साध की संगत करले बन्दे फूल के फलता जाएगा
साध की संगत करले बन्दे पाँचों जज़्बों[१] पर हो बस[२]
साध की संगत करले बन्दे नाम का पाए अमरित रस
साध की संगत करले बन्दे बन कर सब की ख़ाक रहे
साध की संगत करले बन्दे बातें सुन्दर पाक कहे
साध की संगत करले बन्दे मन फिर क्यों आवारा[३] हो
साध की संगत करले बन्दे क़ायम मन का पारा हो
साध की संगत करले बन्दे माया मन से दूर रहे
साध की संगत करले 'नानक' रब तुझसे मसरूर[४] रहे ॥

साध संगि दुसमन सभि मीत साधू कै संगि महा पुनीत
साध संगि किस सिउ नहीं बैरु साध कै संगि न बीगा पैरु
साध कै संगि नाही को मंदा साध संगि जाने परमानंदा
साध कै संगि नाही हउ तापु साध कै संगि तजै सभु आपु
आपे जानै साध बडाई नानक साध प्रभू बनि आई ॥ ३

साध की संगत करले बन्दे दुश्मन भी हों यार तमाम[५]
साध की संगत करले बन्दे आला हों कर्दार[६] तमाम
साध की संगत करले बन्दे पास न आए बैर कभी
साध की संगत करले बन्दे जाएँ न टेढ़े पैर कभी
साध की संगत करले बन्दे बद न किसी को पाएगा
साध की संगत करले बन्दे अब्दी - चैन[७] मनाएगा

---

१ पाँचों इन्द्रियों २ संयम ३ भटकनेवाला ४ प्रसन्न ५ शत्रु भी मित्र हो
६ आमाल, आचरण ७ भक्तों को सुलभ परमानन्द

साध की संगत करले बन्दे तप न ख़ुदी की[1] आएगी
साध की संगत करले बन्दे ख़ुदराई[2] सब जाएगी
आप ख़ुदा ही जाने जो सन्तों की शान बड़ाई है
'नानक' साधुओं और ख़ुदा इन दोनों की बन आई है ।।३।।

साध कै संगि न कबहू धावै साध कै संगि सदा सुखु पावै ।
साध संगि बसतु अगोचर लहै साधू कै संगि अजरु सहै ।
साध कै संगि बसै थानि ऊचै साधू कै संगि महलि पहूचै ।
साध कै संगि दृड़ै सभि धरम साध कै संगि केवल पारब्रहम ।
साध कै संगि पाए नाम निधान नानक साधू कै कुरबान ।। ४ ।।

साध की संगत करले बन्दे मन की भटकन जाएगी
साध की संगत करले बन्दे हरदम राहत आएगी
साध की संगत करले बन्दे बातिम[3] का सब भेद खुले
साध की संगत करले बन्दे अनसहनी[4] आसान सहे
साध की संगत करले बन्दे आला मंजिल[5] पाएगा
साध की संगत करले बन्दे रब के घर में जाएगा
साध की संगत करले बन्दे पुख़्ता फिर ईमान रहे
साध की संगत करले बन्दे ख़ालिस[6] रब में ध्यान रहे
साध की संगत करले बन्दे नाम की पाए दौलत ज़र
'नानक' मैं क़ुर्बान गया इन साधुओं पर इन संतों पर ।।४।।

साध कै संगि सभ कुल उधारै साध संगि साजन मीत कुटंब निसतारै ।
साधू कै संगि सो धनु पावै जिसु धन ते सभु को वरसावै ।
साध संगि धरमराइ करे सेवा साध कै संगि सोभा सुर देवा ।
साधू कै संगि पाप पलाइन साध संगि अंमृत गुन गाइन ।
साध कै संगि स्रब थान गंमि नानक साध कै संगि सफल जनंम ।।५।।

साध की संगत करने से कुल कुनबे[7] का हो बेड़ा पार
साध की संगत करने से बच जाए कबीला साजन यार

---

१ अहंकार की आँच २ स्वेच्छाचार ३ हृदय ४ असह्य ५ गति ६ एकमात्र
७ सारे परिवार ।

साध की संगत करने से तू ऐसी दौलत पाएगा
जिस दौलत से औरों पर भी तू रहमत बरसाएगा
साध की संगत करने से ख़ुद सेवाधर्मी राज करे
साध की संगत करने से इन्दर भी तुझको सोभावे
साध की संगत करने से सब पाप तेरे झड़ जाते हैं
साध की संगत करने से हम अमरित से गुन गाते हैं
साध की संगत करने से हर मंज़िल को जा लेता है
साध की संगत करने से 'नानक' जीना फल देता है[1] ॥५

साध कै संगि नही कछु घाल दरसनु भेटत होत निहाल
साध कै संगि कलूखत हरै साध कै संगि नरक परहरै
साध कै संगि ईहा ऊहा सुहेला साध संगि बिछुरत हरि मेला
जो इछै सोई फलु पावै साध कै संगि न बिरथा जावै
पारब्रहमु साध रिद बसै नानक उधरै साध सुनि रसै ॥ ६

साध की संगत करने से सब कष्ट मुसीबत दूर रहे
साध के दर्शन होने से इन्सान सदा मसरूर[2] रहे
साध की संगत करने से सब दाग़ और धब्बे धोये जायँ
साध की सगत करने से हम दोज़ख़ से छुटकारा पायँ
साध की संगत करने से सुख दोनों जग में[3] पाते हैं
साध की संगत करने से जो बिछुड़े हैं मिल जाते हैं
साध की संगत करने से जो चाहेगा फल पाएगा
साध की संगत करने से इंसान न ख़ाली जाएगा
साध के मन मन्दिर के अन्दर आली रब का नाम रहे
साध की मीठी बात से 'नानक' नेक तेरा अंजाम[4] रहे ॥६

साध कै संगि सुनउ हरि नाउ साध संगि हरि के गुन गाउ
साध कै संगि न मन ते बिसरै साध संगि सर पर निसतरै
साध कै संगि लगै प्रभु मीठा साधू कै संगि घटि घटि डीठा
साध संगि भए आगिआकारी साध संगि गति भई हमारी
साध कै संगि मिटे सभि रोग नानक साध भेटे संजोग ॥ ७

१ जीवन सफल होता है २ प्रसन्न ३ लोक-परलोक दोनों में ४ अन्त, परिणाम

साध की संगत करने से रब नाम[1] सदा सुन पाओगे
साध की संगत करने से उस दाता के गुन गाओगे
साध की संगत करने से हम नाम खुदा का भूल न जाएं
साध की संगत करने से इंसान यक़ीनन[2] मुक्ती पाएं
साध की संगत करने से हो मीठा रब का नाम सदा
साध की संगत करने से हर दिल में देखें नूरे खुदा[3]
साध की संगत करने से हम सब फ़र्माबर्दार[4] हुए
साध की संगत करने से सब बेड़े अपने पार हुए
साध की संगत करने से जो रोग भी हों मिट जाएंगे
'नानक' अच्छे भागों वाले साध की संगत पाएंगे ।।७।।

साध की महिमा बेद न जानहि जेता सुनहि तेता बखिआनहि ।
साध की उपमा तिहु गुण ते दूरि साध की उपमा रही भरपूरि ।
साध की सोभा का नाही अन्त साध की सोभा सदा बेअन्त ।
साध की सोभा ऊच ते ऊची साध की सोभा मूच ते मूची ।
साध की सोभा साध बनिआई नानक साध प्रभ भेदु न भाई ।। ८ ।।

शान है ऊँची साधुओं की जो वेद कहाँ बतलाते हैं
सुन पाते हैं जितना जितना उतने ही गुन गाते हैं
शान है ऊँची साधुओं की जो तीन गुनों से दूर रहे
शान है ऊँची साधुओं की जग जिससे कुल भरपूर रहे
शान है ऊँची साधुओं की जिस शान का अन्त अंजाम नहीं
शान है ऊँची साधुओं की जो होती ख़त्म तमाम नहीं
शान है ऊँची साधुओं की जो हर बाला[5] से बाला है
शान है ऊँची साधुओं की जो हर आला से आला है
शान है ऊँची साधुओं की जो साधुओं को रास आई है[6]
'नानक' रब और साधुओं में कहता है कौन जुदाई[7] है ।।८।।

---

१ प्रभु का नाम २ निश्चय ३ ईश्वर का प्रकाश ४ आज्ञाकारी ५ श्रेष्ठ
६ संतों की बड़ाई संतों को ही बन आई है ७ विभिन्नता ।

सलोकु

मनि साचा मुखि साचा सोइ ।
अवरु न पेखै एकसु बिनु कोइ ।
नानक इह लछण ।
ब्रहमगिआनी होइ ॥ १ ॥

जिसके मन में सच बसे सच्ची जिसकी बात
आस न रखे ग़ैर की जाने एक ही ज़ात
रब का उसको ज्ञान है ग़ैर न उसको भाए
'नानक' जिसके वस्फ़[1] यह ब्रह्मज्ञानी कहलाए

असटपदी ८

ब्रहमगिआनी सदा निरलेप ॥
जैसे जल महि कमल अलेप ॥
ब्रहमगिआनी सदा निरदोख ॥
जैसे सूरु सरब कउ सोख ॥
ब्रहमगिआनी कै दृसटि समानि ॥
जैसे राज रंक कउ लागै तुलि पवान ॥
ब्रहमगिआनी कै धीरजु एक ॥
जिउ बसुधा कोऊ खोदै कोऊ चंदन लेप ॥
ब्रहमगिआनी का इहै गुनाउ ॥
नानक जिउ पावक का सहज सुभाउ ॥ १ ॥

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का दुनिया से नापाक न हो
जैसे फूल कवँल का जल में ख़ुश्क रहे नमनाक[2] न हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का वह दायम[3] बेदाग़[4] रहे
जैसे सूरज सूख सुखा कर हर शह पाक और साफ़ करे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब को देखे एक नज़र
यकसाँ जैसे आये हवा राजाओं और कंगालों पर

१ गुण २ गीला ३ हमेशा ४ निर्विकार, निर्दोष ।

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब्र से हरदम काम वो ले
जैसे धरती को इक खोदे इक चन्दन का लेप करे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का गुन वाला गुनवान है वह
आतिश[1] जैसी फ़ितरत[2] उसकी 'नानक' पाक इंसान है वह ॥१॥

ब्रहमगिआनी निरमल ते निरमला ॥
जैसे मैलु न लागै जला ॥
ब्रहमगिआनी कै मनि होइ प्रगासु ॥
जैसे धरि ऊपरि आकासु ॥
ब्रहमगिआनी कै मित्र सत्रु समानि ॥
ब्रहमगिआनी कै नाही अभिमान ॥
ब्रहमगिआनी ऊच ते ऊचा ॥
मनि अपनै है सभ ते नीचा ॥
ब्रहमगिआनी से जन भए ॥
नानक जिन प्रभु आपि करेइ ॥ २ ॥

जिनके मन में ज्ञान ईश का दिल का पाक और साफ़ है वह
मैल लगे कब पानी को जब निथरे तो शफ़्फ़ाफ़[3] है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का उसमें नूर समाया है
देखो जैसे धरती पर आकाश बराबर छाया है
जिसके मन में ज्ञान ईश का दुश्मन दोस्त बराबर हैं
जिसके मन में ज्ञान ईश का उससे दूर खुदी[4] की मैं[5]
जिसके मन में ज्ञान ईश का वह आला से आला है
सबसे खुद को नीचा समझे गो बाला से बाला है
रब का ज्ञान उसी को हो रब जिसको ज्ञानी आप बनाए
'नानक' ज्ञान उसी को होगा मालिक जिसको आप सिखाए ॥२॥

ब्रहमगिआनी सगल की रीना ॥
आतम रसु ब्रहमगिआनी चीना ॥
ब्रहमगिआनी की सभ ऊपरि मइआ ॥
ब्रहमगिआनी ते कछु बुरा न भइआ ॥

---

१ आग २ स्वभाव ३ निर्मल ४ अहंभाव ५ नशा ।

ब्रहमगिआनी सदा समदरसी ।।
ब्रहमगिआनी की दृसटि अंमृत बरसी ।।
ब्रहमगिआनी बंधन ते मुकता ।।
ब्रहमगिआनी की निरमल जुगता ।।
ब्रहमगिआनी का भोजन सिआनु ।।
नानक ब्रहमगिआनी का ब्रहम धिआनु ।। ३ ।।

जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का खुद को सबकी ख़ाक बताए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का वह रूहानी[1] लज़्ज़त[2] पाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का सब पर शफ़क़त[3] करता जाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का शर[4] उसके नज़दीक न आए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का नैन उसके अमरित बरसाएँ
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का एक नज़र सब उसको भाएँ
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का हर बन्धन से मुक्ती पाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का वह नेकी के रस्ते जाए
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का उसका भोजन रब का ज्ञान
जिसके मन में ज्ञान ख़ुदा का 'नानक' उसका रब में ध्यान ।।३

ब्रहमगिआनी एक ऊपरि आस ।।
ब्रहमगिआनी का नही बिनास ।।
ब्रहमगिआनी कै गरीबी समाहा ।।
ब्रहमगिआनी परउपकार उमाहा ।।
ब्रहमगिआनी कै नाही धंधा ।।
ब्रहमगिआनी ले धावतु बंधा ।।
ब्रहमगिआनी कै होइ सु भला ।।
ब्रहमगिआनी सुफल फला ।।
ब्रहमगिआनी संगि सगल उधारु ।।
नानक ब्रहमगिआनी जपै सगल संसारु ।। ४ ।।

---

१ आध्यात्मिक २ स्वाद ३ सहानुभूति ४ बदी ।

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का एक खुदा पर आस लगाए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का मौत भी उसके पास न आए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का वह मिस्कीं[1] तबियत पाए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का रहमो-करम पर[2] उमड़ा आए
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का सब धन्धों से यकसू[3] हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसको मन पर क़ाबू हो
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उससे हों सब काम भले
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का जग में फूले और फले
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसकी संगत करदे पार
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का 'नानक' गुन गाए संसार ॥४॥

ब्रहमगिआनी कै एकै रंग ॥
ब्रहमगिआनी कै बसै प्रभु संग ॥
ब्रहमगिआनी कै नामु आधारु ॥
ब्रहमगिआनी कै नामु परवारु ॥
ब्रहमगिआनी सदा सद जागत ॥
ब्रहमगिआनी अहंबुधि तिआगत ॥
ब्रहमगिआनी कै मनि परमानंद ॥
ब्रहमगिआनी कै घरि सदा अनंद ॥
ब्रहमगिआनी सुख सहज निवास ॥
नानक ब्रहमगिआनी का नही बिनास ॥ ५ ॥

जिसके मन में ज्ञान ईश का उल्फ़त[4] भी यक रंग[5] रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का रब भी उसके संग रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का नाम उसका आधार रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का नाम उसका परिवार रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का रहता है बेदार[6] सदा
जिसके मन में ज्ञान ईश का दूर उससे पन्दार[7] सदा
जिसके मन में ज्ञान ईश का मन उसका खुरसन्द[8] रहे
जिसके मन में ज्ञान ईश का घर उसके आनन्द रहे

---

१ विनम्र २ परोपकार पर ३ निश्चिंत ४ प्रेम ५ एक ही रूप यानी ईश्वर के प्रति हो ६ जाग्रत ७ दंभ, घमण्ड ८ प्रसन्न ।

जिसके मन में ज्ञान ईश का चैन और सुख में बसता जाए
जिसके मन में ज्ञान ईश का 'नानक' वह कब मिटने पाए ॥५॥

ब्रहमगिआनी ब्रहम का बेता ॥
ब्रहमगिआनी एक संगि हेता ॥
ब्रहमगिआनी कै होइ अचिंत ॥
ब्रहमगिआनी का निरमल मंत ॥
ब्रहमगिआनी जिसु करै प्रभु आपि ॥
ब्रहमगिआनी का बड परताप ॥
ब्रहमगिआनी का दरसु वडभागी पाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ बलि बलि जाईऐ ॥
ब्रहमगिआनी कउ खोजहि महेसुर ॥
नानक ब्रहमगिआनी आपि परमेसुर ॥ ६ ॥

जिसके मन में ज्ञान प्रभू का ब्रह्मज्ञानी कहलाता है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का एक से प्रेम लगाता है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का चिन्ता उससे दूर रहे
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का पाक उसका दस्तूर[1] रहे
उसके मन में ज्ञान प्रभू का जिसको देता वाली[2] है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का उसकी शान निराली है
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का क़िस्मत ही से पायें हम
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का बल-बल उसके जायें हम
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का ढूँढे उसको महेश्वर आप
जिसके मन में ज्ञान प्रभू का 'नानक' वह परमेश्वर आप ॥६॥

ब्रहमगिआनी की कीमति नाहि ॥
ब्रहमगिआनी कै सगल मन माहि ॥
ब्रहमगिआनी का कउन जानै भेदु ॥
ब्रहमगिआनी कउ सदा अदेसु ॥

---

१ नियम-व्यवहार २ संरक्षक, परमात्मा ।

ब्रह्मगिआनी का कथिआ न जाइ अधाख्यरु ।।
ब्रह्मगिआनी सरब का ठाकुरु ।।
ब्रह्मगिआनी की मिति कउनु बखानै ।।
ब्रह्मगिआनी की गति ब्रह्मगिआनी जानै ।।
ब्रह्मगिआनी का अन्तु न पारु ।।
नानक ब्रह्मगिआनी कउ सदा नमसकारु ।। ७ ।।

जिसके मन में ज्ञान खुदा का बन्दा है अनमोल वही
जिसके मन में ज्ञान खुदा का रौशन उस पर हाल सभी
जिसके मन में ज्ञान खुदा का जाने उसका भेद खुदा
जिसके मन में ज्ञान खुदा का उसको है आदेस[1] सदा
ज्ञानी की तारीफ़ में हम से आधा हर्फ़ न लिखा जाए
जिसके मन में ज्ञान खुदा का सबका वह ठाकुर[2] कहलाए
जिसके मन में ज्ञान खुदा का कौन उसे पहचानेगा
जिसके मन में ज्ञान खुदा का ज्ञानी उसको जानेगा
जिसके मन में ज्ञान खुदा का अन्त न उसका है अंजाम
जिसके मन में ज्ञान खुदा का 'नानक' उसको नित परनाम ।।७।।

ब्रह्मगिआनी सभ सृसटि का करता ।।
ब्रह्मगिआनी सद जीवै नही मरता ।।
ब्रह्मगिआनी मुकति जुगति जीअ का दाता ।।
ब्रह्मगिआनी पूरन पुरखु बिधाता ।।
ब्रह्मगिआनी अनाथ का नाथु ।।
ब्रह्मगिआनी का सभ ऊपरि हाथु ।।
ब्रह्मगिआनी का सगल अकारु ।।
ब्रह्मगिआनी आपि निरंकारु ।।
ब्रह्मगिआनी की सोभा ब्रह्मगिआनी बनी ।।
नानक ब्रह्मगिआनी सरब का धनी ।। ८ ।।

जिसके मन में ज्ञान ईश का जग का कर्ता धर्ता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का ज़िन्दा है कब मरता है

---

१ ईश्वर की ओर से पथप्रदर्शन २ पूज्य ।

जिसके मन में ज्ञान ईश का सुख मुक्ती का दाता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का पूरा काम बनाता है
जिसके मन में ज्ञान ईश का बे-नाथों का नाथ है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का रखता सब पर हाथ है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का खुद सारा संसार है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का आप ही निरंकार है वह
जिसके मन में ज्ञान ईश का शान उसकी इरफ़ानी[1] है
'नानक' जो ज्ञानी है रब का हाथ उसके सुल्तानी[2] है ॥८॥

सलोकु

उरिधारै जो अंतरि नामु ।
सरब मै पेखै भगवानु ।
निमख निमख ठाकुर नमसकारै ।
नानक ओहु अपरसु सगल निसतारै ॥ १ ॥

जिसके मन में बस गया प्यारे रब का नाम
सब में जो भगवान का देखे नूर तमाम
पल-पल रब को याद जो कर ले शीश झुकाय
अपरस[3] उसको जानिए 'नानक' जग तैराय

असटपदी ६

मिथिआ नाही रसना परस मन महि प्रीति निरंजन दरस ।
पर त्रिअ रूपु न पेखै नेत्र साध की टहल संत संगि हेत ।
करन न सुनै काहु की निंदा सभ ते जानै आपस कउ मंदा ।
गुर प्रसादि बिखिआ परहरै मन की बासना मन ते टरै ।
इंद्री जित पंचदोख ते रहत नानक कोटि मधे को ऐसा अपरस ॥१॥

---

१ ज्ञानमय २ बादशाही, सर्वनिधि सम्पन्न ३ पवित्र ।

झूठ न आए जिसके लब[1] पर सच का जिसको ज़ौक़[2] रहे
मन में इश्क़ ख़ुदा का हो दीदार[3] का हरदम शौक़ रहे
नाम हरम[4] का रूप न देखे अपनी आँख बचाए वह
सेवा करले साधुओं की संतों से प्रेम लगाए वह
कानों को ग़ैबत[5] से रोके औरों के वह ऐब छिपाए
ख़ुद को सब से नीचा समझे अदना[6] ख़ुद को कहता जाए
गुरु की उस पर रहमत हो सब बदियाँ दूर हटाए वह
दूर करे नफ़सानी ख़्वाहिश[7] मन को साफ़ बचाए वह
बच कर पाँचों ऐबों से[8] जो नफ़्स को जीते नेक है वह
'नानक' लाखों इंसानों से ऐसा अपरस एक है वह ॥१॥

बैसनो सो जिसु ऊपरि सुप्रसंन बिसन की माइआ ते होइ भिंन ।
करम करत होवै निहकरम तिसु बैसनो का निरमल धरम ।
काहु फल की इछा नही बाछै केवल भगति कीरतन संगि राचै ।
मन तन अंतरि सिमरन गोपाल सभ ऊपरि होवत किरपाल ।
आपि दृड़ै अवरह नामु जपावै नानक ओहु बैसनो परमगति पावै ॥२॥

विष्णू उसको जानो जिससे आप ख़ुदा मसरूर[9] रहे
विष्णू उसको जानो हरदम जो माया से दूर रहे
अलग से बचकर कर्म कमाए[10] कर्म हमेशा पाक रहे
विष्णू वह ऐसा है जिसका धर्म हमेशा पाक रहे
कर्म कमाए फल को त्यागे[10] फल का शौक़ मिटाए वह
रब की ख़ालिस भक्ती करके दाता के गुन गाए वह
याद करे तन मन से रब को जिसने सबको पाला है
सब पर रहमत करने वाला बख़्शिश करने वाला है
आप भी उसका नाम जपे औरों को नाम जपाए वह
विष्णू उसको समझो 'नानक' आला रुतबा पाए वह ॥२॥

भगउती भगवंत भगति का रंगु सगल तिआगै दुसट का संगु ।
मन ते बिनसै सगला भरमु करि पूजै सगल पारब्रहमु ।

---

१ होंठ २ स्वाद ३ दर्शन ४ पर स्त्री ५ परोक्ष निन्दा ६ तुच्छ ७ काम वासना ८ पाँच इन्द्रियों के विषय से ९ प्रसन्न १० निष्काम कर्म ।

साध संगि पापा मलु खोवै तिसु भगउती की मति ऊतम होवै।
भगवंत की टहल करै नितनीति मनु तनु अरपै बिसन परीति।
हरि के चरन हिरदै बसावै नानक ऐसा भगउती भगवंत कउ पावै॥३॥

जिसका नाम भगवती है भगवान की भक्ती करता है
जिसका नाम भगवती है हर बद सुहबत से डरता है
मन में भरम न रखे कोई वहम ग़ुमान मिटाता है
अपने रब में सब को देखे उसको सीस झुकाता है
जो संतों की संगत में सब मैल कपट का धोता है
उसका नाम भगवती है वह अक़्ल में आला होता है
हरदम अपनी भक्ती से भगवान की सेवा करता है
तन मन से वह अपने रब की उल्फ़त[1] का दम भरता है
अपने मन के मन्दिर में जो हर के चरन बसाता है
'नानक' ख़ास "भगवती" वह भगवान को अपने पाता है॥३॥

सो पंडितु जो मनु परबोधै राम नामु आतम महि सोधै।
राम नाम सारु रसु पीवै उसु पंडितु कै उपदेसि जगु जीवै।
हरि की कथा हिरदै बसावै सो पंडितु फिरि जोन न आवै।
वेद पुरान सिमृति बूझै मूलु सूखम महि जानै असथूलु।
चहु वरना कउ दे उपदेसु नानक उसु पंडित कउ सदा अदेसु॥४॥

"पंडित" उसको समझो तुम जो मन में जोत जगाता है
प्यारे रब के नाम का अपने मन में खोज लगाता है
नाम है रब का अमरित रस वह नाम का अमरित पीता है
उस पण्डित के उपदेशों से सारा आलम जीता है
वह पंडित जो रब की बातें मन में ख़ूब बसाता है
वह पण्डित फिर दुनिया में कब जोन बदलकर आता है
असल हक़ीक़त देखे पुराणों स्मृतियों और वेदों में
ज़ाहिर[2] को बातिन[3] में देखे हक़ को पाये भेदों में
चारों वर्णों को जो पण्डित एक तरह उपदेश करे
'नानक' ऐसे पण्डित को आदेश सदा आदेश करे॥४॥

---

१ प्रेम २ प्रकट ३ हृदय।

बीज मन्त्रु सरब को गिआनु चहु वरना महि जपै कोऊ नामु।
जो जो जपै तिस की गति होइ साध संगि पावै जनु कोइ।
करि किरपा अन्तरि उर धारै पसु प्रेत मुघद पाथर कउ तारै।
सरब रोग का अउखदु नामु कलिआण रूप मंगल गुणगाम।
काहु जुगति क्रितै न पाइऐ धरमि,
नानक तिसु मिलै जिसु लिखिआ धुरि करमि ॥५॥

बीज का मन्तर[1] नाम है रब का
नाम से सब को ज्ञान मिले
चारों वर्णों में जो चाहे
अपने रब का नाम जपे
जो जो नाम ये जपता है वह
मुक्ती द्वारे आता है
कोई क़िस्मत वाला है
साधुओं की संगत पाता है
रब की जिस पर किरपा होगी
मन में नाम बसाएगा
वहशी[2] मूरख भूत कठोर[3]
इन सबको पार लगाएगा
नाम खुदा का है एक दारू
रोग करे सब दूर यही
अपने रब के गुन गाना
खुशहाली (लुत्फ़) सरूर यही
उसका और न रस्ता कोई
पायें न उसको धर्मों में
नाम खुदा का मिल जाएगा
'नानक' हो जब कर्मों में ॥५॥

जिसकै मनि पारब्रहम का निवासु तिस का नामु सति रामदासु।
आतमरामु तिसु नदरी आइआ दास दसन्तण भाइ तिनि पाइआ।
सदा निकटि निकटि हरि जानु सो दासु दरगह परवानु।
अपुने दास कउ आपि किरपा करै तिसु दास कउ सभ सोझी परै।
सगल संगि आतम उदासु ऐसी जुगति नानक रामदासु ॥६॥

बसता है रब जिसके मन में
हरदम रब के पास है वह
पूछो मुझसे नाम जो उसका
राम का सच्चा "दास" है वह
देखे रूह जहाँ[4] की हर सू
सबमें उसको पाता है
रब के जितने दास हैं उनका
दास वही बन जाता है
हासिल जिसको क़ुर्ब[5] खुदा का
समझे हरदम पास है वह
इज़्ज़त हो दरगाह में उसकी
राम का प्यारा दास है वह

---

१ मूल मंत्र २ पशुओं ३ पत्थरों ४ दुनिया ५ समीपत्व।

जग का मालिक दास पे अपने जब रहमत फ़रमाएगा
उसको सब कुछ सूझेगा सब भेद उस पर खुल जाएगा
सब में रह कर अपने मन को सब से दूर हटाता है
'नानक' समझो राम का सच्चा दास वही कहलाता है ॥६॥

प्रभ की आगिआ आतम हितावै जीवनमुकति सोऊ कहावै।
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु सदा अनंदु तह नही बिओगु।
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी तैसा अंमृतु तैसी बिखु खाटी।
तैसा मानु तैसा अभिमानु तैसा रंकु तैसा राजानु।
जो वरताए साई जुगति,
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवनमुकति ॥ ७ ॥

प्यारे रब का हुक्म जिसे सो जान अपनी से प्यारा है[1]
"जीवन-मुक्ती" वही है उसका जीते जी छुटकारा है
सुख दुख उसको यकसाँ हैं ज़िनहार[2] ख़ुशी या शोक नहीं
रहता है आनन्द हमेशा उसको रोग बियोग नहीं
यकसाँ समझे दोनों को वह सोना हो या मिट्टी हो
अमरित जैसी मीठी शै[3] हो या ज़हरीली खट्टी हो
इज़्ज़त हो या ज़िल्लत हो इक जैसा सबको जानेगा
राजा हो कंगाल हो वह दोनों को यकसाँ मानेगा
अच्छा ही वह उसको समझे जो कुछ रब से आता है
जीवन मुक्त वही है 'नानक' साफ़ रिहाई[4] पाता है ॥७॥

पारब्रहम के सगले ठाउ जितु जितु घरि राखै तैसा तिन नाउ।
आपे करन करावन जोगु प्रभ भावै सोई फुनि होगु।
पसरिओ आपि होइ अनत तरंग लखे न जाहि पारब्रहम के रंग।
जैसी मति देइ तैसा परगास पारब्रहमु करता अबिनास।
सदा सदा सदा दइआल सिमरि सिमरि नानक भए निहाल ॥८॥

---

१ प्रभु की आज्ञा जिसको अपने प्राणों से अधिक प्यारी लगती है २ कभी भी
३ वस्तु ४ मुक्ति, छुटकारा।

१३१० आँखें खोकर सब्र करने का दर्जः

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है, फ़रमाते थे—बेशक अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल जब अपने किसी बन्दे की दो महबूब चीज़ों के साथ आज़माइश करता है (यानी उसकी आँखें जाती रहती हैं) और वह सब्र करता है, तो इनके एवज़ में जन्नत है। [बुख़ारी]

१३१४ आरज़:[1] पर सब्र करने का इनआ़म

हज़्रत अ़ता (र०) बिन अबी रबाह से रिवायत है कि मुझसे इब्नि अब्बास (र०) ने कहा—क्या मैं दिखाऊँ तुमको एक जन्नत वाली औरत ? मैने कहा, हाँ; कहा यह काली औरत है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आई और कहा कि मुझे मिर्गी का दौरा पड़ता है जिससे मैं बरह्नः[2] हो जाती हूँ। आप अल्लाह तआ़ला से मेरे लिए दुआ कीजिए। आपने फ़रमाया, अगर तू सब्र करे तो तेरे लिए जन्नत है। और अगर तू चाहे तो मैं अल्लाह तआ़ला से तेरी आफ़िय्यत[3] की दुआ करूँ। उसने कहा मैं सब्र करूँगी लेकिन आप अल्लाह तआ़ला से इसकी दुआ कीजिए कि मैं बरह्नः न हूँ [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३२६ ईज़ा[4] देने वाले के लिए दुआ़

हज़्रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (र०) से रिवायत है कि गोया मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को एक नबी की हिकायत[5] बयान करते हुए देख रहा हूं। उन पर अल्लाह की तरफ़ से दुरूद और सलामती हो। उनकी क़ौम उनको मारती थी और ख़ूनाख़ून कर देती थी और वह अपने चेहरे से ख़ून पोछते जाते थे और कहते थे कि ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को बख़्श दे, वह नहीं जानती (अज्ञान में है)। [बुख़ारी-मुस्लिम]

१३३६ मुसीबत गुनाहों का कफ़्फ़ारः[6] है

हज़्रत अबू सओ़द (र०) और हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि वह रसूलुल्लाह सल्ललाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं—आपने फ़रमाया कि मुसलमान को जो मुसीबत पहुँचती है ख़्वाह वह किसी क़िस्म की हो, बीमारी हो, रंज हो, ग़म हो, तकलीफ़ व ईज़ा हो, हत्ता

१ बीमारी २ नंगी ३ आरोग्य ४ कष्ट, दुःख ५ वार्त्ता ६ प्रायश्चित्।

कि उसके एक काँटा भी चुभे, अल्लाह तआला उसके सिलः में उसकी ख़ताएँ मुआफ़ कर देता है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

१४ मुसीबत इनायत-इलाही की दलील है

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। आपको हरारत[1] थी। मैंने कहा या रसूलुल्लाह ! आपको हरारत और सख़्त हरारत है। फ़रमाया हाँ, मुझको ऐसी हरारत है जैसे तुममें से दो को हो। मैंने कहा यह इसलिए कि आप को दोहरा अज्र मिले। फ़रमाया हाँ, जिस मुसलमान को कोई मुसीबत पहुँचे, काँटे चुभने की हो या उससे ज़ियादः, अल्लाह तआला उसके सबब उसकी बुराइयाँ दूर कर देता है, जिस तरह दरख़्त अपने पत्तों को झाड़ता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआला जब किसी के साथ भलाई करना चाहता है तो उसको किसी मुसीबत में मुब्तिलः करता है। [बुख़ारी]

मौत की आरज़ू न करे

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जब तुममें से कोई किसी मुसीबत में मुब्तिलः हो तो मौत की आरज़ू न करे। अगर मजबूर हो जाये तो कहे ऐ अल्लाह ! मुझको ज़िन्दः रख अगर ज़िन्दगी मेरे लिए बेहतर है; और मुझको मौत दे अगर मौत मेरे लिए बेहतर है। [बुख़ारी, मुस्लिम]

१६ अगलों की आज़माइशें और उनकी इस्तिक़ामत[2]

हज़्रत अबू अब्दुल्लाह (र०) ख़ब्बाब बिन अल्अरत्त से रिवायत है कि हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से शिकायत की। आप एक चादर से टेक लगाये हुए काबः के साये में बैठे थे। हमने कहा, या रसूलुल्लाह ! आप आप हमारे लिए मदद क्यों नहीं चाहते, आप हमारे लिए दुआ क्यों नहीं करते ? आपने फ़रमाया—अगली उम्मतों में आदमी पकड़े जाते फिर उनके लिए गढ़े खोदे जाते थे और उसमें उनको लिटाया जाता था और आरा उनके

---

१ ज्वर-ताप २ दृढ़ता।

सरों पर रखकर सर के दो टुकड़े कर दिये जाते थे और लोहे की कंघी उनके सरों में की जाती थी जो हड्डी और गोश्त में धँसती हुई निकल जाती थी। मगर यह तकलीफ़ें उनको दीन से नहीं हटाती थीं। ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआ़ला इस काम को ज़रूर पूरा करेगा यहाँ तक कि एक सवार सन्आ़ से हज़्-मौत की तरफ़ चलेगा और अल्लाह के सिवा किसी से न डरेगा§। हाँ भेड़िये का उसको अपनी बकरियों के लिए ख़तरः हो सकता है। लेकिन तुम जल्दबाज़ी करते हो। [बुख़ारी]

१६ हज़्रत मूसा अ० का सब्र

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि हुनैन के दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तक़्सीम[1] में कुछ लोगों को तर्जीह[2] दी। अक़्रअ बिन हाबिस को सौ ऊँट दिये, उ़यैनः बिन हुसैन को भी इसी तरह दिया, और कुछ लोगों को भी दिया। शुरफ़ाए अ़रब को उस दिन तक़्सीम में तर्जीह दी। एक आदमी ने कहा, यह तक़्सीम अद्ल[3] के साथ नहीं की गई। मैंने कहा, मैं इसकी ख़बर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ज़रूर दूँगा। जब मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और आपको ख़बर दी तो आपका चेहरा मुबारक सुर्ख़ हो गया; फिर आपने फ़रमाया कि अगर अल्लाह और उसका रसूल भी अद्ल न करे तो कौन अद्ल करेगा; और फ़रमाया, अल्लाह मूसा पर रहम करे, इससे ज़ियादः तकलीफ़ उनको दी जाती थी और वह सब्र करते थे। मैंने दिल में कहा, अब मैं आपको कोई तकलीफ़दिः[4] बात न पहुँचाऊँगा।

१७ दुनिया में सज़ा का मिल जाना इनायत की दलील है

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जब अल्लाह तआ़ला अपने किसी बन्दे पर भलाई का इरादः करता है तो दुनिया में उसके लिए सज़ा में जल्दी करता है और जब किसी बन्दे पर बुराई का इरादः करता है तो उसको ढील दे देता है

§ यह वाक़िअः पेश आया और इसी अरब में जिसमें दिन दहाड़े क़ाफ़िले लुटते थे, लोगों ने अपनी आँखों से देखा कि एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक बुढ़िया बेख़ौफ़ व ख़तर गुज़र जाती है और कोई टोकने वाला नहीं।

१ मालॆ-ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त सम्पत्ति) का बँटबारा २ बरीयता, श्रेष्ठता ३ न्याय ४ पीड़ाकारक।

कि वह गुनाहों में और फँसे; यहाँ तक कि क़ियामत के दिन उसको पूरा-पूरा बदला देता है। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बड़ी बला का बड़ा बदलः है; और अल्लाह तआ़ला को जिन लोगों से मुहब्बत होती है उनकी आज़माइश करता है। पस जो शख़्स उससे राज़ी हो तो उसके लिए राज़ी होता है और जो नाराज़ हो तो उसके लिए नाराज़ी है। [तिर्मिज़ी]

१८/४१ एक सहाबियः का सब्र और अक़्ल

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि अबू तलहः (र०) के एक लड़का था और वह बीमार था। अबु तलहः कहीं गये हुए थे; उनकी अ़दम मौजूदगी में लड़के का इन्तिक़ाल हो गया। जब वह पलटे तो पूछा मेरे लड़के का क्या हाल है। बीवी ने (जो उस लड़के की माँ थी) कहा कि वह पहले की बनिस्बत अब आराम से है। फिर खाना पेश किया, उन्होंने खाया फिर उनके साथ रहे-सहे और रात गुज़ारी। बाद में बीवी ने कहा कि लड़के को दफ़न कर दो। सुबह को अबू तलहः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और आपको ख़बर दी, आपने फ़रमाया कि रात को तुम साथ रहे? अबू तलहः (र०) ने कहा—हाँ। आपने फ़रमाया, ऐ अल्लाह! बर्कत दे; तो एक लड़का पैदा हुआ। हज़्रत अनस (र०) कहते हैं कि मुझसे अबू तलहः (र०) ने कहा कि इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास ले जाओ और उसके साथ कुछ खजूरें। चुनांचे मैं लाया। आपने फ़रमाया, इसके साथ कुछ है? मैंने कहा हाँ खजूरें हैं। आपने उसको लेकर मुँह में रक्खा और कुचल कर उनके तालू में लगा दिया और अ़ब्दुल्लाह (र०) नाम रक्खा।

बुख़ारी की एक रिवायत में है इब्नि उ़यैनः ने कहा कि एक बुज़ुर्ग ने मुझसे कहा कि मैंने अ़ब्दुल्लाह के दस लड़के देखे और सब हाफ़िज़े क़ुर्आन थे।

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अबू तलहः (र०) के लड़के का जब इन्तिक़ाल हुआ (जो उम्मि सुलैम र० से था) तो उम्मि सुलैम (र०) ने अपने घरवालों से कहा कि जब तक मैं न कहूँ अबू तलहः (र०) से न बताना। अबू तलहः (र०) आये, उन्होंने खाया-पिया, उम्मि सुलैम (र०) ने अच्छे कपड़े ओढ़े-पहने। अबू तलहः रात को रहे-सहे, जब उन्होंने देखा कि वह मुत्मइन हो गये तो उम्मि सुलैम (र०) ने कहा

ऐ अबू तलहः ! लोगों ने किसी ख़ान्दान को कोई चीज़ आरियतन[1] दी, अब वह तलब करते हैं। क्या उन घरवालों को यह हक़ है कि वह वापस न करें, रक्खे रहें ? अबू तलहः (र०) ने कहा नहीं, कहा तो बस अपने लड़के से सब्र करो और अपने अल्लाह से सवाब के उम्मीदवार रहो। अबू तलहः (र०) ग़ुस्सः हुए और कहा, मुझसे पहले तो बतलाया नहीं, अब बतलाती हो। फिर आप (सल्लल्लाहु) के पास आये और इसका ज़िक्र किया। आपने फ़रमाया—अल्लाह उस रात में बर्कत दे। कहा, वह बच्चा पेट में था और वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ एक सफ़र में थीं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी सफ़र से तश्रीफ़ लाते तो रात को तश्रीफ़ नहीं लाते थे। जब मदीना के क़रीब हुए, उम्मि सुलैम को तकलीफ़ हुई। तो अबू तलहः (र०) ठहर गये और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आगे बढ़ गये। अबू तलहः (र०) ने कहा, ऐ अल्लाह ! तू जानता है कि मुझे यह पसन्द है कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ निकलूँ और आपके साथ दाख़िल हूँ, और मैं ठहर गया हूँ जैसा कि तू देख रहा है। उम्मि सुलैम (र०) ने कहा, ऐ अबू तलहः (र०), जैसी तकलीफ़ पहले होती थी इस वक़्त वैसी नहीं है। हज़्रत अनस (र०) कहते हैं कि हम लोग चले और उनको तकलीफ़ शुरू हुई, जब वह दोनों आये तो लड़का पैदा हुआ। मेरी माँ ने मुझसे कहा, अनस! इस बच्चे को इस वक़्त दाई के सिपुर्द न किया जाये, जब तक तुम इसको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर न कर दो। सुबह मैंने बच्चे को उठाया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और ऊपर का क़िस्सा बयान किया।

१/४ १/२ ग़ुस्सः को ज़ब्त करना और उसकी फ़ज़ीलत[2]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—बहादुर वह नहीं जो किसी को पछाड़ दे, बहादुर वह है जो ग़ुस्सः के वक़्त अपने नफ़्स को क़ाबू में रक्खे। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२/४ ०/३ ग़ुस्सः का अिलाज

हज़्रत सुलैमान बिन सुरद से रिवायत है कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठा था और दो आदमी लड़ रहे थे। उनमें

१ मंगनी २ श्रेष्ठता।

का एक दूसरे को गाली दे रहा था और चेहरः सुर्ख़ था, रगें फूल रही थीं। आपने फ़रमाया कि मैं एक कलिमः जानता हूँ, अगर यह कहे तो ग़ुस्सः इससे दूर हो जाये। फ़रमाया—"अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीमि"। इसके सबब से जो ग़ुस्सः उसको आरहा है जाता रहेगा। उन्होंने उससे कहा कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया है कि "अऊज़ुबिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीमि" कहो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

२१/४७ क़ुदरत के बावजूद ग़ुस्सः दबाने का इनआम

हज़रत मुआज़ बिन जबल से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—जो अपने ग़ुस्से को ऐसे वक़्त में पी जाये कि वह अमल में ला सकता है तो अल्लाह तआला उसको मख़्लूक़ के[1] रूबरू क़ियामत के दिन बुलाये गा, यहाँ तक कि उसको इख़्तियार देगा कि फ़राख़-चश्म[2] हूरों में से जिसको चाहे पसन्द कर ले। [अबू दाऊद, तिर्मिज़ी]

२२/४८ ग़ुस्सः न करने की वसीयत

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा कि मुझे वसीयत कीजिए; आपने फ़रमाया कि ग़ुस्सः न करना। उसने फिर यही कहा कि मुझे वसीयत कीजिए; आपने फ़रमाया कि ग़ुस्सः न करना§।

२३/४९ दुन्यावी मुसीबतें मुसलमान को गुनाहों से पाक व साफ़ कर देती हैं

हज़रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—मोमिन मर्द और मोमिनः औरतों पर उनकी जानों, मालों और औलाद में बराबर आज़माइशें रहती हैं। यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला से ऐसी हालत में मिलेंगे कि वह गुनाहों से पाक व साफ़ हो चुके होंगे। [तिर्मिज़ी]

२४/५० जाहिलों से दरगुज़र करना[3] और क़ुर्आन की तामील[4] की एक मिसाल

हज़रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अब्बास से रिवायत है कि उयैनः बिन हुसैन आये और अपने भतीजे हुर बिन क़ैस के यहाँ उतरे। हज़रत हुर

---

§ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर शख़्स के हालात और ज़रूरत के मुताबिक़ ख़ुसीसी नसीहत व हिदायत फ़रमाते थे। यह साहब ग़ालिबन ग़ज़बनाक और ग़ुस्सःवर आदमी थे; इनके लिए इसी ताक़ीद की ज़रूरत थी।

१ लोगों के २ बड़ी आँखों वाली ३ अनदेखा करना, टाल जाना ४ आज्ञापालन।

उन लोगों में थे जो हज़्रत उमर (र०) के नज़दीक रहते थे। हज़्रत उमर (र०) के मुक़र्रब[1] व हमनशीं[1] आलिम हुआ करते थे; ख़्वाह अधेड़ उम्र के हों या जवान। उयैनः ने कहा, ऐ मेरे भतीजे! अमीर के यहाँ तेरी इज़्ज़त है सो मेरे लिए इजाज़त तलब कर, उन्होंने इजाज़त चाही। हज़्रत उमर (र०) ने उनको इजाज़त दी। जब वह आये, कहा ऐ बिन अल् ख़त्ताब! तुम हमको ज़ियादः नहीं देते हो और हमारे दर्मियान इन्साफ़ के साथ फ़ैसलः नहीं करते हो। हज़्रत उमर (र०) ग़ुस्सः हुए। क़रीब था कि उन पर हाथ उठायें। हज़्रत हुर (र०) ने कहा, या अमीरुल्मोमिनीन! अल्लाह तआ़ला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फ़रमाया—ख़ुज़िल् अफ़्व वअ़्मुर् बिल्उ़र्फि व अअ़्रिज़् अ़निल्जाहिलीन (मुआफ़ी इख़्तियार करो, नेकी का हुक्म दो और जाहिलों से एराज़[2] करो)।

बेशक यह जाहिल हैं। ख़ुदा की क़सम उमर (र०) यह आयत सुनकर बाल बराबर भी आगे नहीं बढ़े। ‡

३८ ख़ुदग़र्ज़ी और बेइन्साफ़ी पर सब्र

हज़्रत इब्नि मस्ऊद (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अंक़रीब मेरे बाद ख़ुदग़र्ज़ी और बे इन्साफ़ी देखने में आयेगी और ऐसे उमूर[3] जिन को तुम नापसन्द करोगे। उन्होंने कहा या रसूलुल्लाह! फिर आप हमें क्या हुक्म देते हैं? आपने फ़रमाया—जिसका तुम पर हक़ हो, अदा करना और तुम अपने हक़ के मिलने की दुआ़ करते रहना§।

हज़्रत उसैद बिन हुज़ैर (र०) से रिवायत है कि एक अन्सारी ने कहा, या रसूलुल्लाह! आप हमको कोई उहदः क्यों नहीं अता फ़रमाते

---

‡ यह ज़ब्ति नफ़्स बल्कि बेनफ़्सी और क़ुर्आन मजीद के इहतिराम की आ़ला मिसाल है। सिरे से ग़ुस्सः न आना इतना बड़ा कमाल नहीं मगर जोशे ग़ज़ब में क़ुर्आन की आयत सुनते ही ठण्डा पड़ जाना अ़ब्दिय्यत (बन्दगी) का आ़ला नमूना है।

§ दो चीज़े हैं। अदायें-फ़राइज़[4] व मुतालबः हुक़ूक़[5]—इस्लाम में अदाये फ़र्ज़ पर ज़्यादः ज़ोर दिया गया है और मौजूदः तमद्दुन[6] व सियासत[7] में मुतालबः हुक़ूक़ पर। दोनों के नतायज में वही फ़र्क़ है जो लाज़िमन होना चाहिए।

---

१ पास बैठनेवाले, सभासद २ उपेक्षा ३ मसले ४ कर्तव्य ५ अधिकार ६ सभ्यता ७ राजनीति।

जैसे फ़लाँ को अता फ़रमाया। आपने फ़रमाया—तुम अन्क़रीब मेरे बाद ख़ुदग़र्ज़ी और बेइन्साफ़ी देखोगे। पस सब्र करना यहाँ तक कि मुझसे हौज़ कौसर पर मिलो। [बुख़ारी-मुस्लिम]

३६/४६ दुश्मन से मुक़ाबलः की तमन्ना न करो, मुक़ाबलः हो तो सब्र से काम लो

हज़्रत अब्दुल्लाह (र०) बिन अबू अवफ़ा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक दिन दोपहर ढले तक दुश्मनों से मुक़ाबलः का इन्तिज़ार किया। फिर फ़रमाया, ऐ लोगो! दुश्मनों से मिलने की आर्ज़ू न करना और आफ़ीयत[1] माँगना; अगर उनका सामना हो जाये तो फिर सब्र और साबितक़दमी से काम लेना। और जान लो कि जन्नत तलवारों के साये में है। फिर फ़रमाया कि **अल्लाहुम्म मुन्ज़िलल्-किताबि व मुज्रियस्सहाबि व हाज़िमल्-अह्ज़ाबि अिह्ज़िम्हुम् वन्सुर्ना अलैहिम्** (ऐ अल्लाह किताब के उतारने वाले! और बादलों के दौड़ाने वाले! और लश्करों को हज़ीमत[2] देने वाले! इनको हज़ीमत दे और इन पर हमारी मदद फ़रमा।)

सदाक़त[3] व रास्ती[4]

आयात

या[1] अय्युहल्लज़ीन आमनुत्तक़ुल्लाह व कूनू मअस्सादिक़ीन।

ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ रहो।§

[पारः ११ सू० तौबः रु० १५।आयत ११६]

वस्सादिक़ीन वस्सादिक़ाति..........अज़ीमत्।

सच बोलने वाले मर्द और सच बोलने वाली औरतें।

[पारः २१ सू० अह्ज़ाबि रु० ५ आयत]

---

§ इस आयत में अच्छे और सच्चे लोगों की सुहबत इख़्तियार करने और उनके नक़्शेक़दम[5] पर चलने की ताकीद की है।

---

१ शान्ति २ पराजय ३ सच्चाई, ४ सदाचारिता ५ पदचिह्न।

फ़लौ सदक़ुल्लाह् लकान ख़ैरल्लहुम् ॥

अगर वह अल्लाह् से सच्चाई का मुआ़मला करें तो यह उनके लिए बेहतर है। [पारः २६ सूरतु मुहुम्मदिन् रु० ३ आयत २१]

अह़ादीस

द १/० रास्ती नेकी की रहबर[1] है

हज़्रत अब्दुल्लाह् (र०) बिन मस्ऊ़द से रिवायत है—वह रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं। आपने फ़रमाया कि सच नेकी की तरफ़ हिदायत करता है और नेकी जन्नत की तरफ़ हिदायत करती है। आदमी सच बोलता है यहाँ तक कि अल्लाह् तआ़ला उसको अपने पास सच्चों में लिखता है; और झूठ गुनाहों पर आमादः करता है और गुनाह दोज़ख़ की तरफ़ ले जाते हैं।* आदमी झूठ बोलता है। यहाँ तक कि अल्लाह् तआ़ला उसको झूठों और लाग़ियों में लिख लेता है। [बुख़ारी-मुस्लिम]

द २/१ सच इत्मीनान[3] है

हज़्रत हसन (र०) बिन अ़ली (र०) बिन अबीतालिब से रिवायत है कि मुझे रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़रमाना याद है कि छोड़ दो जो तुमको शक में डाले और उस चीज़ को इख़्तियार करो जिससे तुम्हारे दिल में खटक न पैदा हो। पस बेशक सच इत्मीनान है, और झूठ शक है। [तिर्मिज़ी]

द ३/२ रसूलुल्लाह् सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम

हज़्रत अबू सुफ़यान (र०) से रिवायत है कि वह अपनी लम्बी हदीस में हिरक़्ल के क़िस्से में बयान करते हैं कि हिरक़्ल ने कहा, तुमको किस चीज़ का हुक्म देते हैं (यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)। अबू सुफ़यान कहते हैं, मैंने कहा हमको हुक्म देते हैं कि अल्लाह् की

---

* मामूली रोजमर्रः की बातों में छोटे-छोटे झूठ बोलने से अल्लाह् के दफ़्तर में कज़्ज़ाबों[4] और लाग़ियों में उसका नाम दर्ज होता है।

---

१ राह दिखाने वाली २ डींगियों ३ तुष्टि ४ झूठों।

अिबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और जो तुम्हारे बाप-दादा कहते हैं उसको छोड़ दो और हमको नमाज़ और सच्चाई, सद्क़ः, सिलःरह्मी[1] और पाकदामनी[2] का हुक्म देते हैं। [बुख़ारी-मुस्लिम]

९३ सच्चे दिल से दुआ मक़बूल[3] होती है

हज़्रत सुहैल बिन हुनैफ़ (र०) से रिवायत है (वह बदरी थे) कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अल्लाह तआला से शहादत[4] का सच्चाई के साथ सवाल करेगा तो अल्लाह उसको शहीदों के मर्तबः को पहुँचाए गा, अगरचिः वह अपने बिस्तर पर मरे। [मुस्लिम]

९४ थोड़ा सा झूठ सारे सच को ग़ैर-मक़बूल[5] बना देता है

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि किसी नबी ने एक ग़ज़्वः[6] किया—उन पर अल्लाह का दुरूद और सलामती हो। उन्होंने कहा—मेरे साथ ऐसा आदमी न हो जिसने शादी की हो और न ऐसा कि जिसने घर बनाया हो और उसकी छतों को अभी न उठाया हो और न ऐसा कि जिसने बकरियाँ या उँटनियाँ ख़रीदी हों और उनके बच्चों का इन्तिज़ार§ हो। फिर उन्होंने कूच किया, अस्र के वक़्त या उससे पहले एक बस्ती के क़रीब हुए। सूरज से कहा कि तू भी अपने काम पर मामूर[7] है और हम भी मामूर हैं। फिर कहा ऐ अल्लाह ! इसको ठहरा दे, पस वह ठहर गया, यहाँ तक कि अल्लाह ने उनको फ़तह दी। उन्होंने ग़नीमत[8] जमा की, आग आई कि उसको खाये और न खाया। उन्होंने कहा तुम में चोरी है, हर क़बीलः का आदमी हमसे बैअ़त करे। जब बैअ़त की तो एक आदमी का हाथ उनके हाथ पर चिपक गया; फिर कहा तुममें चोरी है, तुम्हारा क़बीलः मुझसे बैअ़त करे तो दो या तीन के हाथ उनके हाथ पर चिपक गये; फिर कहा तुममें चोरी है तो एक सोने का सर गाय के सर की तरह लाये और उसको रक्खा। फिर आग आई और उसको खा लिया और

---

§ इसलिए कि उनका दिल उन चीज़ों की तरफ़ अटका रहेगा। बेजिगरी[9] और यकसूई[10] के साथ जिहाद न कर सकेंगे। ज़िन्दगी उनको अज़ीज़ होगी, मरने से गुरेज़[11] करेंगे और शहादत[12] का पूरा इश्तियाक़[13] न होगा।

---

१ सम्बन्धियों का ध्यान रखना २ सच्चरित्रता ३ स्वीकृत ४ वीरगति ५ अस्वीकृत, व्यर्थ ६ धर्मयुद्ध ७ नियुक्त ८ युद्ध में प्राप्त धन ९ निर्भयता १० निश्चितता, तल्लीनता ११ परहेज़ १२ प्राणोत्सर्ग १३ चाव, उत्कण्ठा।

ग़नीमत हमसे पहले किसी के लिए जाइज़ न थी, अल्लाह ने जब हमारी कमज़ोरी और ज़ो'फ़[1] को देखा तो उसको हमारे लिए जाइज़ कर दिया ।§ [बुख़ारी-मुस्लिम]

८८ झूठ से तिजारत की बर्कत जाती रहती है

हज़्रत अबू ख़ालिद बिन हकीम बिन हिज़ाम से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—ख़रीद व फ़रोख़्त करने वालों को इख़्तियार है जब तक अलग न हों अगर वह सच बोलें तो उनकी सौदागरी में बर्कत दी जायगी और अगर झूठ बोलें तो उनकी सौदागरी की बर्कत मिटा दी जायगी‡ ।

ग़ौर और ध्यान

आयात

अ़ल्लज़ी यराक ह़ीन तक़ूमु ला । व तक़ल्लुबक फ़िस्साजिदीन ।

वह तुमको देखता है जब तुम खड़े होते हो और नमाज़ियों में तुम्हारे फिरने और देख-भाल करने को ।

[पारः १९ सूरतुश्शुअ़रा'अि रु० ११ आयत २१८-२१९]

व हुव मअ़कुम् अैनमा कुन्तुम् ।

जहाँ कहीं तुम हो वह तुम्हारे साथ है ।

[पारः २८ सू० ह़दीद रु० १ आयत ४]

अिन्नल्लाह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैअुन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा'अि ।

§ पहल ज़माने में माले ग़नीमत (युद्ध में प्राप्त शत्रु-धन) तक़्सीम न होती थी । आसमानी आग आ कर उसे चट कर जाती थी । लेकिन जब लोग चोरी करने लगे तब उनकी इस कमज़ोरी पर अल्लाह ने रहम किया और माले ग़नीमत बाँट लेने की इजाज़त दे दी ।

† अगर अलग हो गये तो सौदा हो चुका अब मुआमला फ़स्ख़[2] नहीं हो सकता ।

‡ एक चीज़ है रुपया की ज़ियादती और एक चीज़ है बर्कत । बर्कत यह है कि उससे मुतमत्तिअ[3] होने का उनको मौक़ा मिले, रुपया काम आये, नेक अमल की तौफ़ीक़ हो—यह नहीं होगा ।

१ पस्तगी २ बदला ३ फ़ायदः उठाना ।

बेशक अल्लाह पर कोई बात नहीं छुपी, न ज़मीन की न आसमान की।
[पारः ३ सू० ३ आलि अिम्रान रु० १ आयत ५]

अिन्न रब्बक लबिल्मिर्सादि ॥ ।

बेशक तुम्हारा रब अलबत्ता घात में है।
[पारः ३० सू० ८६ फ़ज्र रु० १ आयत १४]

यअ्लमु ख़ाअिनतल्-अअ्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूरु । वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि ॥ वल्लज़ीन यद्अून मिन् दूनिही ला यक़्ज़ून बिशैअिन् ॥ अिन्नल्लाह हुवस्समीअुल्-बसीरु ।

वह जानता है आखों की ख़ियानत को और जो दिलों में पोशीदः रहता है और अल्लाह हक़ के साथ फ़ैसला करता है और जो उसके सिवा दूसरे को पुकारते हैं वह किसी चीज़ के साथ फ़ैसलः नहीं करते, बेशक अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।
[पारः २४ सू०मुअ्मिनि रु० २ आयत १६-२०]

अहादीस

नमाज़ इस ध्यान के साथ कि हम ख़ुदा को देख रहे हैं, अगर हम उसको नहीं देखते तो वह हमको देख रहा है

हज़रत उमर (र०) बिन अल्ख़त्ताब से रिवायत है कि एक रोज़ हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे। एक आदमी बहुत सफ़ेद कपड़े वाला और बहुत काले बाल वाला आया, उस पर सफ़र का निशान न था। हम लोग उसको नहीं पहचानते थे, वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठ गया। अपने घुटने आपके घुटने से मिला दिये और अपनी हथेली आपके ज़ानू पर रख दी, और कहा—या मुहम्मद (र०) ! मुझको इस्लाम के मुतअल्लिक़ ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, इस्लाम यह है कि कहो अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अन्न मुहम्मदर्-रसूलुल्लाहि। नमाज़ पढ़ो, ज़कात दो और रमज़ान के रोज़े रक्खो। अगर इस्तिताअत[1] हो तो ख़ानें काबा का हज करो। कहा, आपने सच फ़रमाया। हज़रत उमर (र०) कहते हैं कि हम लोगों को हैरत हुई कि पूछता भी है और तस्दीक़ भी

[1] सामर्थ्य।

करता है। फिर कहा कि ईमान के बारे में ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके फ़िरिश्तों पर, उसकी किताबों पर, उसके पैग़म्बरों और आख़िरत के दिन पर और अच्छी-बुरी तक़दीर पर। कहा आपने सच कहा, अब इहसान के मुतअ़ल्लिक़ बतलाइए। फ़रमाया, अल्लाह की अ़िबादत इस तरह करो गोया तुम अल्लाह को देख रहे हो, अगर तुम उसको नहीं देखते तो वह तुमको देखता है। कहा, क़ियामत के मुतअ़ल्लिक़ मुझ को ख़बर दीजिए। आपने फ़रमाया, जिससे पूछा जा रहा है वह सायल[१] से ज़ियादः नहीं जानता। कहा, अच्छा उसकी निशानियाँ क्या हैं ? कहा लौण्डी अपनी मालिका को पैदा§ करे और नंगे पाँव फिरने वाले, नंगे बदन, मुहताज लोग, बकरी चराने वाले एक दूसरे से बढ़-बढ़कर महल बनाएँ। फिर वह चले गये। बाद में आपने फ़रमाया, ऐ उमर (र०) तुम जानते हो यह सायल कौन था ? मैंने कहा अल्लाह और उसके रसूल ज़ियादः जानते हैं। आपने फ़रमाया, वह जिबरील थे, तुम्हारे पास आये थे ताकि तुमको तुम्हारा दीन सिखायें।

६७[२] अल्लाह का ख़ौफ़

हज़रत अबू ज़र (र०) और हज़रत मआ़ज़ बिन जबल (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जहाँ भी तुम हो अल्लाह से डरो और बुराई के बाद नेकी करो। वह उस बुराई को मिटा दे गी और लोगों के साथ अच्छे इख़्लाक़ से पेश आओ।

६८[३] अल्लाह की याद उसी से सवाल उसी से इस्तमदाद[२]

हज़रत इब्नि अ़ब्बास (र०) से रिवायत है कि एक रोज़ मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पीछे था। आपने फ़रमाया, ऐ लड़के ! मैं तुझको चन्द बातें सिखा दूँ। अल्लाह के हुक्मों की निगहदाश्त कर[३], वह तेरी हिफ़ाज़त करेगा; अल्लाह को याद कर, तू उसको अपने सामने पायेगा; और जब सवाल करना तो अल्लाह ही से सवाल करना, और जब मदद चाहना तो उसी से मदद चाहना, और जान ले कि अगर

§ इससे लौंडियों की कसरत और उसकी औलाद की तरक़्क़ी की तरफ़ इशारः है।

१ प्रश्नकर्ता २ मदद मांगना ३ सुरक्षा कर।

सारी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करे कि तुझको नफ़ा पहुँचाये तो तुझको कुछ नफ़ा नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो तेरे लिए अल्लाह ने लिख दिया है। और अगर सारी दुनिया इस बात पर इत्तिफ़ाक़ करे कि तुझको नुक़सान पहुँचाये तो नुक़सान नहीं पहुँचा सकती मगर वही जो अल्लाह ने तेरे लिए लिख दिया है। क़लम उठा लिये गये और सहीफ़े ख़ुश्क कर दिये गये। और एक रिवायत में है कि अल्लाह का ध्यान रखो, तुम उसको अपने सामने पाओगे; और आराम के ज़माने में अल्लाह से तअ़ल्लुक़ पैदा कर लो, मुसीबत के वक़्त काम आयेगा। और याद रक्खो जो तुमसे चूक गया वह तुम्हें पहुँचने वाला ही न था और जो पहुँचा वह ख़ता ही नहीं हो सकता था। याद रक्खो कि सब्र के साथ मदद है, मुसीबत के साथ कुशाइश[१] है और मुश्किल के साथ आसानी है।

६[४]९ बाज़ आमाल को मामूली समझना

हज़्रत अनस (र०) से रिवायत है कि तुम अमल करते हो और वह तुम्हारी निगाह में बाल से ज़ियादह हक़ीक़त नहीं रखते और हम उनको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अह्द[२] में हलाक कर देने वाले आमाल में शुमार करते थे।

६[६]० अल्लाह की ग़ैरत[३]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—अल्लाह तआ़ला को ग़ैरत आती है, और अल्लाह तआ़ला की ग़ैरत यह है कि इन्सान वह अमल करे जो अल्लाह ने उस पर हराम किया था।

६[६]१ अपनी साबिक़:[४] हालत याद रखना

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि बनी इस्राईल के ज़माने में तीन आदमी थे। एक कोढ़ी, दूसरा गंजा, तीसरा अन्धा। अल्लाह तआ़ला ने उनकी

† यानी गुज़िश्तः वाक़िआ़त पर अफ़सोस न करो। जो कुछ हुआ वह होने वाला ही था और जो नहीं हुआ वह होता ही नहीं। अफ़सोस से क्या हासिल (कैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ा तकुम् व ला तफ़रहू बिमा आताकुम्) (अब मुक़द्दर है, जो रह गया उस पर हस्रत[५] न करो जो मिला उस पर इतराओ नहीं)।

१ वृद्धि २ ज़माने में ३ लज्जा ४ बीती हुई ५ दु:ख, निराशा।

आज़माइश का इरादः किया, उनके पास एक फ़िरिश्ता भेजा। फ़िरिश्ता पहले सफ़ेद दाग़ वाले के पास आया और कहा, तुझे कौन सी चीज़ महबूब[1] है? उसने कहा अच्छा रंग और अच्छी जिल्द। और मुझ से यह बीमारी दूर हो जाये जिसकी वजह से लोग मुझसे नफ़रत करते हैं। फ़िरिश्तः ने उसके बदन पर हाथ फेरा तो अच्छी जिल्द और अच्छा रंग नसीब हुआ। कहा, कौन सा माल तुझे पसन्द है? कहा, ऊँट या गाय (रावी को शक है)। फ़िरिश्ता ने एक गाभिन उँटनी दी और बरकत की दुआ की। फिर गंजे के पास आया और कहा तू क्या चाहता है? कहा, मैं चाहता हूँ कि मेरा गंज दूर हो जाये जिसके सबब से लोग मुझसे परहेज़ करते हैं, और अच्छे बाल की ख़्वाहिश है। फ़िरिश्तः ने उस के सर पर हाथ फेरा तो उसका गंज दूर हो गया और अच्छे बाल निकल आये। कहा, कौन सा माल तुझे मर्ग़ूब[2] है? कहा, गाय। पस एक गाभिन गाय उसको दी और बर्कत की दुआ की। फिर अन्धे के पास आया और कहा, तेरी क्या ख़्वाहिश है? कहा, मैं चाहता हूँ कि अल्लाह तआला मेरी आखों को बीनाई[3] अता फ़रमाये ताकि मैं लोगों को देख सकूँ। फ़िरिश्ता ने उसकी आँखों पर हाथ फेरा तो उसकी बसारत[4] पलट आई। कहा, तुमको कौन सा माल पसन्द है? कहा, बकरी। पस उसको एक गाभिन बकरी दी। कुछ अर्सः बाद इन तीनों के जानवरों से मैदान भर गये। चन्द दिन बाद फ़िरिश्ता उसी सूरत और उसी हैअत (सूरत) में कोढ़ी के पास आया और कहा कि मैं ग़रीब आदमी हूँ, मेरी राह खोटी हुई, मैं आज के दिन नहीं पहुँच सकता। तुझे अल्लाह का वास्ता देकर सवाल करता हूँ कि जिसने तुझको अच्छी जिल्द और अच्छी खाल इनायत की, उस मुझको रास्ते का ख़र्च दे ताकि मैं पहुँच जाऊँ। सफ़ेद दाग़ वाले ने कहा मुझ पर बहुत हुक़ूक़ हैं। फ़िरिश्ता बोला ग़ालिबन मैं तुझको पहचानता हूँ तू फ़क़ीर था और मब्रूस भी। लोग तुझसे नफ़रत करते थे। अल्लाह तआला ने तुझ पर इहसान किया। कहा, वाह यह दौलत मेरे घर में बाप-दादों से चली आती है। फ़िरिश्ते ने कहा, अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तुझको वैसा ही कर दे। फिर गंजे के पास आया और वैसा ही सवाल किया जैसे कोढ़ी से किया था। गंजे ने वही जवाब दिया। फ़िरिश्ता ने कहा, अगर तू झूठा है तो ख़ुदा तुझको वैसा ही कर दे। फिर अन्धे के पास आया और कहा—मैं ग़रीब

---

१ प्रिय २ रुचिकर ३ दृष्टि ४ ज्योति ५ यानी मुझ पर बहुत ज़िम्मेदारियाँ हैं ६ सफ़ेद कोढ़ का रोगी।

आदमी हूँ, अपने वतन नहीं पहुँच सकता, तुझको अल्लाह का वास्ता देता हूँ जिसने तुझको बसारत अता फ़रमायी, मुझको रास्ते का ख़र्च दे ताकि मैं पहुँच जाऊँ। उसने कहा, बेशक मैं अन्धा था, अल्लाह तआ़ला ने मेरी आँखों को रौशन किया, तेरा जितना जी चाहे ले और जितना चाहे छोड़। ख़ुदा की क़सम मैं आज के दिन तुझसे न झगड़ूँगा, जिस चीज़ को तू ख़ुदा के नाम पर ले लेगा। फ़िरिश्ते ने कहा तेरा माल तुझे मुबारक हो, अल्लाह ने महिज़ आज़माइश[१] की थी। पस तुझसे अल्लाह राज़ी हुआ और तेरे उन दोनों साथियों से नाराज़ हुआ। [बुख़ारी-मुस्लिम]

६७ नफ़्स का एहतिसाब[२]

हज़्रत शद्दाद (र०) बिन औस से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अक़्लमन्द वह शख़्स है जो अपने नफ़्स का जाइज़ः[३] ले और आख़िरत के लिए अमल करे; पीछे रह जाने वाला वह है जो अपने नफ़्स को ख़्वाहिशों के पीछे डाल दे और अल्लाह से बड़ी-बड़ी उम्मीदें लगाये बैठा रहे। [तिर्मिज़ी]

६८ लायानी[५] बात से एहतिराज़[६]

हज़्रत अबू हुरैरः (र०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आदमी के इस्लाम की एक बड़ी ख़ूबी यह भी है कि उस चीज़ को छोड़ दे जो उसके मतलब की न हो।† [तिर्मिज़ी]

---

† जो न दुनिया की ज़रूरियात में से हो, न उस पर कोई सवाब मिलता हो, न उससे उसका बराहेरास्त कुछ तअ़ल्लुक़ हो। अल्लाह से डरना जैसा हक़ है, बड़ा मुश्किल काम है।

१ परीक्षा मात्र २ इन्द्रियनिग्रह ३ जाँच, देखभाल ४ अन्तिम फ़ैसले का दिन ५ व्यर्थ ६ बंचना।

बृहद्भानु भानुरु मुँ शीतळ पाइबि,
बिन्ध्य परबत हस्त उपरे थोइबि ग्ने । ४१ ।

बिकुषकु मने करें करे धरिबाकु,
बायकु पाशे[1] पकाइ पाशे[2] रखिबाकु ग्ने । ४२ ।

सरलार्थ—शनिरूपी सागर के मन्थनकारी मन्दर-पर्वत सदृश नृपश्रेष्ठ राजा दशरथ ने आनन्दमय स्वर में कहा, "अग्निदेव तथा सूर्यदेव से मैं शीतलता प्राप्त करूँगा और बिन्ध्य पर्वत को अपने हाथ पर रखूँगा। और भी; चन्द्रमा को हाथ में रखने तथा वायुको फँदे से बाँधने की इच्छा करता हूँ। (अर्थात् ऐसी अभिलाषाएँ मुझे असम्भव सी प्रतीत होती है। (४०-४१-४२)

बारिधि-मन्द-मन्दर—शनिरूपी सागर के मन्दर पर्वतके सदृश मन्थनकारी; नृपगणेश्वर—नृपश्रेष्ठ दशरथ; बृहद्भानु—अग्नि; भानु—सूर्य (यमक); पाइबि—पाऊँगा; थोइबि—रखूँगा। (४०-४१)

बिकुषकु—चन्द्र को, मने करे—मन करता हूँ; करे—हाथों में (यमक); पाशे[1]—फंद में; पाशे[2]—पास (यमक)। (४२)

बशिष्ठ शिष्ट उक्ति कि तहिँ प्रकाशिले,
बिषय कि? संशय कि ? सुमन्त्र भाषिले ग्ने । ४३ ।

सरलार्थ—दशरथ की ये बातें सुनकर बशिष्ठ कुछ समझ नहीं सके और संशय-चित्त होकर शिष्टता से उन्होंने पूछा, "विषय क्या है ?" सुमन्त्र ने प्रभु का दशरथ-पुत्र के रूप में जन्मग्रहण आदि सारी बातें सुनाकर अन्त में कहा, "इसमें संशय क्या है ?" अर्थात् "इसमें संशय बिलकुल है ही नहीं।" (४३)

बुझि मुनि हसि हसि सम्मतिकु इच्छि,
बाल्मीकि भबिष्य पुराणकु पुरा इच्छि ग्ने । ४४ ।

सरलार्थ—अब वशिष्ठ जी सुमन्त्र की बातों को समझ गये। हँसते हुए अपनी सम्मति प्रदान करके आपने फिर कहा, "वाल्मीकि मुनि ने भविष्य पुराण में पहले से यह लिख रखा है। (४४)

बैकुण्ठ बैकुण्ठपुर शून्य पूर्ण मूर्त्ति,
बिशेषत श्रुति[1] अछि श्रुति[2] ग्ने सुमृति ग्ने । ४५ ।

सरलार्थ–वेद तथा मनु प्रभृति धर्मशास्त्रों में यह विशेष रूप से श्रुत (सुना हुआ) है कि विष्णु जी बैकुण्ठ को शून्य करके पूर्ण मूर्त्ति धारण-पूर्वक मर्त्यलोक में जन्म ग्रहण करेंगे। (४५)

बैकुण्ठ—विष्णु; बैकुण्ठपुर—विष्णु का वासस्थान (स्वर्गपुर) (यमक); श्रुति[1] अछि—सुना है, श्रुति[2]—वेद (यमक)। (४५)

बाञ्छा से अनुसरण शरण बिहित,
बैबस्वतकुळे स्वतः आम्भे पुरोहित ये। ४६।

सरलार्थ–उन्हीं मानवावतारी विष्णु भगवान् की शरण का अनुसरण करने की कामना से हम स्वेच्छा से वैवस्वत मनु के वंश में (सूर्यवंश में) पुरोहित हुए हैं।" (४६)

आम्भे—हम। (४६)

बेळुँ बेळ नृपति - चित्तकु द्रबाइला,
बिधुशिळ परि बिधु से बाणी होइला ये। ४७।

सरलार्थ–चन्द्र जिस तरह चन्द्रकान्तमणि को पिघला देता है, उसी तरह, मुनि के चन्द्र के समान शीतल वाक्यों ने राजा के चित्त-रूपी चन्द्र-कान्तमणि को पिघला दिया। (४७)

विधुशिळ—चन्द्रकान्तमणि; विधु—चन्द्र। (४७)

बित्त बितरण सेहि दिनु से कामरे,
ब्रत सर्जित पूजित अपूज्य अमरे ये। ४८।

सरलार्थ–विष्णु भगवान् को पुत्र के रूप में प्राप्त करने की कामना से राजा दशरथ उसी दिन से दीनों में धन-रत्न का वितरण तथा विविध ब्रतों का आचरण करने लगे और उन्होंने अपूज्य रहे हुए देवताओं की पूजा की। (४८)

बैष्णबे भूसुरे सुरे कराइ मोदकु,
ब्रह्मचर्य्ये कर्म कृत कर्मशुभदकु ये। ४९।

सरलार्थ–राजा ने वैष्णवों, ब्राह्मणों तथा देवताओं की पूजा करके उनका आनन्द बढ़ाया। स्वयं वे ब्रह्मचर्य ब्रत में ब्रती होकर कार्य करने लगे ताकि ये सब कर्म शुभकारी हों। (४९)

बिबेचनामान मानसरे करे नित्य,
ब्यबस्थिते रजनीरे सुस्वप्न जनित ये । ५० ।

वितपन तपनबंशी से नृपोत्तम,
बिनाशइ दिनकु दिन से चिन्तातम ये । ५१ ।

सरलार्थ–सूर्य सदृश तेजस्वी सूर्य-वंशीय नृपश्रेष्ठ दशरथ नित्य अपने मन में पुत्रोत्पत्ति-विषय पर आलोचना-विवेचना करने लगे, और इसी हेतु रात में उसी प्रसंग में शुभ स्वप्न देखते रहे। इसके फलस्वरूप, उनके हृदय से चिन्ता-रूपी अन्धकार का नाश हुआ; अर्थात् धीरे-धीरे हृदय से चिन्ता हटती गयी। (५०-५१)

बोले उपइन्द्र भञ्ज भञ्जने दुरित,
बान-पदरे आदरे रचित चरित ये । ५२ ।

सरलार्थ–अपने पापों के विनाश के लिए इसी चरित का वर्णन करते हुए उपेन्द्र भञ्ज ने आनन्द के साथ बावन पदों में इस छान्द की रचना की। (५२)

॥ इति द्वितीय छान्द ॥

तृतीय छान्द

राग-रामकेरी

आद्यमक

बिदुष हे ! शुण रञ्जनरस मनकु देइ ।
बिदूषण राजसमाजे धर्मस्वरूपी सेहि । १ ।

बिदित मिथिळा नृपति नाम जनक तार ।
बिदिग दिगरे होइछि ख्यात यश याहार । २ ।

बिदगध[१] यज्ञ कर्मरे सर्वदारे से अति ।
बिदगध[२]-चित्त प्रापत नोहिबारे दुहिती । ३ ।

सरलार्थ—हे पण्डितो ! अनुराग-वर्द्धक इस रस को मन देकर सुनो । राजाओं में निष्पाप तथा परमधार्मिक, मिथिला राज्य के अधिपति जनक ऋषि हैं, जिनका यश चारों ओर प्रख्यात है । आप यज्ञ-कर्म में हमेशा निपुण हैं, परन्तु एक कन्या के अभाव-हेतु आपका हृदय व्याकुल रहता था । (१-२-३)

बिदुष हे !—हे पण्डितो! ; रञ्जन—अनुराग-बर्द्धक; बिदूषण—पापरहित; से हि—वही; तार—उनका; बिदिग दिगरे—चारों दिशाओं में; बिदगध[१]—पण्डित, निपुण; बिदगध[२]—व्याकुल । (१-२-३)

बृषाळ मखशाळ कृते दिने चषुँ अबनी ।
बृषाशापुँ मुक्ति पाइण मेना नामे कामिनी । ४ ।

बसि विमानरे गगने करुअछि गमन ।
बशीभूत शोभाप्रभारे हरे जननयन । ५ ।

बुधजनक[1] कि कळङ्क हीने पूर्ण सम्पदे ।
बुधजन[2] करे परते नभे दिबसे उदे । ६ ।

सरलार्थ–राजर्षि जनक एक विस्तीर्ण यज्ञशाला बनाने के लिए एक दिन भूमि जोत रहे थे । उस समय उन्होंने इन्द्र-शाप-विमुक्ता सुन्दरी शिरोमणि मेनका अप्सरा को आकाश मार्ग पर विमान में जाते हुए देखा । उसकी शोभा की प्रभा से जन-नयन मुग्ध हो जाता है । जनक जी भी उसकी शोभा से मुग्ध हो उठे । मेनका को देखकर पण्डितों को ऐसा प्रतीत हुआ मानो कलंकहीन पूर्णचन्द्र समस्त कलाओं के साथ दिन में आकाश पर उदित हुए हों । (४-५-६)

वृषाळ—विस्तीर्ण; मखशाळ—यज्ञशाला; चषु—जोतते; वृषाशापुँ—इन्द्र के शाप से; मेना—मेनका नाम्नी अप्सरा; बुधजनक[1]—चन्द्र; बुधजन[2]—पण्डित लोग ।(४-५-६)

बृषभास्या[1] से मण्डिबारे चित्त अति उद्‌बेग ।
बृषभाषा[2] एहि तरंगे ढाळिबारे अपाङ्ग । ७ ।
बिहरित[1] पुनः पुन कि सुधा पिइ चकोर ।
बिहरितरे से बहिछि निश्चे ए मनोहर । ८ ।

सरलार्थ–मेनका के चंचल कटाक्षपात से यह अनुमान किया जाता है कि वह स्वर्गपुरी जाने को उतावली हो रही है । उसे देखकर यह मनोहर उक्ति जँचती है कि मानो उसके नेत्र-चकोर उसके मुख-चन्द्र की चन्द्रिका-सुधा पान करते हुए बारबार बिहार कर रहे हों और उसके कटाक्ष-पात ने इस प्रकार चारों दिशाओं को विशेष रूप से मनोहर बना दिया है । (७-८)

वृषभास्या[1]—इन्द्रपुरी; वृषभाषा[2]—मनोहर उक्ति; बिहरित[1]—विहार करता हुआ; बिहरितरे[2]—चारों ओर । (७-८)

बळारातिपुरमण्डना शोभा जनक चाहिँ ।
बळाइले चित्त मो सुता पुण हुअन्ता एहि । ९ ।

सरलार्थ–इन्द्रपुर (स्वर्गपुर)-मण्डनकारिणी मेनका की शोभा को देखकर जनक ऋषि ने सोचा–“अहा ! यह कन्या मुझे प्राप्त होती!” (९)

बळारातिपुरमण्डना—स्वर्गपुरमण्डना (मेनका); चाहिँ—देखकर; बळाइले चित्त—मन किया; मो सुता—मेरी कन्या; हुअन्ता—होती; एहि—यही । (९)

बाळारुणाधरी कहिला जाणि ताहाङ्क चित्त ।
बाळाए एक्षणि अद्‌भुते होए सिना प्रापत । १० ।

सरलार्थ—बाल रवि की किरणों के सदृश लाल होठों वाली मेनका ने ऋषि के मनोभाव को समझ कर कहा, "इसी मुहूर्त्त आपको अकस्मात् एक कन्या प्राप्त होगी ।" (१०)

बाळारुणाधरी—बाल रवि की किरणों के सदृश लाल होंठों वाली; ताहांक—उनका; बाळाए—एक कन्या । (१०)

बळाहकुँ[1] जन्म होइला परा ईश्वर-भीरु ।
बळाहके[2] विद्युत् प्रकाश प्राये गन्धवतीरु । ११ ।

सरलार्थ—मेनका ने आगे कहा, "जैसे पार्वती ने पर्वत से जन्मग्रहण किया था तथा जिस प्रकार मेघ में बिजली का प्रकाश पैदा होता है, वैसे पृथिवी से वह कन्या उत्पन्न होगी ।" (११)

बळाहकुँ[1]—पर्वत से; बळाहके[2] मेघ में; ईश्वर भीरु—पार्वती; गन्धवतीरु—पृथिवी से । (११)

बाणी ग्ये एपरि लाङ्गळ अग्रे जात मञ्जूषे[1] ।
बाणिज्ये रत्नसंपुटक लभ्य परा मञ्जु से[2] । १२ ।

सरलार्थ—ऐसी वाणी सुनते ही लांगल के अग्र में जनक को एक सुन्दर पिटारी प्राप्त हुई; मानो वणिक (सौदागर) को एक रत्न का संपुटक मिल गया हो । (१२)

एपरि—ऐसी; मञ्जूषे[1]—एक पिटारी; मञ्जु से[2]—मनोहर, सुन्दर (प्रान्तयमक); परा—तरह, सदृश । (१२)

बिश्वमोहिनीए ता मध्ये देखि महाहरष ।
बिश्वकर्माकृत कृत्रिमपुत्री कि कळवश । १३ ।

सरलार्थ—उस पिटारी में विश्वमोहिनी एक कन्या को देखकर जनक जी अत्यन्त प्रसन्न हुए । उन्होंने सोचा, "विश्वकर्मा ने शायद कल से यह पुतली बनाई है ।" (कल-निर्मित पुतली हस्तनिर्मित पुतली से अधिक सुन्दर हुआ करती है ।) (१३)

कृत्रिमपुत्री—पुतली, गुड़िया; कळवश—कल के द्वारा । (१३)

बसुन्धराभबा जनक कोळ करि स्वभाव ।
बसु धराइला कृपणे कि कृपाळु दइब । १४ ।

सरलार्थ—जनक ऋषि ने सहर्ष पृथिवी-जात उस कन्या को अपनी गोद में बैठाया, जैसे पिता अपनी कन्या को गोद में लेता है; मानो कृपालु विधाता ने कन्जूस को रत्न धराया हो । (१४)

बसुन्धरराभबा—पृथिवीसंभूता; बसु—रत्न । (१४)

विश्वसृक एक करिछि धरि शोभाचयकु ।
विश्वकेतु केतु बान्धिला जाणि जगज्जयकु । १५ ।

सरलार्थ—संसार की सारी शोभाओं को इक्ट्ठा करके ब्रह्मा ने इस कन्या को निर्मित किया है । "इसके द्वारा जगत्-जय करूँगा"—इस आशा से कन्दर्प (कामदेव) ने पताका फहरायी । (१५)

विश्वसृक्—ब्रह्मा; विश्वकेतु—कामदेव; केतु—पताका । (१५)

बहु ऋषि ताङ्क संगते मेळ होइ थिले ।
बहु सीता नाम ए सीता य़ोगे जात बोइले । १६ ।

सरलार्थ—जनक के साथ वहाँ पर और अनेक ऋषि एकत्र हुए थे । उन्होंने कहा, "यह सीता (लांगल अर्थात् हल से जोतते समय भूमि-रेखा) से प्राप्त हुई है, इसलिए इसे 'सीता' नाम दिया जाय ।" (१६)

सीता—लांगल (हल) का अग्रभाग । (१६)

बिधि सनमत पृथिबी-भबा पार्थिबी एहि ।
बिधिरे मिथिला-उत्सबकारी मैथिळी कहि । १७ ।

सरलार्थ—ऋषियों ने आगे कहा, "यह कन्या पृथिवी से पैदा हुई है, इसलिए विधान में इसका नाम 'पार्थिवी' हुआ । फिर दैवयोग से मिथिलापुर की उत्सवकारिणी होने से यह 'मैथिली' नाम पायेगी ।" (१७)

बिधिसनमत—विधानानुसार; बिधिरे—दैवयोग से । (१७)

बिदेहजाया[१] कोटिएक हेले सम कि आउ ?
बिदेहदेशरे[२] उद्भबि बइदेही बोलाउ । १८ ।

सरलार्थ–"करोड़ों रतियाँ इकट्ठी होकर भी क्या इसके बराबर (सुन्दर) हो सकती हैं ? (अर्थात् कदापि नहीं।) विदेह देश में इसने जन्म ग्रहण किया है, इसलिए यह कन्या वैदेही कहलावे।" (१८)

विदेह[1] जाया—कन्दर्पपत्नी (रति); विदेह[2] देशरे—विदेह देश में; (१८)

बिदुष जनक-पाळने बोलाइब जानकी।
बिदूषण शोभा जेमार आउ सम आन कि ? १९।

सरलार्थ–"पण्डित जनक ऋषि के पालन से यह 'जानकी' कहलाएगी। निष्कलंक इस कन्या की शोभा की तुलना के लिए और कोई चीज़ है क्या ?" (अर्थात् नहीं।) (१९)

विदुष—पण्डित; विदूषण—दोषरहित, निष्कलंक। (१९)

बासरे उत्पळ कि लक्ष पारिजातक तुच्छ।
बासरे चहटे य़ोजनगन्धा नामहिँ स्वच्छ। २०।

सरलार्थ–"उस कन्या के सौरभ से कमल के सौरभ की क्या बराबरी हम करें ? ऐसे पारिजात का सौरभ भी तुच्छ हो जायेगा। शरीर का सौरभ एक योजन तक फैल जाता है, इसलिए इसका 'योजनगन्धा' नाम सार्थक होगा।" (२०)

बासरे—सौरभ में; उत्पळ—पद्म, कमल; चहटे—फैल जाता है; स्वच्छ—सार्थक। (व्यतिरेक अलंकार)। (२०)

बड़भि[1] उपरे दोळिरे रखि धात्री पाळित।
बड़-भी[2] उपमामानङ्क असमानरु जात। २१।

सरलार्थ–पालनेवाली धात्रियाँ चन्द्रशाला पर झूले में सीता को जिस समय झुलातीं, उस समय अनुपम सौन्दर्य की सृष्टि हुई। सीता की उस समय की शोभा के बराबर न हो सकने के हेतु और उपमाओं में बड़ा भय उत्पन्न हुआ। (२१)

बड़यि[1]—चन्द्रशाला; बड़—भी[2]—बड़ा भय; उपमामानंक—उपमाओं का; असमानरु—असमानता से (के कारण)। (२१)

बिनिद्र कि हेम शयने दुर्गा रूपा-पलंके ।
बिनिर्गत आन उपमा सेहि काळे पलके । २२ ।

सरलार्थ–झूले पर सोयी हुई सीता को देखने से ऐसा प्रतीत हुआ, मानो सुवर्ण-कान्तिविशिष्टा दुर्गा चाँदी के पलंग पर सोयी हुई हों। उस समय कन्या के पलक लगाने से और सब उपमाएँ निकल आईं। (२२)

हेम—सोना; रूपा—चाँदी। 'पलंके'—'पलके' में (प्रान्तयमक अलंकार।) (२२)

बाळकी[1] लीळा कउतुके अन्तःपुरस्था मोहि ।
बाळ कि[2] शैबाळ कमळ कोष उपरे शोहि । २३ ।

सरलार्थ–अपनी बाल्यावस्था की क्रीड़ा-कौतुक से उन कन्या ने अन्तःपुर की रमणियों को मुग्ध किया। उनके मस्तक पर बाल ऐसे शोभित होने लगे, मानो कमल-कली पर शैवाल (सेवार) शोभित हो रहे हों। (२३)

बाळकी[1] क्रीड़ा—बाल्यावस्था की क्रीड़ा; बाळ कि[2]—बाल क्या ('क्या' उत्प्रेक्षवाचक शब्द), शैवाळ—सेवार; कमळकोष—कमल की कली। (उत्प्रेक्षालंकार) (२३)

बाड़बर[1] चित्रप्रतिमा परि धरि ता उभा ।
बाड़बर[2] मध्ये पकाअ आन समान शोभा । २४ ।

सरलार्थ–जब वह कन्या दीवाल के सहारे खड़ी हुई, तो वह दीवाल पर अंकित चित्र-प्रतिमा की तरह शोभा पाने लगी। उसी शोभा से तुलना करने के लिए अन्य जितनी उपमाएँ उपलब्ध हैं [उन्हें] बाड़वाग्नि में फेंक दो। (२४)

बाडबर[1]—उत्तम दीवाल; उभा—खड़ी होना; बाडबर[2] मध्ये—बाड़वाग्नि में; पकाअ—फेंक डालो। (२४)

बिड़म्ब[1] नूतन मञ्जरी ढळित कि पवने ।
बिड़म्बण[2] अन्य दृष्टि ये टळ-टळ गमने । २५ ।

सरलार्थ–डगमगा कर चलते समय सीता पवन से हिलती-डुलती लम्बी नयी लता-सी दिखाई पड़ती थीं। उनकी चाल के समय दूसरी ओर

निगाह डालना व्यर्थ है। (अर्थात् उनकी चाल के सौन्दर्य के सामने दूसरी सब दिशाओं के सौन्दर्य निष्प्रभ हो जाते थे।) (२५)

बिड़म्ब[१]—बिलम्ब, लम्बी; नूतन मञ्जरी—नयी लता; ढळित—हिली-डोली; बिड़म्बण[२]—वृथा; टळ-टळ—डगमगाकर (उत्प्रेक्षा और व्यतिरेक अलंकार।) (२५)

वचकु[१] बाचके न कहुँ पुणि शुणि उत्साही।
बचकु[२] पिइला पढ़िला शुक मूकरे रहि। २६।

सरलार्थ--सीता की तोतली बोली बड़ी मधुर थी। उनकी कथा को वचन में प्रकाश करते ही सुननेवालों ने फिर सुनाने को उन्हें उत्साहित किया। (उनके स्वर के साथ समान होने के लिए) तोते ने कण्ठ शोधने की एक जड़ीबूटी 'बच' खाकर पढ़ा। तिस पर भी समान न हो सकने की वजह से मूक रहा। (२६)

बचकु[१]—कथा को; बाचके—वचन में; बचकु[२]—बच औषधि। (२६)

बाळी से[१] खेळिला शिशुङ्क सङ्गे क्रम क्रमरे।
बाळिशे[२] लक्षिबे से काळे रम्भा रमा समरे। २७।

सरलार्थ--उन बाला (सीता) ने क्रमशः शिशुओं के साथ खेलना आरम्भ किया। उस समय की शोभा को देखकर केवल मूर्ख लोग ही कहेंगे कि ये सीता रम्भा व लक्ष्मी के समान सुन्दर हैं। (अर्थात् रम्भा तथा लक्ष्मी की शोभा भी सीता की उस समय की शोभा से तुलनीय नहीं हो सकती।) (२७)

बाळी से[१]—वह बाला (सीता); बाळिशे[२]—मूर्ख लोग। (२७)

बेणी चारुशिरे शुकळ रंग फुले यतन।
बेणी त्रिपूर्व कि नभरु हेउछन्ति पतन। २८।

सरलार्थ--सीता के सुन्दर शिर पर सुशोभित वेणी में सफेद तथा लाल रंग के फूल सुन्दरता से गुँथे हुये हैं। ऐसा प्रतीत होता है मानो आकाश से त्रिवेणी (गंगा, यमुना तथा सरस्वती की सम्मिलित धारा) गिर रही हो। (नीले बाल, सफेद फूल तथा लाल रंग के फूल क्रमशः यमुना, गंगा और सरस्वती से तुलनीय हैं।) (२८)

यतन-मण्डित—सुन्दर; बेणी त्रिपूर्व—बेणी के पूर्व में 'त्रि' अर्थात् त्रिबेणी। (सीता की बेणी में त्रिबेणी की कल्पना सराहनीय है।) (२८)

बिलम्बित कर्णे कुण्डळ कि से शांकुळी बळा ?
बिळम्बित दम्भ चितरे देब चाहुँ नोहिला। २९।

सरलार्थ--कानो में कुण्डल झूल रहे हैं। कुण्डलों को देखते ही वे जंजीरों की तरह आँखों को बाँध रखते हैं। कितना ही धैर्यशाली व्यक्ति क्यों न हो, उस शोभा को देखने पर अपनी आँखें वहाँ से लौटा नहीं सकता। (२९)

बय कला काहिँ ए रीतिमान सुन्दरीमणि।
बयसंगति कि प्रकाशि आन प्रकारे आणि। ३०।

सरलार्थ--सुन्दरी-शिरोमणि सीता ने धीरे-धीरे अपनी बाल्यावस्था के ढंग त्यागकर प्रथम यौवनावस्था के हावभाव प्रकाश किये। (३०)

बय कला—त्याग किया; बयसंगति—यौवनारम्भ की अवस्था। (३०)

बिभाकाळे नारी य़ेमन्ते कन्याळंकार मुञ्चि।
बिभावना हेला तहिँरे नब-बिळास रञ्चि। ३१।

सरलार्थ--विवाह के समय जिस प्रकार नारी बचपन के आभूषणों को त्यागकर नये आभूषणों को चाहती है, उसी प्रकार सीता ने बाल्य-क्रीड़ाओं को त्याग नयी क्रीड़ाएँ करने को मन किया। (३१)

बिभाकाळे—विवाह के समय; य़ेमन्ते—जिस प्रकार; मुञ्चि—त्यागकर; बिभावना—विशेष इच्छा; तहिँरे—उसमें; रञ्चि—रचना करने को। (३१)

बसन्तदूत[1] ध्वनि कलाबेळे केते इंगित।
बसन्त[2] रागरे आळाप तहिँ करइ गीत। ३२।

सरलार्थ--बसन्तदूत कोयल जब बोलती थी, तब सीता उसकी बोली का उपहास करती हुई बसन्त राग में गीत गाती थीं। (सीता का स्वर कोयल की ध्वनि से अधिक मधुर तथा उत्कृष्ट था) (व्यतिरेकालंकार) (३२)

बसन्त[1]-दूत—कोयल; इंगित—उपहास; बसन्त[2]—राग विशेष। (३२)

बसन्त बसने[1] गण्ठिकि देइ कन्धे पकाइ ।
बसन्तवसन[2] मोहिबि एहि गुमान बहि । ३३ ।

सरलार्थ–पीला वस्त्र पहने, उसके आँचल में गाँठ दिये, सीता उसको अपने कन्धे पर डालती थीं । उससे प्रतीत होता था मानो सीता इसी अभिमान से कि मैं किसी न किसी दिन विष्णु (रामचन्द्र जी) को मुग्ध करूँगी, आँचल में गाँठ लगाये रख रही हों । (३३)

बसन्तवसने[1]—पीले वस्त्र में; बसन्तवसन[2]—पीताम्बर; विष्णु—रामचन्द्र ।(३३)

बन्धन करे नाना छन्दे नीबी से पुनः पुनः ।
बन्धचित्रपट एकान्ते चाहिँबारे सुमन । ३४ ।

सरलार्थ–सीता नाना छन्दों में नीवी (कटिबंध) बारबार बाँधने लगीं । फिर चौसठ बन्ध-चित्रित चित्रपट को एकान्त में देखने के लिए मन किया । (३४)

नीवी—कटिबन्ध; चाहिँ बारे—देखने के लिए । (३४)

बन्दि[1] य़ाहाकु बड़ बोलि सउन्दर्य्ये धरारे ।
बन्दी[2] परि होइ रहिला अबराधे धरारे । ३५ ।

सरलार्थ–जिन सीता को संसार में सौन्दर्य में श्रेष्ठत्व देकर हम बन्दना करते हैं, ऐसी सीता यौवनकाल में पदार्पण करने पर अन्तःपुर में बन्दी हो कर रहने लगीं । (३५)

बन्दि[1]—बन्दना करते हैं; बन्दी[2]—कैदी; अवरोधे—अन्तःपुर में । (३५)

बत्सर नबरु दिनकु दिन प्रभा बढ़ाइ ।
बत्सरे कुच अंकुरित एहि उत्प्रेक्षा होइ । ३६ ।

बर्णमाळी परा रोमाळि कि से सरघापन्ति ।
बर्णनीय एहि, करन्ति कि से ऊर्द्ध् वकु गति? । ३७ ।

सरलार्थ–नौ वर्ष की अवस्था होने पर दिन-दिन सीता की प्रभा बढ़ने लगी । वक्ष पर कुचों ने अंकुरित होकर यह उत्प्रेक्षा धारण की—

वर्णमाला-सी सीता की रोमावली मानो मधुमक्खियाँ हैं जो ऊपर की ओर गति कर रही हैं। यह वर्णना के योग्य है। (३६-३७)

वत्सरनवरु—नौ वर्ष से; वत्सरे—वक्ष में, वर्णमाळी—अक्षरमाला, सरघापन्ति—मधुमक्खियाँ। (३६-३७)

बिकळना करि सञ्चन्ति मधुकल्पद्रुमरे।
बिकळप, फळ अंकुरु भजे बृद्धिक्रमरे। ३८।
बिजय होइला क्रमुकठारु ताळसरिकि।
विजय हृदरे स्वयम्भू रूपे कले शम्भु कि ? । ३९।

सरलार्थ—स्तन रूपी कल्पद्रुम पर रोमावली रूपी मधुमक्खियाँ मानो मधु-संचय कर रही हों—यह विशेष रूप से अनुमान करना उचित है। अथवा उस कल्पद्रुम पर फल फले क्रमशः सुपारी से ताड़ के सदृश वृद्धि को प्राप्त हुआ है क्या ? अथवा क्या स्वयंभू (जो स्वयं वर्द्धित होते हैं) शिव-लिंग हृदय पर विराजमान हुआ है ? (३८-३९)

बिकळप—कल्पना; क्रमुक—सुपारी (३८-३९)

बळिश्रेष्ठ काम ताहाङ्क बाम कला प्रहार।
बळि बाटुळि कि स्तनाग्र रूपे से मनोहर। ४०।

सरलार्थ—सीता जी के श्यामवर्ण कुचाग्र को देखकर कवि उत्प्रेक्षा करते हैं कि बलवान् कन्दर्प ने जो शिव जी का शत्रु है, मानो गीली मिट्टी से गोले बनाकर स्तन-रूपी शिवजी को लक्ष्य कर के मारे। वे गोले स्तनों से टकरा कर नीचे गिर पड़ते। परन्तु वे अभी-अभी बनाये गये थे, इसलिए गीले तथा काले थे; वे काले तथा गीले गोले महादेव जी के शिर पर टकराकर जैसे वहाँ पर अटक गये हों। (४०)

बासरे यतने घोड़ाइ चोळ कबच देइ।
बास अंगी स्मर भयरु रति सेवने स्नेही। ४१।

सरलार्थ—कन्दर्प के भय से स्तन-शम्भु की रक्षा करने के लिए सौरभांगी सीता ने उसे चोली रूपी कवच के द्वारा आच्छादित करके उस पर फिर वस्त्र ओढ़ा। और भी रति की सेवा में मनोयोग दरसाया।

(रति की सेवा से उसके पति कामदेव सन्तुष्ट होंगे; अर्थात् रति-रस में सीता का मन मज्जित होने लगा।) (४१)

बासरे—वस्त्र से; घोड़ाइ—ओढ़कर; बासअंगी—सौरभाङ्गी (सीता)। (४१)

बनधबकु ये जिणिला कटी कृशता होइ।
बनधरकेशी किङ्किणी जयबाद्य बजाइ। ४२।

सरलार्थ—सीता की कटि ने क्षीणता में सिंह पर विजय प्राप्त की। इसलिए जलधर-केशी सीता ने किंकिणी रूपी जय बाद्य बजाया। (४२)

बनधब—जंगल का स्वामी सिंह; बनधर—जलधर, मेघ; बनधरकेशी—मेघ का सा वर्ण है जिनके केशों का (सीता)। (व्यतिरेक) (४२)

बळाहंसक नादे गति बड़ाइकि शुणाइ।
बळात्कारे मन्द सरणे गज हंस जिणाइ। ४३।

सरलार्थ—सीता का गमन सुन्दरता में गज और हंस की गति से बढ़ गया। जब वे मन्दगति करतीं, तो पैरों की पायजेब तथा नूपुरों की ध्वनि सुनाई पड़ती। मानो उस ध्वनि के जरिए सीता की गति की बड़ाई प्रगट हो रही हो। (अर्थात् उनकी गति हंस तथा गज की गति से धीरतर हुई।) (४३)

बळा—पैर की पायजेब (एक गहना); (?) हंसक—नूपुर; मन्दसरणे—धीर गति में; जिणाई—जीतती है। (व्यतिरेक) (४३)

बारणबृषा-गर्ब खर्ब करि ऊरु दीपित।
बारण दन्त-कुन्दा स्तम्भ कि कुंकुमलेपित। ४४।

सरलार्थ—उनकी दोनों जंघाओं ने केला वृक्ष के गर्व को खर्व करके दीप्ति प्रकाश की। (जंघाओं को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ) मानो चिकनाये हुए हाथी-दाँत के खम्भों पर कुंकुम-लेप हुआ हो। (४४)

बारणवृषा—केले का वृक्ष, बारणदन्त—हाँतीदाँत। (व्यतिरेक और उत्प्रेक्षा) (४४)

बाहु-शोभा चाहिँ मृणाळ कण्टककु बहिला।
बाहुटि ताड़रे जाणिलि से पूजाकु पाइला। ४५।

सरलार्थ—बाहुओं की शोभा को देखकर मृणाल ने (असमान होने की वजह से) काँटे धारण किये। उन पर सीता ने बाजूबन्द तथा ताड़ आदि गहने पहने हैं। मानो वे गहने बाहुओं की पूजा कर रहे हों। (अथवा बाहुओं के संस्पर्श में आने की वजह से वे गहने स्वयं पूज्य तथा आदरणीय हुए।) (४५)

मृणाळ—पद्मनाल; बाहुटि—बाजूबन्द; ताड़रे—ताड़ों से; जाणिलि—मैंने (कवि ने) जाना; पाइला—पाया। (व्यतिरेक) (४५)

ब्रह्माण्डरे नाहिँ से हस्ततुळ कहिबा तर्कें।
ब्रह्मा तेणु देला अतुळ करि नाम कटके। ४६।

सरलार्थ—सीता की हस्त-शोभा से तुलना करने के लिए संसार भर में कोई उपमा नहीं मिली। इसलिए ब्रह्मा ने उनके हस्त के स्वर्ण-कंकण को 'अतुल' नाम दे रक्खा है। कंकण के इस नाम से हस्तों की शोभा की अतुलनीयता प्रकट हो रही है। (४६)

से हस्ततुळ—उन हाथों की उपमा; कहिबा—(हम) कहेंगे; तेणु—इसलिए; देला—दिया; अतुल—हस्तालंकार (कंकण) का नाम, कटके—स्वर्णकंकण। (४६)

बिभूषण भूषानिचय सर्व सुन्दरीङ्करे।
बिभु से जानकी अतुल तांकु आम्भे एठारे। ४७।

सरलार्थ—पृथिवी की समस्त सुन्दरियाँ नाना अलंकारों से भूषित हो कर भी सीता के समान नहीं हो सकतीं। इसलिए उन्होंने (अलंकारों ने) सोचा—"सीता हम लोगों की प्रभु हैं। हम उनकी बराबरी नहीं कर सकते।" (अलंकार समस्त स्त्रियों के भूषण हैं, इसलिए अधिक सुन्दर हैं। परन्तु उन अलंकारों ने सीता की सुन्दरता को देख कर सोचा—सीता हम लोगों की प्रभु हैं, हम लोगों के उनके भूषण होने की बात तो दूर रही, उनकी समानता तक नहीं कर सकते।) (४७)

भूषानिचय—अलंकार समूह; आम्भे—हम लोग; तांकु—उनको; एठारे—यहाँ पर। (४७)

बन्दिआमण्डने श्रबणे ताळपत्र घउड़ि।
बन्दिआ[२] नोहि कि से ग्रिब, ग्रेउँ नयन पड़ि। ४८।

सरलार्थ—उन्होंने तड़का (तरकी) नामक कर्णाभूषणों को निकालकर 'बँदिआ' नामक कर्णाभूषण अपने कानों में पहने। उन पर जो आँखें गड़ जायँगी, वह बन्दिनी बने बिना कहाँ जायँगी ? (उन कर्णाभूषणों पर आँखें अटक जायँगी।) (४८)

बँदिआ—(देशज) कर्णाभूषण विशेष; ताळपत्र (देशज)—तड़का (तरकी) ('ताटंक' शब्दज) नामक कर्णालंकार; घउड़ि—निकालकर; बँदिआ—बन्दी, कैदी; नोहि—न होकर; ये॑उँ नयन—जो आँखें। (४८)

बाळी झलकादि सुफुल मल्लीकढ़ी विशेषे।
बाळी झलकाइ ये॑मन्त कहि नोहिब शेषे। ४९।

सरलार्थ—सीता ने बाली, झलका, करनफूल तथा मल्लीकढ़ी आदि कर्णाभूषणों के द्वारा भूषित हो जिस अनिर्वचनीय शोभा को धारण किया, उसका शेषदेव अपने सहस्र मुखों से भी वर्णन नहीं कर सकते। (४९)

बाळी—कन्या (सीता); ये॑मन्त—जिस प्रकार; कहि नोहिब शेषे—शेषदेव से कहा नहीं जा सकता। (४९)

बन्धा सुमनरे जूड़ा ये॑ धैर्य्य-उजुड़ा सेहि।
बन्धा सुमनकु पकाइ नेब के मुकुळाइ ? ५०।

सरलार्थ—नाना प्रकार के फूलों से मण्डित उनकी जूड़ा दर्शकों का धैर्य नाश करती थी। इसलिए एक ही बार उसे देखने पर उसमें बँध गये। मन को उस शोभा-दर्शन से लौटा लाना कठिन होता था। (५०)

सुमनरे—फूलों से; जूड़ा—बालों का बँधा हुआ समूह; बन्धा सुमनकु—बन्धे हुए अच्छे मन को। (५०)

बिशेषे चञ्चळ ईक्षण बाण से गतागत।
बिषे से ये॑युक्त कि अञ्जने ये॑णु अति ज्वळित। ५१।

बाजिबार[1] भये कुरङ्ग मीन बने पळाइ।
बाजीबार[2] गतागत से गति शिखिबा पाइँ। ५२।

सरलार्थ—उनके उज्ज्वल कज्जल-रंजित नेत्रों की चंचल गति को विषदग्ध शर समझ कर इस भय से कि कहीं हमारे शरीरों में यह शर

[ॐ]

श्रीराम-विजय

रचयिता

पं० श्रीधर

अनुवादक

प्रा० डॉ० गजानन साठे, साहित्यरत्न

(एम. ए.—मराठी-अंग्रेज़ी, हिन्दी, बी. टी., पीएच. डी. हिन्दी)

श्रीराम-पञ्चायतन

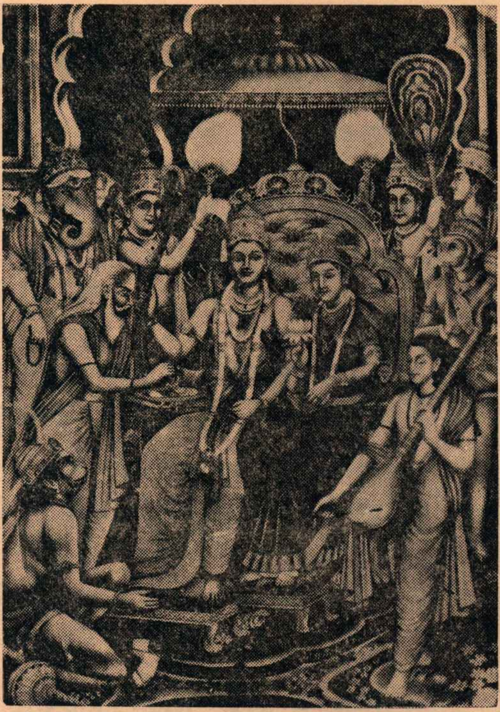

श्रीधर*

मराठी भाषा-भाषियों में श्री ज्ञानेश्वर-प्रणीत 'भावार्थ दीपिका' अर्थात् 'ज्ञानेश्वरी' और भक्तवर नामदेव, तुकाराम के अभंग अतीव लोकप्रिय हैं। ज्ञानेश्वरी दार्शनिक ग्रन्थ है और नामदेव, तुकाराम आदि की रचनाएँ स्फुट रूप में ही हैं। सत्रहवीं शताब्दी तक कथात्मक काव्यों की रचना भी मराठी में विपुल मात्रा में हो चुकी थी। परन्तु कवि श्रीधर की कथात्मक रचनाएँ जितनी लोकप्रिय हो गयी हैं, उतनी और किसी रचनाकार की नहीं हो सकीं। यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि जनसाधारण में श्रीधर के ग्रन्थ ही सर्वाधिक प्रिय रहे हैं। रामविजय, हरिविजय, शिवलीलामृत आदि ने उन्हें अमर बनाया है।

* सौभाग्य का विषय है कि विविध भाषाओं के परस्पर प्रतिबिम्बीकरण और सेतुकरण में अनुराग रखनेवाले पाठकों के निमित्त, 'भुवन-वाणी ट्रस्ट' को एक और कार्यक्रम प्रस्तुत करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है।

भारतीय संस्कृति और अखण्ड राष्ट्रीयता में सर्वोच्च निष्ठा-सम्पन्न मराठी भाषा के, सत्रहवीं शताब्दी में ख्यातिवान् कवि, विद्वान् और परमभक्त श्री पं० श्रीधर स्वामी द्वारा प्रणीत, महाराष्ट्र प्रदेश में अति लोकप्रिय प्रबंध-काव्य "श्रीराम-विजय" का, मूल ग्रन्थ सहित हिन्दी अनुवाद, भगवत्कृपा से आरम्भ हो रहा है।

ग्रन्थ और ग्रन्थ-प्रणेता का परिचय अनुवादक द्वारा आगे दिया जा रहा है। यहाँ अनुवादक महोदय की उदात्त भावना का, जिसके फलस्वरूप इस पावन कार्य का, हिन्दी भाषा के माध्यम से समस्त राष्ट्र में व्यापकत्व हो रहा है, कुछ परिचय, पाठकों के लिए प्रस्तुत है।

अनुवादक महोदय प्रा० डॉ० गजानन नरसिंह साठे, मराठी-अंग्रेजी, हिन्दी—तीन भाषाओं के एम.ए., हिन्दी में 'स्वयम्भु-कृत पउमचरिउ और गो० तुलसीदास कृत रामचरित-मानस का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर डॉक्टरेट-प्राप्त, अनेक मराठी-हिन्दी शोध-निबन्धों के रचयिता और सन् १९४० ई० से ही राष्ट्रभाषा प्रचार-कार्य में संलग्न, सम्प्रति पोद्दार कालेज, बंबई में हिन्दी के प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष हैं।

श्रीधर के पूर्वज समय-समय पर खड़की, नाझरे, निगड़ी आदि गाँवों में रहते थे। उनके पूर्वजों में से एक श्री राघोपन्त बिजापुर दरबार में अश्वदल के अधिकारी रह चुके थे। ये ही राघोपन्त 'नाझर' तहसील के अधिकारी होकर 'नाझरे' गाँव में आकर रहने लगे। इसी नाझरे गाँव में श्रीधर का जन्म हुआ। यद्यपि श्रीधर के जन्मकाल के विषय में मतभेद है, तथापि अब अधिकतर विद्वान् मानते हैं कि उनका जन्म वि० शक १५८० (अर्थात् ई० १६५८) में हुआ। ई० १६७८ के लगभग श्रीधर के पिता सपरिवार पंढरपुर में आकर रहने लगे। जान पड़ता है, श्रीधर इसी पुण्यक्षेत्र में अन्त तक रहते थे।

श्रीधर के पिता का नाम सम्भवतः 'ब्रह्माजी' था—यही 'ब्रह्माजी' संन्यास-दीक्षा ग्रहण करने के पश्चात् 'ब्रह्मानन्द' नाम से विख्यात हो गये। श्रीधर के गुरु उनके पिता ब्रह्मानन्द ही थे, जिनकी देखरेख में उन्होंने संस्कृत की शिक्षा पायी होगी। जान पड़ता है, उन्होंने अनेक संस्कृत तथा मराठी के ग्रन्थों का अनुशीलन किया था।

श्रीधर को कवित्व शक्ति धरोहर के रूप में मिली थी। उनके पूर्वजों में से दयानन्द (दादा), ब्रह्मानन्द (पिता), रंगनाथ स्वामी (चाचा), विठ्ठल (चचेरे भाई) आदि की रचनाएँ उपलब्ध हैं। श्रीधर के पुत्र दत्तात्रेय भी कवि थे।

श्रीधर में कवित्व शक्ति का विकास युवावस्था में ही हुआ जान पड़ता है। एक किंवदन्ती के अनुसार श्रीधर ने कुल सवा लाख छन्दों की रचना की, लेकिन इसमें

परिचय में वैचित्र्य इस प्रकार है कि 'भुवनवाणी ट्रस्ट' द्वारा विविधभाषाई सानुवाद लिप्यन्तरण के कार्यक्रम में कुछ उपलब्धियों की चर्चा कहीं से उन तक पहुँची। उन्होंने पत्र लिखकर समूल्य उन ग्रन्थों को मँगवाया, 'वाणी सरोवर' के ग्राहक बने और अपने क्षेत्र में ट्रस्ट के कार्यों को स्वतः सुपरिचित कराया। पत्र-व्यवहार होता रहा। मैंने मराठी के लोकप्रिय ग्रन्थों में से किसी एक का अनुवाद प्रकाशित करने की अपनी इच्छा व्यक्त की। श्री साठे महोदय ने ट्रस्ट को वाञ्छित पुस्तकें भेजवाने के साथ-साथ अपनी अमूल्य सम्मतियाँ समय-समय पर दीं और उन्हीं के सुपरिणाम में 'श्री रामविजय' का मधुरामृत आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत हो रहा है।

अतः इस पुनीत कार्य का श्रेय अनुवादक महोदय ही को है। उनका प्रस्ताव, उनके द्वारा ही अनुवाद-कार्य का वहन। ऐसे ही राष्ट्रसेवियों पर राष्ट्र की आँखें टिकी हैं। भगवान् संकल्प को पूर्ण करें।

नन्दकुमार अवस्थी—सम्पादक

अत्युक्ति दिखायी देती है। आज उनके विभिन्न ग्रन्थों में सिर्फ पचास हज़ार से कुछ अधिक छन्द उपलब्ध हैं। उनके द्वारा रचित ११ ग्रन्थों में से एक 'अम्बिका उदय' अप्राप्य है। प्रबन्ध-रचना के अतिरिक्त उन्होंने कुछ स्फुट मराठी रचना भी की है। उनकी कुछ संस्कृत कविताएँ भी उपलब्ध हैं। श्रीधर द्वारा विरचित प्रबन्ध काव्य निम्न-लिखित हैं—

१ हरिविजय, २ रामविजय, ३ पाण्डव-प्रताप, ४ वेदान्त-सूर्य ५ पाण्डुरंग-माहात्म्य, ६ मल्लारी-माहात्म्य, ७ व्यंकटेश-माहात्म्य, ८ ज्ञानेश्वर-चरित्र, ९ जैमिनी-अश्वमेध, १० शिव-लीलामृत।

'हरिविजय' में श्रीधर ने श्रीमद्भागवत, पद्मपुराण आदि से कथा-सूत्रों का चयन कर अत्यन्त रसात्मक शैली में श्रीकृष्ण के चरित्र का वर्णन किया है। इसी प्रारम्भिक रचना से उनकी कीर्ति चारों ओर फैल गयी। 'पाण्डव-प्रताप' में उन्होंने मुख्यतः पाण्डवों के प्रताप का ही वर्णन प्रस्तुत किया। इसका आधार है महाभारत तथा मराठी के कवि मुक्तेश्वर की महाभारत-सम्बम्धी रचनाएँ। 'वेदान्त-सूर्य' में वेदान्त के सिद्धान्तों की चर्चा है। 'पाण्डुरंग-माहात्म्य' में उन्होंने अपने निवास-स्थान पंढरपुर का महिमा-गान करते हुए भगवान् विठ्ठल का स्तवन किया है। कवि ने 'मल्लारी-माहात्म्य' में अपने कुलदेवता 'मल्लारी' की स्तुति की है। 'व्यंकटेश-माहात्म्य' और 'ज्ञानेश्वर चरित्र' ग्रन्थों के नाम से उनके विषय और स्वरूप की जानकारी मिलती है। कुछ विद्वानों के अनुसार 'जैमिनी अश्वमेध' श्रीधर-कृत रचना नहीं है। 'शिव-लीलामृत' श्रीधर की रचनाओं में सब से अधिक लोकप्रिय है। इसमें मूलतः १४ अध्याय रहे होंगे; इसका पन्द्रहवाँ अध्याय प्रक्षिप्त माना जाता है। इस ग्रन्थ में कथाओं के रूप में शिवमहिमा का वर्णन मिलता है। हज़ारों लोग इस ग्रन्थ का नित्य पठन करते हैं।

श्रीधर के बड़े ग्रन्थों में सर्वाधिक लोकप्रियता रामविजय को प्राप्त है। वाल्मीकि रामायण, हनुमन्नाटक, आदि रामचरित्रात्मक ग्रन्थ 'रामविजय' के लिए आधारभूत रहे हैं। कवि के सामने एकनाथ कृत (मराठी) भावार्थ रामायण भी रहा है। इसके अन्तर्गत कुल ४० अध्याय और लगभग ९१०० ओवी-छन्द हैं। अनेक लोग इसका भी नित्य पाठ करते हैं।

श्रीधर की लोकप्रियता का रहस्य उनकी सहजसुन्दर और आसान प्रासादिक भाषा और रसात्मक शैली में है। उन्होंने आम जनता में रूढ़ भाषा का प्रयोग किया है; हाँ, तुलसी की भाँति उसका संस्कार अवश्य किया है। उसमें कठिन शब्दों का प्रायः अभाव है। उनकी वर्णनशैली पाठकों और श्रोताओं के सामने घटनाओं को

मूर्त चित्रों में प्रस्तुत करने में समर्थ है। शृंगार, वीर और करुण रसों की प्रधानता होने पर भी प्रसंगानुसार उनकी रचनाओं में अन्य रसों को भी स्थान मिला है।

उन्होंने प्रधानतः मराठी के सुविख्यात छन्द 'ओवी' का प्रयोग किया है। 'ओवी' में चार चरण होते हैं, प्रथम तीन ही तुकान्त रहते हैं। शास्त्रीय दृष्टि से ओवी के प्रथम तीन चरणों में से प्रत्येक में आठ-आठ और अन्तिम में सात अक्षर होने चाहिए, लेकिन व्यवहार में इस नियम का पालन शायद ही किसी ने किया हो। हाँ, प्रथम तीन की अपेक्षा चौथा चरण छोटा होता है। ओवी छन्द चौपाई से बहुत कुछ मिलता-जुलता है और कथात्मक काव्य के लिए बहुत ही अनुकूल माना जाता है।

उपमा, रूपक और दृष्टान्त, श्रीधर के प्रिय अलंकार हैं। उन्होंने प्रायः परम्परागत उपमानों का ही प्रयोग किया है। अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के हेतु जब वे दृष्टान्तों की बौछार-सी कर देते हैं तो देखते ही बनता है।

श्रीधर का प्रमुख व्यवसाय 'कीर्तन' करना था। कीर्तनकार के नाते उनकी ख्याति दूर-दूर तक फैली थी। कीर्तनकार को लोकरुचि का और लोगों के सांस्कृतिक स्तर का ध्यान रखना पड़ता है:। उन्होंने श्रोताओं की नब्ज़ पहचानी थी और उसके अनुसार अपनी रचनाओं को प्रस्तुत करते हुए उन्होंने लोकमानस पर धर्म, नीति, सदाचार एवं सदभिरुचि का संस्कार उत्पन्न करने का सफल प्रयास किया।

कहा जा चुका है, हरिविजय, रामविजय, पाण्डव-प्रताप और शिव-लीलामृत ने श्रीधर को अमर बना दिया है।

श्रीधर का देहान्त पंढरपुर में शालिवाहन शक १६५१ (लगभग १७३० ई०) में हुआ। उनकी समाधि उनके पिता एवं गुरु श्री ब्रह्मानन्द की समाधि के समीप ही है।

—अनुवादक

श्रीराम-विजय

अध्याय—१

श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।। श्रीगुरुभ्यो नमः ।। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ।।

ॐ नमो जी पुराणपुरुषा । श्रीमद्भीमातटविलासा । दिगंबरा अविनाशा । ब्रह्मानंदा जगद्गुरो । १ जय जय जगद्वंद्या पूर्णब्रह्मा । अज अजित आत्मयारामा । नीलग्रीवहृदय-विश्रामा । पूर्णानंदा परात्परा । २ जय जय मायाचक्रचालका । मायातीता विरंचिजनका । सकळचित्तपरीक्षका । निजजनरक्षका करुणाब्धे । ३ कमलोद्भव वैकुंठ कर्पूरगौर । अंबिका गजवदन दिनकर । हीं स्वरूपें तुझीं साचार । तूं निर्विकार सर्वदा । ४

श्रीगणेशाय नमः ।। श्रीसरस्वत्यै नमः ।। श्रीगुरुभ्यो नमः ।। श्रीसीतारामचन्द्राभ्यां नमः ।।

मैं उन जगद्गुरु ब्रह्मानन्द को नमस्कार करता हूँ, जो प्रत्यक्ष पुराण-पुरुष हैं, भीमा नदी के तट पर निवास करते हैं और दिगम्बर (संन्यासी) एवं अविनाशी हैं। १ जगद्वन्द्य, पूर्णब्रह्म, अजन्मा एवं अजेय परमात्मा (श्रीराम) की जय हो, जो भगवान नीलकण्ठ (शिवजी) के लिए विश्राम (शान्ति)-स्वरूप हैं और जो पूर्णानन्द-स्वरूप एवं परात्पर हैं। २ उन भगवान् की जय हो, जो मायाचक्र के संचालक होने पर भी स्वयं माया (के प्रभाव) से परे हैं, जो ब्रह्मा के पिता और सब के मन के परीक्षक (मन के जानकार-मर्मज्ञ) हैं तथा अपने भक्त-जनों के रक्षक एवं करुणा के सागर हैं। ३ वस्तुतः, (हे भगवान्!) ब्रह्मा, (वैकुण्ठ-निवासी) विष्णु और शिवजी, देवी अम्बा (भवानी), गणेशजी और सूर्य—ये सब तुम्हारे ही रूप हैं; फिर भी तुम नित्य निर्विकार ही बने रहे हो। ४

मंगळकारक तूं गजवदन। मंगळारंभीं तुझेंचि नमन। मंगळजननीवरी करितां लेखन। तुझे गुण न सरती।५ रातोत्पलें सुकुमार बहुत। तैसे चरणतळवे आरक्त। प्रपद गौर नूपुरांसहित। ध्याती भक्त हृदयांतरीं। ६ क्षीरार्णवश्वेतांबर। कीं कांसेसी लागला क्षीरसागर। कीं निर्दोष यश पवित्र। वसनरूपें आकारलें।७ अरुणसंध्यारागमिश्रित। तैसी उटी दिसे आरक्त। कीं मंदराचळ सिंदूरर्चचित। चारही हस्त विराजती।८ भक्तांचा मनोवारण अनिवार। नावरेचि कदा साचार। तो आकर्षावया निर्धार। विवेकांकुश धरियेला।९ भावें जे शरण येती अज्ञानी जन। त्यांचें छेदावया अविद्याविपिन। यालागीं ऊर्ध्व फरश धरून। सिद्ध गजानन सर्वदा।१० हातीं झळके लीलाकमळ। जें अम्लान न विटे सर्वकाळ। तेणें

हे भगवान् गजाननजी ! तुम सब के लिए मंगलकारी हो, मंगल (कार्य) के आरम्भ में तुम्हारा ही नमन किया जाता है। तुम्हारी गुण-गरिमा का वर्णन पृथ्वी पर भी लिखा जाए, तो भी तुम्हारे गुण समाप्त नहीं होंगे।५ जैसे रक्त कमल बहुत ही कोमल होते हैं, वैसे ही तुम्हारे आरक्त तलुवे (कोमल) हैं। नूपुरों से शोभायमान तुम्हारे चरणों का अग्र भाग गौर (अर्थात् उज्ज्वल) है। भक्तजन अपने हृदय में तुम्हारे उन्हीं चरणों का ध्यान करते हैं।६ तुम्हारे वस्त्र क्षीर-सागर के समान उज्ज्वल हैं; मानो तुम्हारे कछोटे (कछनी) में क्षीर-सागर ही संलग्न हुआ है। अथवा दोष-रहित पवित्र कीर्ति ही तुम्हारे (लिए) वस्त्र के रूप में उत्पन्न हुई है।७ तुम्हारी देह में चर्चित उबटन अरुणोदय के (समय पर दिखायी देने वाले) रंगों से मिश्रित-सा प्रतीत होता है। तुम्हारे चारों हाथ, मानो, सिन्दुर से विलेपित मन्दर पर्वत की भाँति शोभायमान हैं।८ भक्त-जनों को मन रूपी हाथी का निवारण करना (वश में करना) सचमुच कठिन है। उसे निश्चित रूप में वश करने के लिए, हे गणेशजी ! तुमने अपने हाथ में विवेक रूपी अंकुश को धारण किया है।९ हे गणेशजी ! जो अज्ञानी लोग भक्ति-भावना से तुम्हारी शरण में आते हैं, उनकी अविद्या रूपी वन को काटने के लिए नित्य तुम अपने परशु-धारी हाथ को ऊपर उठाये सिद्ध हो।१० तुम्हारे हाथ में ऐसा लीला-कमल सुशोभित है जो कभी भी न मुरझा जाता है, न निस्तेज हो जाता है। तुम मानो

पूजूं इच्छी भक्त प्रेमळ। जें कां निर्मळ अंतर्बाह्य। ११ जैसे कल्पांतविजूचे उमाळे। तैसे अळंकार अंगीं मिरवले। नक्षत्रपुंज गुणीं ओंविले। तेवीं मुक्ताहार डोलती। १२ हृदयाकाशीं सुरेख। पदक झाला तो मृगांक। क्षयरहित निष्कलंक। निजसुखें सुरवाडला। १३ भक्तांसी जीं विघ्नें येती प्रचंडें। तीं जो आकली शुंडादंडें। कल्पांतविजूचेनि पाडें। एकदंत झळकतसे। १४ दिगंतचक्रीं तेज न समाय। तैसीं कुंडलें झळकती मणिमय। किंवा चंद्र आणि सूर्य। कुंडलरूपें तळपती। १५ मुगुटीं झळकती रत्नकळा। तेणें नभमंडप उजळला। आदिपुरुष हा साकारला। वरदान द्यावया कवीतें। १६ ऐसा महाराज गजवदन। वरदहस्तें दावी चिन्ह। करीं रामकथाबीजारोपण। त्यासी जीवन घालीन मी। १७ ऐसा उगवतां वरदचंद्र। तेणें उल्हासे कविहृदयसमुद्र

उससे उन प्रेमी भक्त-जनों का पूजन करना चाहते हो, जो अन्तर्बाह्य निर्मल (अर्थात् पाप-विकार आदि से मुक्त) हैं। ११ कल्पान्त के समय बिजली जैसी दमकती है, वैसे ही तुम्हारे शरीर पर अलंकार झलकते रहते हैं। तुम्हारे पहने हुए मोतियों के हार ऐसे प्रतीत होते हैं, मानो आकाश के नक्षत्रों को धागे में पिरोकर ही उन्हें बनाया गया हो। १२ साक्षात् चन्द्रमा ही पदक का रूप धारण कर तुम्हारे हृदय रूपी आकाश में शोभायमान है। (अद्भुत बात यह है कि) यह पदक रूपी चन्द्रमा नित्य क्षय-रहित तथा निष्कलंक है—और तुम्हारे हृदय पर विराजमान होने के कारण आत्मसुख में मग्न हो गया है। १३ भक्तों के जीवनमार्ग में जो-जो विघ्न आते हैं, उन्हें सूँड-रूपी दण्ड से वश में कर तुम दूर रखते हो। तुम्हारा एकमेव दाँत कल्पान्त समय की विद्युत् की भाँति दमकता रहता है। १४ तुम्हारे रत्नजड़ित कुण्डल ऐसे झलक रहे हैं कि उनका तेज दसों दिशाओं में भी नहीं समाता। जान पड़ता है, साक्षात् चन्द्र और सूर्य ही इन कुण्डलों के रूप में चमक रहे हैं। १५ तुम्हारे मुकुट में रत्न चमक रहे हैं, जिससे आकाश रूपी मण्डप में उजाला हो गया है। जान पड़ता है, ये गणेशजी, वे आदि पुरुष ही हैं, जो कवि को वरदान देने के लिए सशरीर आविर्भूत हो गये हैं। १६ ये भगवान् गजानन वर देने के लिए उठाये हुए अपने हाथ से संकेत कर रहे हैं और राम-कथा का बीज बो रहे हैं; उसे मैं (पानी) सींचूँगा। १७ ऐसे गणेश रूपी वरदान देने

साहित्यभरतें अपार। असंभाव्य दाटलें। १८ जय जय गजवदना निरुपमा। अगाध न वर्णवे तव महिमा। तुझिया गुणांची पावावया सीमा। कैसा सरता होईन मी। १९ काखेसी मेरू घेऊनि देखा। कैसी नृत्य करील पिलीलिका। कैसें ब्रह्मांड उचलेल मशका। भूगोळ मक्षिका केवीं हालवी। २० चंद्रासी कर्पूराचें उटणें। वासरमणीस दर्पण दावणें। हिमनगासी वारा घालणें। मेघासी अर्पणें उदकांजुळी। २१ सुरतरूपुढें ठेविजे बदरीफळ। मलयाचळासी धूपपरिमळ। कामधेनूसी शुष्कतृणकवळ। आणोनियां समर्पिले। २२ क्षीरसिंधूसी समर्पिजे अजाक्षीर। कनकाद्रीपुढें ठेविजे गार। तैसें प्राकृतबोलें अपार। तुझें महत्त्व केवीं वर्णूं। २३ परी जो जो छंद घेत बाळक। तो स्नेहेंकरोनि पुरवी जनक। तरी हा रामविजय सुरेख। सिद्धी पावो तव कृपें। २४

वाले चन्द्रमा के उदित हो जाने पर कवि का हृदय उल्लसित हो जाता है और उसके हृदय-सागर में काव्य का असीम ज्वार आता है। १८ जिसकी महिमा की कोई उपमा नहीं है, ऐसे हे गणेशजी! तुम्हारी महिमा (सचमुच) अथाह है, उसका वर्णन नहीं किया जा सकता। तुम्हारे गुणों की सीमा तक पहुँचने की योग्यता मुझमें कैसे हो सकती है! १९ बगल में मेरु पर्वत को दबाकर क्या चींटी नृत्य कर सकेगी? मच्छड़ क्या ब्रह्माण्ड को उठाने में समर्थ हो सकता है? मक्खी भू-गोल (पृथ्वी) को क्या हिला सकती है? (यह जैसे असम्भव है, वैसे ही मेरे द्वारा तुम्हारी महिमा का वर्णन करना असम्भव है।) २० चन्द्रमा को कपूर का उबटन लगाना, सूर्य को दर्पण दिखाना, हिमालय को (पंखे से) हवा करना, बादल को अंजलि भर जल समर्पित करना, कल्पवृक्ष के सामने बेर रखना, मलय पर्वत को धूप जलाकर सुगन्ध देना (जैसे हास्यास्पद है), कामधेनु को सूखी घास (खाने को) देना, क्षीरसागर में बकरी का दूध डालना, और सुवर्ण पर्वत के सम्मुख स्फटिक रखना जैसे अनुचित है, वैसे ही हे गणेशजी! तुम्हारी (सम्पूर्ण) महिमा का बखान करने का यत्न करना अनुचित एवं हास्यास्पद है। और प्राकृत में—जन सामान्य की भाषा में तुम्हारी (सम्पूर्ण) महिमा का गान मैं कैसे कर सकूँगा? २१-२३ लेकिन बालक जिस बात का शौक रखता हो और उसकी पूर्ति के लिए हठ करता हो, उसका

आतां नमूं सरसिजोद्भवकुमारी। जे विलसे सदा कविजिव्हाग्रीं। जिच्या वरप्रसादें मुकाही करी। वाचस्पतीशीं संवाद। २५ जे आनंदसरोवर-मराळिका। जे चातुर्यचंपककळिका। जे निजकृपेची करूनि नौका। कविबाळका परतीरा नेत। २६ कृपें तुझ्या विरंचिकुमारी। जन्मांध होती महाजोहरी। अतिमूढ तो वेदार्थ करी। शक्रपदीं निर्धारीं रंक बैसे। २७ अंबे, तू कविहृदयाब्जभ्रमरी। कीं निजानंदसागरींची लहरी। वाग्वल्ली तूं बैसोनि जिव्हाग्रीं। विरूढें सफळ सर्वदा। २८ विवेकहंस शुद्ध धवळ। त्यावरी तुझें आसन अचळ। तप्त कांचन जैसें सुढाळ। तैसें निर्मळ निजांग तुझें। २९ शुभ्र कंचुकी शुभ्र अंबर। दिव्य मुक्तनग अळंकार। निजबोधवीणा घेऊन सुस्वर।

पिता स्नेह-वश उसे पूर्ण ही करता है। वैसे ही (मैं—तुम्हारा बालक, राम के चरित्र [कथा] का वर्णन करने की अभिलाषा कर रहा हूँ; हे गणेशजी! (मेरी विनम्र प्रार्थना है कि) तुम्हारी कृपा से 'राम-विजय' नाम ग्रन्थ की रचना करने की मेरी कामना सफल हो जाए। २४

मैं अब देवी सरस्वती की वन्दना करता हूँ, जो कवियों की जिह्वा के अग्रभाग में नित्य विलास करती है और जिसके वरदान से गूँगा भी देवगुरु बृहस्पति के साथ बात-चीत करने में समर्थ हो जाता है। २५ (मैं उस सरस्वती का वन्दन करता हूँ, जो) आनन्द-सरोवर में विहार करनेवाली राजहंसिनी ही है, जो चातुर्य रूपी चम्पक-वृक्ष की कलिका ही है, और जो अपनी कृपा-रूप नौका में बिठाकर कवि-बालकों को (उनके कार्य-रूपी सागर के) दूसरे तट तक पहुँचा देती है। २६ हे ब्रह्माजी की कन्ये सरस्वती! तुम्हारी ही कृपा से जन्म से अन्ध व्यक्ति भी हीरे-मोती आदि का उत्तम पारखी हो जाता है, अति मूर्ख मनुष्य भी वेदार्थ का मर्मज्ञ हो जाता है और दरिद्र व्यक्ति भी निश्चय ही इन्द्र-पद पर विराजमान हो सकता है। २७ ऐ माते! तुम कवि-हृदय रूपी कमल में लुब्ध भ्रमरी ही हो, आत्मानन्द रूपी सागर की लहर ही हो और (कवि की) जिह्वा के अग्रभाग में उत्पन्न वाणी-रूपी लता ही हो, जो विकसित हो अच्छे फलों से युक्त हो जाती है। २८ हे सरस्वती! विशुद्ध विवेक रूपी शुभ्र हंस पर तुम्हारा सदैव अचल आसन स्थित है। तुम्हारा शरीर तप्त सुवर्ण की भाँति तेजस्वी एवं निर्मल है। २९ तुमने शुभ्र कंचुकी

गायन करिसी स्वानंदें । ३० ऐकतां शारदेचें गायन । तन्मय विधि विष्णु ईशान । अंबे, तुझें सौंदर्य पाहोन । मीनकेतन तटस्थ । ३१ रंभा उर्वशी तिलोत्तमा । सावित्री अपर्णा मुख्य रमा । तुझ्या चातुर्यसमुद्राची सीमा । त्याही कदा न पावती । ३२ अंबे, तुझे गुण केवीं वर्णावे । केवीं अर्कास अर्कीसुमनें पूजावें । अंबर मुष्टींत केवीं सांठवे । पल्लवीं बांधवे वायु कैसा । ३३ न करवे उर्वीचें वजन । न गणवे सिंधूचें जीवन । सप्तावरणें भेदोन । मशक केवीं जाऊं शके । ३४ ऐकोनि बाळकाची वचनें । जननी हृदयीं धरी प्रीतीनें । तैसें सरस्वतीनें निजकृपेनें । घातलें ठाणें जिव्हाग्रीं । ३५ माझें मन मूढ चकोर । कुहूमाजी इच्छी रोहिणीवर । तरी सरस्वती कृपाळु थोर । शुद्ध बीज प्रकटली । ३६

और शुभ्र वस्त्र पहना है, मोतियों से युक्त दिव्य आभूषण परिधान किये हैं और तुम आत्मबोध रूपी वीणा लेकर आत्मानन्द में तन्मय होकर सुस्वर गायन करती हो । ३० ऐसी इस सरस्वती का गायन सुनकर ब्रह्मा, विष्णु और ईशान (शिवजी) तन्मय हो जाते हैं । हे देवी सरस्वती! तुम्हारा सौन्दर्य देख स्वयं कामदेव भी दंग रह जाते हैं । ३१ रम्भा, ऊर्वशी, तिलोत्तमा, सावित्री, अपर्णा (पार्वती) और लक्ष्मी भी तुम्हारी बुद्धि-सामर्थ्य की बराबरी कभी नहीं कर पाएँगी । ३२ हे माते ! तुम्हारी गुण-गरिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता है ? क्या सूर्य का पूजन आक (मदार) के पुष्प से किया जाना उचित है ? (वैसे ही मुझ जैसे तुच्छ व्यक्ति का तुम्हारी महिमा का गान करने की इच्छा करना अनुचित है ।) क्या आकाश मुट्ठी में समा सकता है ? क्या आँचल में (अथवा पत्ते में) वायु को बाँधा जा सकता है ? (वैसे ही मेरे द्वारा तुम्हारा महिमा-गान असम्भव है ।) ३३ पृथ्वी का वज़न नहीं किया जा सकता । समुद्र का पानी नहीं नापा जा सकता है । क्या मच्छड़ सप्त आवरण को भेदकर ऊपर जा सकता है ? (वैसे ही मेरे द्वारा तुम्हारी महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता ।) ३४ परन्तु माता जिस प्रकार अपने बच्चों के बोल वात्सल्य-वश मान लेती है, उसी प्रकार देवी सरस्वती ने अपनी कृपालुता के कारण ही मुझ जैसे अपने शिशु के जिह्वाग्र में आसन स्वीकार किया है—डेरा डाला है । ३५ मेरा मन तो पागल चकोर (के समान ही) है, जो अमावस्या की रात में चन्द्रमा (को देखना) चाहता है ।

बीजेपासून चढत्या कळा। तों तों चकोरांसी अधिक सोहळा। तैसी येथें रघुनाथलीळा। चढेल आगळा रस पुढें। ३७

ज्ञानाचे अनंत डोळे। उघडिले एकेचि वेळे। आतां वंदूं श्रीगुरूचीं पाउलें। जयाचेनि प्रगटलें दिव्य ज्ञान। ३८ जो अज्ञानतिमिरच्छेदक। जो प्रकट वेदांतज्ञानार्क। तो ब्रह्मानंदमहाराज देख। परमाद्भुत महिमा जयाचा। ३९ जो कां पांडुरंगभक्त नर विख्यात। जो भक्त भीमातीरीं समाधिस्थ। तो यतिराज-महिमा अद्भुत। कवण वर्णूं शके पैं। ४० जागृती स्वप्न सुषुप्ति तुर्या पूर्ण। या चार अवस्थांवरी ज्याचें आसन। उन्मनीही निरसोन। स्वसुखें पूर्ण समाधिस्थ। ४१ चांदणें कैंचें नसतां मृगांक। किरणें कैंचीं नुगवतां अर्क। जीवनावांचोनि बीजीं देख। अंकुर सहसा फुटेना। ४२ जरी नेत्रेंवीण दिसे पदार्थ। मंथनेंवीण

(जैसे उसकी इच्छा का पूर्ण होना असम्भव है, वैसे ही मेरी अभिलाषा की स्थिति है।) फिर भी महा कृपालु देवी सरस्वती (मुझ जैसे बाल चकोर के लिए) सुदी की बीज के (चंद्र के) रूप में प्रकट हो गयी है। ३६ जैसे शुद्ध द्वितीया से आगे चन्द्र कला-कला से बढ़ता ही जाता है और चकोर के लिए वह समय उत्सव का-सा (आनन्दप्रद) हो जाता है, वैसे ही (मुझे विश्वास है कि) रघुराज राम का लीला-गान यहाँ पर आरम्भ हो रहा है, उससे आगे आनन्द अधिकाधिक बढ़ता ही जाएगा। ३७

मैं अब उन गुरु के चरणों की वन्दना करता हूँ, जिनकी कृपा से अनगिनत ज्ञानचक्षु एक दम खुल गये हैं और दिव्य ज्ञान प्रकट हो गया है। ३८ मेरे गुरु वे ब्रह्मानन्द महाराज हैं, जिनकी महिमा परम अद्भुत है, जो अज्ञान रूपी अन्धकार का नाश करते हैं और साक्षात् वेदान्त-ज्ञान के सूर्य ही हैं। ३९ वे भगवान् पाण्डुरंग (विठ्ठल) के विख्यात भक्त हैं; वे भीमा नदी के तट पर समाधिस्थ (हो गये) हैं। ऐसे मेरे गुरु संन्यासी (ब्रह्मानन्द महाराज) की महिमा का वर्णन कौन कर सकता है? ४० जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति तथा तुर्या नामक चार अवस्थाओं पर ही उनका आसन है और पंचम अवस्था उन्मनी का त्याग कर आत्मसुख में पूर्णतः लीन होकर वे समाधिस्थ हो गये हैं। ४१ चन्द्र के अभाव में चाँदनी का अस्तित्व कैसे हो सकता है? सूर्य के उदित नहीं होने पर उसकी किरणें कैसे आ सकती हैं? यदि बीज के लिए पानी नहीं

जरी निवडे नवनीत। तरी सद्गुरूवांचोनि परमार्थ। ठायीं न पडे जीवासी। ४३ वर नसतां व्यर्थ वऱ्हाड। शिर नसतां कायसें धड। तैसे गुरुकृपेवीण काबाड। तपें व्रतें साधनें। ४४ अंजनेंवीण न सांपडे निधान। गायत्रीवीण ब्राह्मणपण। सीमा कैंची ग्रामावीण। तैसें गुरूवीण ज्ञान नोहे। ४५ म्हणोनि तनुमनधनेंसीं अनन्य। ब्रह्मानंदस्वामीस शरण। आरंभिली श्रीरामकथा गहन। ग्रंथ संपूर्ण सिद्धी पावो। ४६

ऐसे ऐकतां सप्रेम बोल। बोलिला श्रीगुरु दयाळ। चकोराकारणें उतावेळ। मृगांक जैसा उगवे पैं। ४७ कीं चातकांलागीं धांवे जलधर। कीं क्षुधितापुढें क्षीरसागर। कीं कल्पतरु शोधीत आला घर। दरिद्रियाचें साक्षेपें। ४८ तैसा

सींचा जाए, तो उसमें अंकुर कदापि नहीं फूटता। (वैसे ही गुरु के अभाव में ज्ञान की प्राप्ति नहीं हो सकती। ४२ आँख के अभाव में भी पदार्थ दिखायी दे सकता है, दही को न बिलोने पर भी मक्खन निकल सकता है–(ये असम्भव बातें भी सम्भव हो सकती हैं) तथापि सद्गुरु के अभाव में परमार्थ की उपलब्धि किसी जीव को नहीं हो पाएगी। ४३ यदि वर (दूल्हा) न हो तो बरातियों का जमघट निरर्थक है; यदि सिर न हो, तो धड़ का होना व्यर्थ है, वैसे ही यदि गुरु-कृपा न हो तो (परमार्थ की प्राप्ति के हेतु) तप, व्रत आदि की साधना बेकार में ही कष्ट करने के समान है। ४४ बिना (दिव्य) अंजन आँख में लगाये, (गुप्त) धरोहर की प्राप्ति नहीं होती; गायत्री मंत्र के जाप के बिना ब्राह्मणत्व अर्थहीन है; जहाँ ग्राम ही न हो वहाँ सीमा का कोई अर्थ नहीं है; उसी प्रकार गुरु के अभाव में ज्ञान, शून्य के बराबर ही है। ४५ इसीलिए मैंने एकनिष्ठ भाव से, तन-मन-धन से गुरु (ब्रह्मानन्द) की शरण में आश्रय लेकर श्रीराम की गहन कथा का शुभारम्भ किया है। (उनकी कृपा से) मेरा यह ग्रन्थ पूर्ण हो जाए। ४६

मेरी ऐसी उक्ति प्रेम से सुनकर दयालु गुरु बोलने लगे। जान पड़ा कि चकोर के लिए उतावली से चन्द्र ही उदित हुआ हो, अथवा चातक के लिए मेघ ही दौड़ा आया हो, अथवा भूखे के सामने स्वयं क्षीर (दूध)-सागर ही उपस्थित हुआ हो, अथवा दरिद्र के घर की खोज करते हुए बलात् कल्पवृक्ष ही आ गया हो। ४७-४८ उसी प्रकार दया

श्रीगुरु दयासागर। तेणें दिधला अभय वर। म्हणे सिद्धी पावेल साचार। रामविजय ग्रंथ हा। ४९

आतां वंदूं संतसज्जन। जे वैराग्यवनींचे पंचानन। कीं ज्ञानांबरींचे चंडकिरण। उदय अस्त नसे जयां। ५० जे भक्तसरोवरींचे राजहंस। जे कां अविद्यारण्यहुताश। कीं ते पद्महस्ती विशेष। भवरोगा वैद्य होती। ५१ कीं जीव पावे आपले पदासी। ऐसा मुहूर्त देणार ते ज्योतिषी। कीं ते पंचाक्षरी स्वप्रतापेंसीं। पंचभूतांसी पळविती। ५२ कीं ते दैवी संपत्तीनें भाग्यवंत। मुमुक्षूंसी करिती दरिद्ररहित। कीं ते दयेचीं अद्भुत। गोपुरें काय उंचावलीं। ५३ संत श्रोते चतुर पण्डित। माझें बोलणें आरुष अत्यंत। जैसा सरस्वतीपुढें मूढ बहुत। वाग्विलास दावीतसे। ५४ सूर्यापुढें जैसा दीप देख। कीं जान्हवीस न्हाणावया

के सागर श्रीगुरु ने अभयदान देते हुए कहा—'राम-विजय' ग्रन्थ की रचना सचमुच ही सफल हो जाएगी। ४९

अब मैं उन सन्तों, सज्जनों की वन्दना करता हूँ, जो वैराग्य-रूपी वन में निवास करनेवाले सिंह ही हैं अथवा जो ज्ञान-रूपी आकाश की ऐसी प्रखर किरणें ही हैं, जिनका कभी उदय या अस्त नहीं होता (अर्थात् जो हमेशा तेजस्वी ही बनी रहती हैं।) ५० मैं उन सन्तों—सज्जनों की वन्दना करता हूँ, जो भक्तों (भक्ति) के सरोवर में विहार करनेवाले राजहंस ही हैं, जो अविद्या रूपी अरण्य को जला डालनेवाली अग्नि ही हैं, अथवा जो सांसारिक रोगों को दूर करने वाले पद्महस्ती (= परम विख्यात) वैद्य ही हैं। ५१ वे मानो ऐसे ज्योतिषि हैं, जिनके बताये मुहूर्त पर जीव अपने लिए परमपद की प्राप्ति कर सकता है, वे मानो ऐसे ओझा ही हैं, जो पंचभूतों को—पंचमहाभूतों के बने शरीर के कारण उत्पन्न विकार रूपी पिशाचों को दूर भगा देते हैं। ५२ वे सन्त ऐसे पुरुष हैं, जो दैवी सम्पत्ति की प्राप्ति से भाग्यवान् सिद्ध हो चुके हैं और जो मोक्ष प्राप्ति की आकांक्षा रखनेवालों को दरिद्रता से मुक्त कर देते हैं अथवा उनके रूप में दया के साक्षात् गोपुर (मन्दिर के कलश विशेष) ही उभरे हुए हैं। ५३ सन्त रूपी मेरे श्रोता चतुर पण्डित हैं और मेरी उक्तियाँ अत्यन्त आर्ष (गँवारू) हैं। उनके सामने मेरा बोलना मानो देवी सरस्वती के सामने बहुत ही मूर्ख व्यक्ति के पाण्डित्य-प्रदर्शन के समान ही है। ५४ मेरा

थिल्लरोदक। कीं कनकाद्री जो अति सुरेख। त्यासी अलंकार पितळेचे। ५५ कामधेनूस अर्पिलें अजाक्षीर। चंद्रासी शीतळ करी रंभापुत्र। कल्पतरु कल्पिलें देणार। त्यासी निंबोळ्या समर्पिल्या। ५६ रत्नाकरापुढें काच समर्पिली। तैसी माझी हे आरुष बोली। परी तुह्मीं प्रीति बहु ठेविली। प्राकृत शब्दीं नवल हें। ५७ विष्णूसी भूषणें अपार। परी तुलसीवरी आवडी थोर। कीं पार्वतीपतीस बिल्वपत्र। भक्तीं वाहतां आवडे। ५८ रायें दासीस पाठीं घालितां। तिची सर्वांवरी चाले सत्ता। थोडचा मोलाचे अळंकार लेतां। जनां समस्तां थोर दिसे। ५९ म्हणोनि तुम्ही संत प्रभु थोर। तुमचा महिमा न वर्णवे अपार। मोटेंत बांधवेल समीर। चरणीं अंबर क्रमवेल पैं। ६० गणवतील

तुम्हारे सामने बोलना, सूर्य को दिया दिखाने के समान है, अथवा गंगानदी को नहलाने के लिए तलैया का पानी लाना ही है, अथवा अत्यन्त सुन्दर सुवर्ण पर्वत के लिए पीतल के आभूषण प्रदान करना ही है; अथवा (मेरा यह बोलना) कामधेनु को बकरी का दूध समर्पित करने के समान है, चन्द्र को शीतल बनाने के लिए कपूर प्रस्तुत करने जैसा है, अथवा जिस-जिसकी कोई कल्पना करे, उस-उसको प्रदान करने वाले कल्पवृक्ष को निबोरियाँ समर्पित करने जैसा है। ५५-५६ तुम्हारे सामने मेरी यह ग्राम्य भाषा रत्नों के प्रत्यक्ष आकर(समुद्र) के सामने काँच को प्रस्तुत करने के समान है। फिर भी तुम लोग मेरी इस प्राकृत-जनभाषा में उसे श्रवण करने में रुचि रखते हो, यह सचमुच आश्चर्य है। ५७ भगवान् विष्णु के पास तो अनगिनत आभूषण हैं, फिर भी उन्हें तुलसी (दल) के प्रति बहुत रुचि होती है; अथवा पार्वती-पति श्री शिवजी को बिल्व-पत्र भक्तिपूर्वक समर्पित करें, तो वह उन्हें बहुत प्रिय लगता है। ५८ राजा यदि किसी दासी को पक्षपात पूर्वक आश्रय देता हो, तो उसका अधिकार सब पर चलता है। उसी प्रकार भगवान् तुच्छ आभूषण भी धारण करें, तो वह सब लोगों को महत्त्वपूर्ण, कीमती ही प्रतीत होता है। ५९ तुम महान् सन्त हो, प्रभु हो; तुम्हारी अथाह महिमा का वर्णन नहीं किया जा सकता। मोट में हवा बाँधी जा सकती है; पैदल चलते हुए आकाश को पार किया जा सकता है; पृथ्वी के धूलीकण गिनाये जा सकते हैं, समुद्र का पानी नापा जा सकता है; मेरु पर्वत को गेंद बनाकर उसे उछाला

With Best Complements

From

Mohan Meakin Breweries Ltd.

ESTD. 1855

Mohan Nagar—Solan—Lucknow—Kasauli

मौसमी बीमारियों से बचाव के लिए

- मक्खियों से खाद्य पदार्थों को सुरक्षित रखिए
- सड़े, गले या बाज़ार के कटे हुए फलों का सेवन न कीजिए
- दूषित भोजन न कीजिए
- गन्दे कुओं तथा तालाबों के पानी का सेवन न कीजिए
- हरी साग-सब्ज़ियां और फलों को शुद्ध जल से धोकर सेवन कीजिए
- बाज़ार की बिना ढकी हुई मिठाइयों को सेवन न कीजिए
- दूध को पीने से पहिले उबाल कर पीजिए
- अपनी व्यक्तिगत सफ़ाई तथा मकान की सफ़ाई रखिए

आवश्यक रोग निरोधक टीके (हैजा आदि) लेकर आप अपनी रक्षा कीजिए

वातावरण स्वच्छता : उत्तम स्वास्थ्य

ग ७८२९ स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो

चिकित्सा, स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन-निदेशालय, उ० प्र० द्वारा प्रसारित

★ पहले मनुष्य मदिरा पीता है,

★ फिर मदिरा मदिरा को पीती है,

★ और अन्त में मदिरा मनुष्य को पी जाती है।

समाज व राष्ट्र की प्रगति के लिए मद्यनिषेध हमारा पावन कर्त्तव्य हो।

ग ८०३१ मद्यनिषेध एवं समाजोत्थान विभाग, उत्तरप्रदेश द्वारा प्रसारित।

अभी नहीं

दो बच्चों के जन्म में उचित समयान्तर से
माँ और बच्चे की स्वास्थ्य-रक्षा होती है

इसलिए

अगला बच्चा अभी नहीं।

याद रक्खें

परिवार की सुख, शांति एवं समृद्धि,
अच्छा भोजन, कपड़ा, मकान
छोटे परिवार में ही संभव है

अतएव

तीन के बाद कभी नहीं

मुफ़्त सलाह एवं सेवा हेतु
परिवार नियोजन केन्द्र में पधारें।

ग ६७०५ राज्य परिवार नियोजन ब्यूरो, उत्तरप्रदेश द्वारा प्रसारित

निज भाखा उन्नति अहै सब उन्नति कौ मूल

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र,

हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध एवं सर्वांगपूर्ण बनाने की दिशा में, उत्तरप्रदेश की सरकार सतत सचेष्ट,

राज्य हिन्दी समिति के माध्यम से—

- लगभग दो सौ दुर्लभ एवं संदर्भ-ग्रंथों का प्रकाशन किया जा चुका है;
- चौथी योजना में ७३ और ऐसे ग्रन्थों के प्रकाशन का कार्यक्रम

तथा

- राजधानी में एक भव्य हिन्दी भवन का निर्माण जिस पर कुल लगभग २५ लाख रुपये की लागत बैठेगी।

इसके अतिरिक्त

- प्रायः समस्त राजकाज में हिन्दी का ही व्यवहार किया जा रहा है;
- कबीर, तुलसी, सूर प्रभृति हिन्दी के आदि आचार्यों के भव्य स्मारक बनवाये जा रहे हैं।
- हिन्ही के उत्कृष्ट ग्रंथों पर प्रतिवर्ष पुरस्कार प्रदान किया जाता है और
- भाषा एवं साहित्य के वयोवृद्ध विद्वानों के लिए पेन्शन योजना चलायी गयी है।

"जय हिन्द, जय हिन्दी"।

ग ७०५१ उत्तरप्रदेश सूचना निदेशालय द्वारा प्रसारित।

देवनागरी लिपि में सानुवाद लिप्यन्तरित

अन्य भाषाओं के लोकप्रिय ग्रंथ

अरबी-उर्दू—क़ुर्आन शरीफ़ अरबी की आयतें (देवनागरी में) तथा प्रामाणिक सटिप्पण हिन्दी अनुवाद। मान्य आलिमों द्वारा प्रतिपादित। मूल्य ३५·०० डाक ख़र्च ३·०० प्रथक।

बंगला—रामायण कृत्तिवास ५ काण्ड का बंगला मूल पाठ देवनागरी अक्षरों में, हिन्दी दोहा-चौपाई में सुमधुर पद्यानुवाद सहित। मूल्य १२·०० डाक ख़र्च २·०० प्रथक।

गुरुमुखी-उर्दू—श्री जपुजी सुखमनी साहब (गुरुमुखी) तथा गीता के प्रसिद्ध उर्दू पद्यानुवादक ख़ानबहादुर ख़्वाज: दिलमुहम्मद साहब द्वारा अति ललित उर्दू पद्यानुवाद—इन दोनों का देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण। मूल्य ४·०० डाक ख़र्च १·२५ प्रथक।

शरीफ़ज़ाद:—'उमराव जान अदा' के ख्याति-प्राप्त लेखक आली जनाब मिर्ज़ा रुसवा, बी. ए. द्वारा रचित, होनहार नवयुवकों के उन्नायक प्रसिद्ध उर्दू उपन्यास 'शरीफ़ज़ाद:' का देवनागरी लिपि में अक्षरश: लिप्यन्तरण। इस उपन्यास की यह विशेषता है कि लेखक स्वयं इस उपन्यास का आदर्श नायक है। कठिन उर्दू शब्दों का हिन्दी अर्थ फ़ुटनोटों में दे दिया गया है। मूल्य ४·०० डाक ख़र्च १·२५ प्रथक।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०६ रानीकटरा, लखनऊ-३

अधिक से अधिक वृक्ष लगाइये।

"परमात्मा का स्वरूप स्वयं ही प्रखर हो उठता है–उन नीले पर्वतों के वैभव में, फूलों से लदी घाटियों में, धारा-प्रवाह स्रोतों में और सघन वनों में। हमारे वन, नदियों और पर्वतों का सहयोग प्राप्त कर भारत की वसुन्धरा को हरीतिमा से भर रहे हैं।"

वन विभाग उत्तर प्रदेश द्वारा प्रसारित।

ग ९४३४

वाणी सरोवर

(अपने ढंग का निराला त्रैमासिक पत्र)

१–सन् १९७० में हिन्दी, उर्दू, अ़रबी, फ़ारसी, संस्कृत, पारसी, बंगला, ओड़िया, मराठी, गुरमुखी, तमिऴ तथा मलयाऴम भाषा का सत्साहित्य धारावाहिक सानुवाद देवनागरी लिप्यन्तरण प्रकाशित हुआ है।

२–सन् १९७१ में उपरोक्त भाषाओं के साथ-साथ असमी, पाली, प्राकृत, कश्मीरी गुजराती, तेलुंगु कन्नड़ और सिंधी का कार्यक्रम भी अपनाया जायगा।

ग्राहकों एवं पाठकों से निवेदन :—

१–'वाणी सरोवर' के अक्तूबर अंक से प्रथम वर्ष समाप्त हुआ। अगले वर्ष १९७१ का शुल्क १०·०० मनी आर्डर द्वारा भेज कर अनुगृहीत करें।

२–नवीन ग्राहक बननेवाले सज्जनों को सन् १९७० तथा १९७१ दोनों वर्ष का शुल्क २०·०० भेजना उनके हित में होगा। प्रथम वर्ष के अंक न मंगाने पर धारावाहिक चलनेवाले अनेक ग्रंथ उनके संग्रहालय में अपूर्ण रह जायँगे।

क़ुर्आन शरीफ़ [हिन्दी]

बीस साल की मुसलसल अिल्मी मिह्नत के बाद देवनागरी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ छप कर अवाम की पेश नज़र है। इसमें मिलते-जुलते हुरूफ़ मसलन ज़ाल, ज़े, ज़ाद, ज़ो वग़ैर: को अलाहद: मुमताज़ करते हुये रुमूज़ औक़ाफ़ (विरामाविराम चिह्न), आयत संख्या, वक़्फ़ नबी स०, व० मंज़िल, व० ग़ुफ़रान, वक़्फ़ लाज़िम, हर पारे के रुब्अ, निस्फ़, सुल्स, रुकूअ, सज्द:, मद्द, हम्ज़: साकिन, हम्ज़: वस्ल, मुआनक़:, हरसफ़े पर आयत ख़त्म, शुमार मंज़िल, पार: और सूर:, ग़रज़ कि शास्त्रीय अरबी पद्धति पर इमकानी सूरत में सही तिलावत (पाठ) का पूरा इह्तियात मुहय्या किया गया है। हिन्दी रस्मुल्ख़त में आयतें लिखने के साथ-साथ हर सफ़: पर क़ुर्आन शरीफ़ के असली ख़त याने अरबी ख़त में इन्तहाई सही ब्लाक भी देकर नक़्स की गुन्जाइश ही ख़त्म कर दी गई है। साथ-साथ आसान आम फ़ह्म ज़बान में, मुस्तनद उर्दू तर्जुमों की बुनियाद पर, आलिमों की नज़रसानी के बाद, हिन्दी तर्जुमा व तफ़्सीरी नोट्स को भी मतन (मूल) के मुक़ाबिल दिया गया है।

हिन्दी रस्मुल्ख़त में क़ुर्आन शरीफ़ को पढ़ने-लिखने के क़वायद, तलफ़्फ़ुज़, इदग़ाम, वस्ल-फ़स्ल व अनेक याद-दहानियों का एक वसीअ चार्ट, और मज़ामीन की फ़िह्रिस्तों ने हिन्दी में तरीक़: तिलावत को निहायत आसान कर दिया है। अलावा, मौलाना सय्यद अबुल हसन अली अल्हसनी अल्मदनी जनाब अली मियाँ साहब ने इस हिन्दी क़ुर्आन शरीफ़ पर 'पेश लफ़्ज़' लिख कर इस मिह्नत को ज़ीनत बख़्शी है।

इस बड़े कारनामे का हद्य: (उपहार) भी मह्ज़ ३५·०० रखा गया है। ३) डाक ख़र्च। ५·०० फ़ी जिल्द पेशगी ज़रूर इनायत फ़रमाइये।

क़ुर्आन शरीफ़ तर्जुमा—हिन्दी में प्रमाणिक पूर्ण अनुवाद मात्र। मूल्य १०·००—२·०० डाक ख़र्च अलग।

पार: अम्म मूल—पठनविधि और संकेताक्षरी सहित। बच्चों के पाठ के लिए १·००, पार: अलम्, सयक़ूलु, तिलकर्रुसुलु, लन्तना, वल्मुह्सनातु, लायुह़िब्बुल्लाहु, वअिज़ा समिअू, वलौअन्नना, क़ालल्मलअु और वड़लमू—प्रत्येक ·६० में डा० ख० १·५०।

हिन्दी में कुछ इस्लामी जीवनचरित्र

पैग़म्बरे इस्लाम, ००·४० हज़रत अबूबकर, ००·५०. हज़रत उमर, ००·५० हज़रत उस्मान, ००·५० हज़रत अली ००·५०।

'अरब' एक संक्षिप्त इतिहास—मूल्य ८.०० मात्र डाक ख़र्च १।।) अलग।

प्राप्ति स्थान—भुवन वाणी, १०६, रानीकटरा, लखनऊ-३

भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ

जो कार्य किये जा रहे हैं:—

१—(तमिल) कम्ब रामायण (सानुवाद लिप्यन्तरण)
२— ,, तिरुक्कुरळ् ,,
३—(तॅलुगु) रंगनाथ रामायण ,,
४—(असमिया) माधव कंदली रामायण ,,
५—(बंगला) कृत्तिवास रामायण लंकाकाण्ड ,,
६—(मलयाळम) तुञ्चत्त् एळुत्तच्छन् कृत महाभारत ,,
७—(ओड़िआ) वैदेहीश-विलास—उपेन्द्र भञ्ज कृत ,,
८—(उर्दू) 'उमराव जान अदा' के प्रसिद्धि-प्राप्त श्री 'रुसवा' का चारित्रिक (नैतिक) उपन्यास "शरीफ़ज़ाद:"।
९—(फ़ारसी) दाराशिकोह कृत ५१ उपनषिदों के फ़ारसी-भाष्य (डॉ० ताराचंद द्वारा सम्पादित तथा ईरान में प्रकाशित 'सिर्रे अकबर') का धारावाहिक हिन्दी अनुवाद।
१०—(अरबी) रियाज़ुस्सालिहीन—(ज़ादें सफ़र) इस्लामी हदीसों के प्रामाणिक समुच्चय का हिन्दी रूपान्तर।
११—(वाणी सरोवर)—विविध भाषाओं के उपरोक्त अनुपम ग्रंथों का सानुवाद धारावाहिक देवनागरी लिप्यन्तरण का त्रयमासिक पत्र—वार्षिक मूल्य १०·००।
१२—इनके अतिरिक्त संस्कृत, पाली-प्राकृत, पारसी, कन्नड़, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, सिंधी आदि भाषाओं तथा विविध बोलियों के अनेक सानुवाद लिप्यन्तरण-ग्रंथ योजनान्तर्गत हैं।

जो कार्य हो चुके हैं:—

१—(अरबी) क़ुर्आन (मूल, लिप्यन्तरण, अनुवाद, टिप्पणी) इस्लामी धर्माचार्यों द्वारा प्रतिपादित—
२—(बंगला) कृत्तिवास रामायण—(पाँच काण्ड) बंगला मूल देवनागरी में लिप्यन्तरित, अवधी पद्यानुवाद—
३—(गुरमुखी) जपुजी तथा सुखमनी साहब—गुरमुखी मूल पाठ तथा गीता के यशस्वी अनुवादक ख़ा०ब० ख़्वाज: दिलमुहम्मद कृत उर्दू पद्यानुवाद—दोनो देवनागरी लिपि में—

विज्ञापन के लिए, व्यवस्थापक, 'वाणी सरोवर' १०९, रानीकटरा, लखनऊ से पत्र-व्यवहार कीजिए।

नैपाली प्रेस, लखनऊ में मुद्रित एवं भुवन वाणी ट्रस्ट, रानीकटरा, लखनऊ द्वारा प्रकाशित।
—द्वारा नन्दकुमार अवस्थी, सम्पादक